WILD SILKS OF INDIA vanya

वस्त्र मंत्रालय
MINISTRY OF TEXTILES
सत्यमेव जयते

रेशम वाणी

अंक : 62 (दिसम्बर 2025)

के.रे.बो.-केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

पिस्का-नगड़ी, राँची - 835 303, झारखण्ड

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, भारत
CENTRAL SILK BOARD, INDIA

प्रधान सम्पादक की कलम से...

इस संस्थान की राजभाषा गृह पत्रिका रेशम वाणी, अंक-62 (दिसम्बर-2025) प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद प्रसन्नता हो रही है। विविधता से भरे इस देश में हिन्दी ने अपनी उपयोगिता प्रमाणित की है। यह राष्ट्रीय एकता और पहचान का प्रतीक है। विभिन्न संस्कृतियों को जोड़ने के साथ ही यह समृद्ध साहित्य और परम्पराओं को संजोती भी है। हिन्दी ने देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। अब यह सिर्फ हिन्दी भाषियों की भाषा नहीं रही बल्कि इसने हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों के साथ विदेश में भी सम्मानजनक स्थान बनाया है। हम साहित्य की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ और अन्य संचार माध्यमों की बात करें तो ये हिन्दी में ही सर्वाधिक संख्या में प्रकाशित और प्रसारित होती हैं। फिल्में भी हिन्दी में अधिक देखी और समझी जाती हैं। रंगमंच पर नाटक भी हिन्दी में अधिक लोकप्रिय होते हैं। टीवी पर कई चैनल वाले भी अपना कार्यक्रम हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करके गर्व अनुभव करते हैं। इस संस्थान में भी राजभाषा कार्यान्वयन उत्कृष्ट स्तर पर है जिसका परिणाम है कि केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा वर्ष 2022-23 के लिए इस संस्थान को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु के.रे.बो. राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया गया है।

रेशम की बात करें तो रेशम सौंदर्य और समृद्धि का प्रतीक वह वस्त्र है जो केवल वस्त्र नहीं बल्कि एक भावना है। जब कोई रेशमी कपड़ा त्वचा को छूता है तो उसके मुलायम स्पर्श में इतिहास, परम्परा, कला और मेहनत की कहानियाँ छिपी होती हैं। प्राचीन काल से ही भारत में रेशम केवल कपड़ा नहीं रहा; यह राजसी ठाठ, धार्मिक आयोजनों, सांस्कृतिक परम्पराओं और आर्थिक समृद्धि का प्रतीक भी रहा है। कहते हैं जब कोई देश अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजता है, तभी वह सचमुच में प्रगति करता है। तसर रेशम उत्पादन एक ग्रामीण कला है। मुख्य रूप से आदिवासी और ग्रामीण समुदायों की महिलाएँ इस कला में निपुण रही हैं। वे कोसा से रेशम निकालने और उससे वस्त्र बुनने की जटिल प्रक्रियाओं में दक्ष रही हैं। यही कारण है कि यह महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण प्रदान करता है। ट्रॉपिकल एवं ओक तसर का उत्पादन देश के विभिन्न राज्यों अर्थात् मध्य प्रदेश, झारखण्ड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, बिहार, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, मणिपुर एवं असम में किया जाता है। भारत तसर रेशम का सबसे बड़ा उत्पादक देश है और इनमें झारखण्ड को इसका मुख्य केन्द्र माना जाता है। कोल्हान क्षेत्र के सारंडा वन अपनी श्रेष्ठ कोसा गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है और इसे डाबा इकोरेस का गृह प्रदेश भी कहा जाता है। रेशम वाणी पत्रिका के माध्यम से हम न केवल तसर रेशम अनुसंधान व विकास को उजागर करते हैं बल्कि रेशमी ताने-बाने के साथ साहित्यिक रचनाधर्मिता को भी उजागर करते हैं। आशा है प्रस्तुत अंक सुधी पाठकों की आशाओं पर खरा उतरेगा। हमें आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(डॉ.एन.बी.चौधरी)
निदेशक

रेशम वाणी

अंक : 62 (दिसम्बर 2025)

प्रधान सम्पादक

- **डॉ. एन. बी. चौधरी**
  निदेशक

सम्पादक

- **डॉ. विशाल मित्तल**
  वैज्ञानिक-डी

सह - सम्पादक

- **सुनील कुमार पी.**
  सहायक निदेशक (रा.भा.)

शब्द संसाधन एवं सम्पादन

- **सिकन्दर रविदास**
  आशुलिपिक (ग्रेड-I)

सम्पादन सहयोग

- **अंजली शर्मा**
  कनिष्ठ अनुवादक (हिन्दी)

छायांकन

- **बाबूसोना मंडल**
  प्रक्षेत्र सहायक

विभागीय पत्रिका नि:शुल्क वितरण हेतु

सम्पर्क –

सम्पादक, रेशम वाणी,
के.रे.बो. – केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिस्का नगड़ी,
राँची – 835303, झारखण्ड

ई-मेल : ctrtihindi@gmail.com
ctrtiran.csb@nic.in

वेबसाइट : www.ctrti.res.in

पत्रिका में अभिव्यक्त विचार और मत रचनाकारों के निजी हैं, उनसे संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय-सूची

भाषा एवं साहित्य		
हिन्दी का सरलीकरण और मानक भाषा रूप	सनत	2
'मेरा रेशम मेरा अभिमान' अभियान की संक्षिप्त रिपोर्ट		
मेरा रेशम मेरा अभिमान : भारत के रेशम उद्योग को सबल बनाने हेतु एक अभिनव पहल	सुस्मिता दास	5
तकनीकी आलेख		
तसर सेरीसिन : उप–उत्पाद से जैव संसाधन तक	डॉ. कर्मवीर जेना	7
तसर रेशम का ऐतिहासिक, पारिस्थितिकीय और सामाजिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य : एक समीक्षा	दिव्या राजावत	9
तसर रेशम कीटपालन द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में सतत् आजीविका संवर्धन : एक समीक्षा	श्रीनाथ वाई.एस.	11
तसर रेशमकीट के स्वास्थ्य पर पोषक तत्वों की भूमिका और रोग से बचाव में इनका योगदान	अरुणा रानी	13
तसर रेशमकीट में वाइरोसिस का प्रकोप और उसका आर्थिक प्रभाव	जया मिंज	15
ओक तसर रेशम उद्योग की समस्याएँ एवं समाधान के उपाय	ए.एस. वर्मा	18
वाराणसी के बुनकरों द्वारा डुप्लीकेट साड़ियों की चुनौती का समाधान : सिल्क मार्क योजना की भूमिका और योगदान	संगीता देवी	22
रेशम की परम्परा : भारत में सिल्क रूट का गौरवशाली इतिहास	विभा कनन	25
सफलता की कहानी		
लक्ष्मण डांगिल की सफलता की कहानी	स्रोत : डॉ. कर्मवीर जेना एवं किरणमय प्रधान	26
चाडा मुंडारी की सफलता की कहानी		26
देवा मुंडारी की सफलता की कहानी		27
गुनाराम मुंडारी की सफलता की कहानी		28
विविधा		
जानवरों के प्रति संवेदना जगाएँ	डॉ. कविता विकास	28
दैनिक जीवन में कितना घातक है निराशावादी होना	डॉ. विभा खरे	29
गिद्धों की आबादी को बचाने की बड़ी चुनौती	अली खान	30
कहानी		
झंझावात	मनीषा मंजरी	31
खाली प्लॉट	डॉ. रंजना जायसवाल	33
मानवता का रिश्ता	पुष्पेश कुमार पुष्प	35
व्यंग्य		
बाबू – हास्य व्यंग्य	विनोद कुमार विक्की	40
नमक का दारोगा गायब है	महेश कुमार केशरी	41
कविता		
कुछ तो पीछे छूट गया है	डॉ. विनोद सिंह	42
दिल चाहे आसमान में उड़ना	रवीन्द्र कुमार शर्मा	42
संघर्ष	शिवम कुमार	43
खूँटे से बंधी गाय	मोनिका राज	43
एक कहानी हो तुम.....	मधुवाला शांडिल्या	44
तुम्हारे होने मात्र से	डॉ. नीलोत्पल रमेश	44
मेरी प्यारी माँ	डॉ. दिनेश लाल शर्मा	45
किसकी बोली	वैष्णवी गुप्ता	45
लघु कथा		
गुनाह का लेवल	राजेन्द्र कुमार सिंह	45
है तुम्हारे पास......?	ज्योति मिश्रा	46
नि:स्वार्थ	डॉ. चीनीपल्ली रवि शंकर	46
जिए तो जिएं कैसे ?	प्रज्ञा पांडे	47
एक बहुत ही सुन्दर दृष्टांत...	नवीन कुमार सिन्हा	47
मुक्ति	अर्चना त्यागी	48
मातृभाषा	कुमुद शर्मा 'काशवी'	48
बेटे की चाह	सरिता सुराणा	49
वक्त कहाँ लौट पाता है	सत्या शर्मा कीर्ति	49
छापेमारी	तपेश भौमिक	49
साक्षात्कार चिरौंजी पेड़ का	डॉ. सतीश 'बब्बा'	50
शिक्षा में नई डिग्री – बीएलओ बीएड	वीरेन्द्र बहादुर सिंह	51
इंसानियत और विकास : संतुलन की जरूरत	सचिन सिंह परिहार	51
देखभाल	टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'	52
मिट्टी	डॉ. वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज	52
चेहरे	यशोधरा भटनागर	53
तमाचा	शीला श्रीवास्तव	53
प्रेम	अश्विनी कुमार आलोक	54
मुखौटे	देवेन्द्रराज सुथार	55
निष्प्राण	ज्योत्सना सिंह	55
ग्राहक	संदीप पांडे 'शिष्य'	55
शीशे के भीतर की संवेदना	रश्मि किरण	56
गणपति महोत्सव	सोनल मंजूश्री ओमर	56

" बधाई संदेश "

माननीय श्री सी.पी. राधाकृष्णन जी, भारत के उप-राष्ट्रपति पद पर निर्वाचित होने पर पूरा तसर परिवार आपको हार्दिक बधाई देता है। आपके अनुभव, नेतृत्व और समर्पण से राष्ट्र की प्रगति तथा लोकतांत्रिक मूल्यों को और मजबूती मिलेगी।

डॉ. एन. बी. चौधरी
निदेशक

भाषा एवं साहित्य

हिन्दी का सरलीकरण और मानक भाषा रूप

सनत*

भाषा अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम् माध्यम है। यह एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों-विचारों का ठीक-ठीक आदान-प्रदान करते हैं। इसी से हमारा बोलना, सुनना और लिखना सम्प्रेषित हो पाता है। एक भाषा ही सबसे उपयुक्त तरीका है जिससे कथन के आशयों को उचित शैली में समझना-समझाना सम्भव होता है और यह प्राचीनकाल से प्रकटीकरण के लिए अति आवश्यक भी माना जाता रहा है। यह तो सर्वविदित है कि भारत में आर्य और आर्येत्तर संस्कृति का समागम हुआ है। हिन्दी भाषा का इतिहास एक हजार वर्ष से भी अधिक पुराना है। इसका उद्भव अपभ्रंश अर्थात् शौरसेनी, पैशाची, सिन्धी, मराठी, मागधी और अर्धमागधी बोलियों के समूह से हुआ और तत्सम, तद्भव व देशज के साथ विदेशी शब्दों से मिलकर विकसित हुई है। निःसन्देह इसमें क्षेत्रीय बोलियों का उल्लेखनीय योगदान है। इसकी व्यापकता, माधुर्य और सहजता के गुणों को देखते हुए 14 सितम्बर सन् 1947 को संविधान निर्मात्री सभा ने इसे 'राजभाषा' के रूप में स्वीकार किया है। भारत में हिन्दी बहुत वर्षों से लिंगुआ फ्रैंका (Lingua Franca) सम्पर्क भाषा बनी हुई है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक सांस्कृतिक सम्बन्धों की मजबूत कड़ी के रूप में इसकी अपार शक्ति देखी जाती है। इसे भारत व्यापी भाषा मानी गयी है। यह पूरे देश के सामने विचार विनिमय का उत्तरदायित्व सम्भालती हुई एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है। भाषायी आँकड़ों की टोह लें तो विश्व स्तर पर चीनी मैंडरिन भाषा बोलने वाले 90 करोड़, अंग्रेजी बोलने वाले 80 करोड़ और हिन्दी बोलने वाले 70 करोड़ लोग बताये जाते हैं। इस दृष्टि से हिन्दी का स्थान तीसरा है। विदेशों में जो भारतीय मूल के लोग रहते हैं, हिन्दी बोलते हैं और साहित्य का अध्ययन करते हैं उनकी बात तो ठीक है लेकिन जो अन्य लोग हिन्दी का अध्ययन करते हैं वे मूलतः हिन्दी भाषी नहीं हैं। वे हिन्दी के द्वारा भारत के बारे में जानना चाहते हैं। यहाँ के प्राचीनतम् गौरवशाली इतिहास, धर्म, संस्कृति और कला वैभव उन्हें आकर्षित करते हैं, यह आध्यात्मिक शान्ति की भूमि उन्हें रुचती है या वर्तमान के सर्व व्याप्त होते भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के चलते हिन्दी बोलने और अध्ययन करने को आवश्यक समझते हैं। इसलिए अपनी मंशा के मुताबिक उन हजारों बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के अभिकर्ताओं को भारत में आकर यहाँ के उपभोक्ताओं से सम्पर्क करना होता है और अनेक प्रकार के अपने कीमती उत्पादों को बेचना होता है। हम उनके हिन्दी सीखने को उनकी एक मजबूरी भी कह सकते हैं क्योंकि आज की तारीख में भारत उनकी दृष्टि में करोड़ों-अरबों का बाजार के सिवाय कुछ नहीं है।

हिन्दी एक सर्वोपरि भाषा : यहाँ हिन्दी कई राज्यों की प्रमुख भाषा है। जैसे- उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, बिहार और राजस्थान। इन राज्यों के सारे प्रशासनिक कार्य हिन्दी में सम्पन्न होते हैं। यह दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल से निकलकर बर्मा, श्रीलंका, मारीशस, दक्षिण एवं पूर्वी अफ्रीका और अमेरिका तक भी फैल गयी है। हम साहित्य की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ और अन्य संचार माध्यमों की बात करें तो ये हिन्दी में ही सर्वाधिक संख्या में प्रकाशित और प्रसारित होती हैं। फिल्में भी हिन्दी में अधिक देखी और समझी जाती

हैं। रंगमंच पर नाटक भी हिन्दी में अधिक लोकप्रिय होते हैं। टीवी पर कई चैनल वाले भी अपना कार्यक्रम हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करके गर्व अनुभव करते हैं। गैर हिन्दी भाषी विद्यालयों और महाविद्यालयों में भी हिन्दी भाषा की पढ़ाई को प्रमुख स्थान दिया गया है। इस प्रकार हिन्दी भाषा की महत्ता स्वयं रेखांकित होती है।

भाषा अभिव्यक्ति के दो सशक्त साधन : एक मूक व्यक्ति अपने भावों को ठीक ढंग से व्यक्त नहीं कर सकता जबकि दूसरा सवाक व्यक्ति बहुत सहजता से अपने भावों को व्यक्त कर सकता है। भले ही वह अशिष्ट भाषा में बोले या शिष्ट भाषा में। देखें तो विचारों की अभिव्यक्ति के लिए हमने 'भाषा' का ही चयन किया है। उसकी दो प्रकृतियाँ प्रचलित हैं - (1) वाचिक रूप और (2) लिखित रूप।

(1) वाचिक रूप : इसे शिक्षित और अशिक्षित सभी लोग प्रयोग करते हैं। दोनों में अन्तर मात्र इतना है कि पढ़े-लिखे लोग अनपढ़ लोगों की अपेक्षा शुद्ध भाषा बोलते हैं लेकिन अनपढ़ों को सामाजिक वातावरण मिलने से वे भी इसे मूल रूप में परिमार्जन कर लेते हैं। यद्यपि भाषा का यह वाचिक रूप बिल्कुल अस्थायी और क्षणिक होता है। तथापि समाज में वाचिक रूप से काम चलता रहता है।

(2) लिखित रूप : मानव सभ्यता के विकास के क्रम में जब सुदूर क्षेत्रों में निवासरत् लोगों तक अपने भावों-विचारों को पहुँचाने की आवश्यकता पड़ी, तब मनुष्य ने लिपि एवं संकेत का आविष्कार किया और उनके सहयोग से अपनी बातों को सफलतापूर्वक कह सका।

भाषा के वाचिक रूप में 'ध्वनि' आधारभूत इकाई है और लिखित रूप में 'वर्ण' आधारभूत इकाई है। लिखित भाषा, हमारी भाषा का स्थायी रूप है। इसमें अभिव्यक्त भावों-विचारों को हम कई पीढ़ियों तक मुद्रित आकारों में सुरक्षित रख सकते हैं और मनचाहे समय पर दोबारा पढ़ सकते हैं।

अंग्रेजी के पीछे बाजारवाद और व्यवसाय : हिन्दी भाषी भारत देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या कुल आबादी का मात्र तीन प्रतिशत है। भारतीय भाषाओं और बोलियों के जमघट में अंग्रेजी का विकास सम्भव ही नहीं हुआ। स्वतंत्रता भी हिन्दी भाषा के माध्यम से ही प्राप्त की गयी। फिर भी अंग्रेजों के जाने के पश्चात् अंग्रेजी का भूत चढ़ गया। उसका मोह ही नहीं छूटा। आलम यह है कि हिन्दी के चूल्हे पर अंग्रेजी आराम से पक रही है। वैसे विदेशी भाषाओं को सीखने और समझने में कोई आपत्ति नहीं है। चिकित्सा, अभियांत्रिकी, मोबाइल और कम्प्यूटर टेक्नोलॉजी की पढ़ाई के साथ-साथ प्रशासनिक सेवाओं में अंग्रेजी को अनिवार्य किया गया है किन्तु अन्य भारतीय भाषाओं की तुलना में अंग्रेजी को ही वरीयता प्रदान करना आपत्तिजनक है। दरअसल बाजारवाद और व्यवसाय के घोर समर्थक अंग्रेजी के प्रचार-प्रसार में अधिक रुचि लेते दिखाई पड़ते हैं। क्या हमारी हिन्दी भाषा इतनी कमजोर है कि न्यायालयों के फैसले अंग्रेजी में लिखे जाते हैं? क्या उन न्यायालयों में मुकदमा लड़ने वाला एक अँगूठा छाप गँवार व्यक्ति अंग्रेजी में दिये उस फैसले को समझ पाता है और जो उसे समझाता है वह उससे तगड़ा शुल्क वसूलता है। अंग्रेजी के पक्ष में बहुत सारे तर्क दिये जा सकते हैं। उसकी अनेक विशेषताएँ गिनायी जा सकती हैं परन्तु आम आदमी तो यही समझता है कि अंग्रेजी प्रशासक पैदा करने वाली और रौब-दाब झाड़ने वाली एक कूटभाषा है।

हिन्दी के विकास हेतु सरलीकरण का तर्क : हिन्दी को लेकर इन दिनों एक विकल्प ढूँढ निकाला गया है। वह विकल्प है कथित रूप से हिन्दी को सरल बनाने का। संस्कृत के मूल तत्सम शब्दों को तद्भव यानी बिगड़े शब्दों में हिन्दी में लिखने का। यद्यपि ये तत्सम और तद्भव दोनों ही शब्द साहित्य लेखन में व्यवहृत होते हैं। तथापि हिन्दी + संस्कृत, हिन्दी + अंग्रेजी, हिन्दी + अरबी और अरबी + फारसी इत्यादि दो भाषाओं से बने नये-नये वर्ण संकर शब्द भी धड़ल्ले से प्रचलन में लाये जाते हैं। तेरे को, मेरे को, हम बोला, फिर मेरा लड़की बोला, मेरा माँ सो रही है, हम जाता है, तू आयेगा, हम नहीं जायेगा, तेरा घर किधर को है, तू बहुत बेसी बोलता है, हम तो तेरा गिराहक हैं, हमरो को एक गिलास पानी दो, अब जादा बकर-बकर मत कर, आप कहाँ से आ रहे हो, आप आज रात को मेरे रूम में खाना-पीना करना; जैसे बहुत से बोलचाल के जड़ शब्द लिखे जाते हैं। जिनका कुछ लोग समर्थन भी करते हैं। उनका तथाकथित तर्क होता है कि हम हिन्दी भाषा को सरल बनाने के लिये ऐसा कर रहे हैं। इससे हिन्दी भाषा का और विकास हो सकेगा। असल में इस व्यवहार से विकास तो होता नहीं है बल्कि उसकी दुर्गति होती है। यह भाषा पढ़े-लिखों की दृष्टि में मजाक बन जाती है और शिष्ट भाषा कहलाती नहीं है।

मानक भाषा रूप :

(क) श्रेष्ठ व्याकरण शास्त्र : हिन्दी भाषा का व्याकरण शास्त्र बहुत श्रेष्ठ है। यह इसे विशुद्ध रूप से लिखने और बोलने सम्बन्धी अनिवार्य नियमों का बोध कराता है। इसके विरुद्ध व्यवहार से ध्वनियों के उच्चारण अशुद्ध और शब्द के अर्थ निरर्थक हो जाते हैं। इसका पालन नहीं करने पर लिखने और बोलने वालों को विद्वानों के समक्ष अल्पज्ञ सिद्ध हो जाना पड़ता है। मुद्रण क्षेत्र में कम्प्यूटर का आगमन होने से धीरे-धीरे हिन्दी भाषा के मानक रूप पर भारी अन्तर देखा जा रहा है। इससे भाषा पर आघात पहुँच रहे हैं।

(ख) संगति में विसंगति : पहले तो हिन्दी से तत्सम शब्द गायब हुए। उसमें से मात्र 'एवं' शब्द बचा रह गया है। उसके पश्चात् आधा 'म', आधा 'न', आधा 'ण', आधा 'श्र', अनुनासिक (चन्द्र बिन्दु), विसर्ग चिह्न और हलन्त चिह्न गायब हुए। प्लुत स्वर चिह्न का भी लोप हो रहा है। हिन्दी के अंक भी अदृश्य होने को हैं। और अब ऋ, ङ, ञ, श, ष, स तथा उ और ऊ की मात्राओं का बेमेल उपयोग हो रहा है। वैसे प्लुत स्वर चिह्न का प्रयोग संस्कृत भाषा वाले अभी सुरक्षित रखे हुए हैं या फिर फिल्मों आदि में गीत लिखने वाले। और तो और ऑ ध्वनि वाले अंग्रेजी भाषा के हिन्दी में लिखे जाने वाले मध्यवर्ती शब्द भी सही नहीं लिखे जाते हैं। हिंदी लिखते हैं हिन्दी बोलते हैं। चिंतन लिखते हैं चिन्तन बोलते हैं। सुंदर लिखते हैं सुन्दर बोलते हैं। सेंटर लिखते हैं सेन्टर बोलते हैं। पेंटर लिखते हैं पेन्टर बोलते हैं। एजेंसी लिखते हैं एजेन्सी बोलते हैं। किंतु लिखते हैं किन्तु बोलते हैं। केंद्र लिखते हैं केन्द्र बोलते हैं। सुरेंद्र लिखते हैं सुरेन्द्र बोलते हैं। संबंध लिखते हैं सम्बन्ध बोलते हैं। जिंदा लिखते हैं जिन्दा बोलते हैं। भैया लिखते हैं भैय्या बोलते हैं। इसी प्रकार निःसन्देह को निस्संदेह लिखा जा रहा है। तत्त्व को तत्व लिखा जा रहा है। महत्त्व को महत्व लिखा जा रहा है। खण्ड को खंड लिखा जा रहा है और वसंत को बसंत लिखा जा रहा है। नगर पालक निगम को नगर पालिक निगम लिखना, अभयारण्य को अभ्यारण्य लिखना, श्रद्धावनत को श्रद्धानवत लिखना, रवीन्द्र को रविन्द्र लिखना तथा हँस को हंस लिखना, हंस को भी हँसने के भाव में हंस ही लिखना हिन्दी मानक भाषा को ही हास्यास्पद बना देता है।

(ग) सटीक शब्द संरचनाएँ : हिन्दी भाषा की प्रथम विशेषता यह है कि इसे बहुत ही सरलता से सीखी जा सकती है। इसकी लिपि देवनागरी लिपि है। वर्णमाला बिल्कुल सरल है। शब्दों की संरचना करना बहुत सुविधापूर्ण है। इसमें कुछ शब्दों के ऊपर मात्र अनुस्वार (बिन्दु) या अनुनासिक (चन्द्र बिन्दु) लग जाने पर उनके अर्थ बदल जाते हैं। जैसे : रग-रंग, भग-भंग, जग-जंग, गज-गंज, रच-रंच, घट-घंट, सत-संत, कद-कंद, मद-मंद, वश-वंश, मजा-मंजा, गदा-गंदा, कटक-कंटक, बदर-बंदर, बजर-बंजर, बाग-बांग, मास-मांस, तात-ताँत, ढाक- ढाँक, सास-साँस, बाट-बाँट, बास-बाँस, कास-काँस, पाव-पाँव, कहा-कहाँ। इसी प्रकार कुछ शब्द ऐसे भी हैं जिसमें मात्र हलन्त का चिह्न लग जाने पर उसके अलग अर्थ हो जाते हैं।

जैसे : जगत् = संसार, जगत = कुएँ का चबूतरा। सन् = वर्ष, सन = जूट।

बम् = शिव आराधना का शब्द, बम = विस्फोटक गोला। अन्तर् = अन्दर,

अन्तर = फ़र्क। कीर्तिमान् = यशस्वी,

कीर्तिमान = रिकॉर्ड। अहम् = अहंकार,

अहम = खास। चित् = मन, चित = पीठ के बल लेटा हुआ। वरन् = बल्कि, वरन = चयन।

वाक् = वाणी, वाक = उक्ति।

संस्कृत, हिन्दी, अरबी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी शब्दों के अनेक उपसर्ग जुड़कर भी नये शब्द बन जाते हैं। जैसे : अधि उपसर्ग से अधिकार, अधिकारी, अधिनायक, अधिराज, अधिकरण, अध्यक्ष, अध्यापक, अध्यादेश। निर् उपसर्ग से निरपराध, निर्दोष, निर्मम, निर्मल, निर्यात, निराकार, निर्दय, निर्धन, निर्वाह। प्रति उपसर्ग से प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रतिदिन, प्रतिहार, प्रत्यक्ष, प्रसिद्धि, प्रत्युपकार, प्रत्येक, प्रतिनिधि, प्रतिलिपि आदि। शब्दों के पश्चात् लगने वाले विभिन्न प्रत्यय भी कमाल के होते हैं। सीधे संज्ञा से विशेषण बन जाते हैं। जैसे : 'इक' प्रत्यय से अर्थ - आर्थिक, अलंकार - अलंकारिक, अंश - आंशिक, इतिहास - ऐतिहासिक, साहित्य - साहित्यिक। 'इत' प्रत्यय से अंक - अंकित, अवलम्ब - अवलम्बित, हर्ष - हर्षित, कुसुम - कुसुमित, पल्लव – पल्लवित। इसी प्रकार आ, इ, ई, ईय, ईन, इन, ईण, इया, इम, इर, इल, मान, वान, अनीय, आल, अक्कड़ आदि बहुत से प्रत्ययों से नये विशेषण शब्द बन जाते हैं। हिन्दी कविताओं में प्रयुक्त किये जाने वाले तुकान्तों (अन्त्यानुप्रास) का निर्माण करना भी कइयों को मुखाग्र हो जाता है। कागज पर कलम से बिना लिखे भी उसकी मौखिक रचना की जा सकती है। नवल जी द्वारा सम्पादित सुप्रसिद्ध हिन्दी शब्दकोश "नालन्दा विशाल शब्दसागर" में शब्द संख्या एक लाख पचास हजार है। अन्य शब्दकोशों में भी बहुत से शब्द संकलित मिलते हैं। अनुमान लगायें तो उनमें से लेखन व्यवहार में बमुश्किल पाँच सौ शब्द उपयोग में लाये जाते होंगे। शेष निरुपयोगी पड़े रहते हैं। वे शब्द भी अत्यन्त सम्प्रेषणीय हैं। उन्हें भी समझना सुविधाजनक और सरल है। वास्तव में उन्हें चलन में लाये ही नहीं जाते।

- हिन्दी भाषा के मानक रूप के उलट कई लोगों से जो लेखन में अक्सर गलतियाँ हो रही हैं, ये उनकी अज्ञानता व शीघ्रता के कारण हो रही हैं या मोबाइल और कम्प्यूटर में सही टाईप चार्ट व की बोर्ड नहीं मिलने के कारण विवशता में हो रही हैं। नहीं तो कोई भी ज्ञानवान सज्जन जान-बूझकर गलतियाँ करना भला क्यों चाहेगा।

- हिन्दी भाषा के सरलीकरण के पक्षधरों का तर्क है कि टाईपिंग से हमारा बहुत सारा समय बचता है। दो घण्टे के काम को हम तीस मिनट में ही खत्म कर देते हैं। उनके तर्क का आशय यही निकलता है कि वे जान-बूझकर गलतियों को दोहराते हैं। इसका भाषा विज्ञान के विद्यार्थियों के उच्चारण, उच्च अध्ययन और ज्ञानार्जन पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस ओर उनका ध्यान नहीं है।

हिन्दी भाषा पर विद्वानों के विचार : हिन्दी कथा साहित्य के शिरोमणि मुंशी प्रेमचन्द कहते हैं – 'राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा है। नदी, पहाड़ और समुद्र राष्ट्र नहीं बनाते। भाषा ही वह बन्धन है जो चिरकाल तक राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रहती है और इसे बिखरने, विखण्डित एवं विभाजित होने से रोकती है।' राष्ट्र निर्माण के पुरोधा अरविन्द घोष के शब्द हैं – 'किसी राष्ट्र अथवा मानवीय समुदाय की आत्मा के लिये यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि वह अपनी भाषा की रक्षा करे और उसे एक सशक्त और सजीव सांस्कृतिक बना ले।'

अंग्रेजों के जमाने में भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण करने वाले पहले भाषा वैज्ञानिक जार्ज ग्रियर्सन ने कहा है – 'समस्त आर्यावर्त या ठेठ हिन्दुस्तान की राष्ट्र तथा शिष्ट भाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी है।' हिन्दी प्रेमी विद्वान पं. कृ. रंगनाथ पिल्लयार के विचार हैं – 'भाषा के उत्थान में एक भाषा का होना आवश्यक है। इसलिये हिन्दी सबकी साझा भाषा है।' अमेरिकी चिकित्सक, प्राध्यापक और लेखक वाल्टर चेनिंग का कथन है - 'विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।' समाजवादी नेता डॉ.राम मनोहर लोहिया स्वतंत्रता आन्दोलन के समय में 'अंग्रेजी हटाओ-हिन्दी लाओ' तो बोले ही थे। शायद डॉ.लोहिया जी को पहले से आभास हुआ होगा कि एक दिन अंग्रेजी आधुनिकता की आँधी हिन्दी मानक भाषा के लिये खतरा बन सकती है। हम हिन्दी भाषी मूल अंग्रेजी में पुस्तक लिखने के लिये आतुर हो जाते हैं लेकिन कोई अंग्रेजी भाषी मूल हिन्दी में पुस्तक लिखने के लिये आतुर नहीं होता होगा।

हिन्दी मानक भाषा रूपों की बढ़ती उपेक्षा, परिनिष्ठित भाषा के साथ खिलवाड़ और किसी मान्य राष्ट्रभाषा को हल्के तौर पर लिया जाना भाषायी दृष्टि से एक गम्भीर समस्या है। यह हर हिन्दी अनुरागी को खटकता है। वह सोच में पड़ जाता है कि यह सांस्कृतिक क्षरण का दौर कितना त्रासदीपूर्ण है। क्या होगा आगे ? वर्तमान स्थिति इतनी दुर्भाग्यजनक और असंवेदनशील है कि हिन्दी भाषा के ज्वलन्त मुद्दों को गैर-प्रशासनिक तरीके से सोचना ही अपराध प्रतीत होता है। वर्षों से हिन्दी हमारी संस्कृति में रची-बसी है। मन आत्मा में समायी हुई है। बहुसंख्यक जनों से सम्भाषण के लिये हिन्दी आज अनिवार्य है। उसका असली संवाहक हर पढ़ा-लिखा आम जन है परन्तु हिन्दी भाषायी नेतृत्व की आशा तो शिक्षकों और पाठ्य पुस्तक निर्माताओं के साथ-साथ कवियों, गीतकारों, लेखकों, साहित्यकारों, पत्रकारों और सम्पादकों से ही है। हिन्दी राष्ट्रभाषा की विशिष्टता और उसकी समृद्धि शिक्षितजनों की सजगता, जागरूकता एवं संरक्षण पर निर्भर करती है। किसी भी देश की भाषा की विकृति और उसके परिमार्जन के लिये नागरिक ही उत्तरदायी होते हैं। हमें हिन्दी के सरलीकरण के दौर में मानक भाषा रूप की गरिमा को यथावत् बनाये रखने की बहुत अधिक आवश्यकता समझनी चाहिये।

***ऋतु साहित्य निकेतन, जूट मिल थाना के पीछे बगल गली, हनुमान मंदिर के पास, रायगढ़ (छत्तीसगढ़)।**

'मेरा रेशम मेरा अभिमान' अभियान की संक्षिप्त रिपोर्ट

मेरा रेशम मेरा अभिमान : भारत के रेशम उद्योग को सबल बनाने हेतु एक अभिनव पहल

सुस्मिता दास*, अपर्णा के., सुबर्नाबती बारीक, श्रीकांत कुमार एवं एन.बी.चौधरी

भारत का रेशम उद्योग देश की एक सदियों पुरानी परम्परा है जो लम्बे समय से आजीविका के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक गौरव और आर्थिक मजबूती का स्रोत रहा है। आज भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा रेशम उत्पादक है। भारतीय रेशम उद्योग देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ है, जो लाखों लोगों को विशेषकर ग्रामीण महिलाओं और जनजातीय समुदायों को रोजगार प्रदान करता है। इसके बावजूद यह क्षेत्र राष्ट्रीय उत्पादन लक्ष्यों को पूरा करने में काफी चुनौतियों का सामना करता रहा है। एक बड़ी बाधा आधुनिक नवाचारों का कम उपयोग है। केन्द्रीय रेशम बोर्ड (CSB) ने रोग-प्रतिरोधी नस्लों से लेकर उन्नत कीटपालन तकनीकों तक कई उन्नत प्रौद्योगिकियों का विकास किया है लेकिन जागरूकता की कमी, सीमित प्रशिक्षण और शोधकर्ताओं तथा किसानों के बीच सीमित संचार के कारण ये अक्सर किसानों तक पहुँचने में विफल रहती हैं। यह "प्रयोगशाला से प्रक्षेत्र तक" (lab-to-land) की खाई तसर रेशम उत्पादक क्षेत्रों में विशेष रूप से परिलक्षित होती है। इस अंतर का मूल कारण अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित उन्नत प्रौद्योगिकियों और किसानों द्वारा अपनाई जा रही पारम्परिक विधियों के बीच बढ़ती दूरी है। अपर्याप्त जागरूकता, आधुनिक तकनीकों तक सीमित पहुँच और सीमित राज्य स्तरीय विस्तार सेवाओं ने एक ऐसी स्थिति पैदा कर दी जहाँ रोग-प्रतिरोधी रेशमकीट नस्लें, वैज्ञानिक कीटपालन विधियाँ, प्रभावी कीट और रोग प्रबंधन रणनीतियाँ और उन्नत धागाकरण तकनीक/मशीनें जैसे नवाचार प्रभावी रूप से हितग्राहियों तक नहीं पहुँच पाए। इसके परिणामस्वरूप किसान अक्सर फसल की विफलताओं, कोसा की कम पैदावार और बाजार मूल्य में उतार-चढ़ाव से जूझते रहते हैं। वर्ष 2024-25 में 3200 मीट्रिक टन के लक्ष्य के मुकाबले 1884 मीट्रिक टन कच्चे तसर रेशम का उत्पादन इस बात का सूचक था कि उत्पादकता बढ़ाने और लक्ष्य प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक हस्तक्षेप की तत्काल आवश्यकता है। इन बाधाओं को दूर करने के लिए वस्त्र मंत्रालय के अधीन केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा "मेरा रेशम मेरा अभिमान" (MRMA) नामक एक वृहद प्रौद्योगिकी हस्तांतरण कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस देशव्यापी अभियान की शुरुआत दिनांक 19 मई, 2025 को के.रे.बो.- केन्द्रीय तसर अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची द्वारा आयोजित राष्ट्रीय तसर कृषि मेला सह 61वें स्थापना दिवस के अवसर पर माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह के द्वारा की गई। इस पहल का उद्देश्य अनुसंधान और क्षेत्रीय अनुप्रयोग के बीच की दूरी को पाटकर उन्नत प्रौद्योगिकी को किसानों के लिए सुलभ और कार्रवाई योग्य बनाकर रेशम उद्योग को सुदृढ़ करना है जिससे उत्पादकता और गुणवत्ता में वृद्धि हो। यह अभियान में एक अभिनव "जिला अंगीकरण मॉडल" (District Adoption Model) का उपयोग किया गया जिसमें केन्द्रीय रेशम बोर्ड के वैज्ञानिकों और राज्य रेशम उत्पादन विभागों के अधिकारियों एवं तकनीकी कर्मचारियों का सीधे किसानों के साथ जुड़ना संभव हो पाया। "मेरा रेशम मेरा अभिमान" अभियान का एक पहलू वन्य रेशम क्षेत्र पर इसका स्पष्ट फोकस था। इस राष्ट्रव्यापी अभियान का शुभारम्भ हेतु के.रे.बो.-के.त.अ.व प्र.सं, राँची का चयन तसर किसानों और इस अनूठी वन-आधारित संस्कृति से जुड़ी आदिवासी आजीविका के प्रति अभियान की प्रतिबद्धता का एक शक्तिशाली प्रतीक था। इस अभियान में तसर के लिए मध्य और उत्तरी राज्यों को शहतूत के लिए दक्षिणी राज्यों और एरी/ मूगा के लिए पूर्वोत्तर राज्यों को लक्षित किया गया। विशेष रूप से झारखंड में, जो तसर उत्पादन का एक प्रमुख केन्द्र है, पहले चरण में छह प्रमुख जिलों- दुमका, गोड्डा, गिरिडीह, देवघर, सरायकेला-खरसावाँ और पश्चिमी सिंहभूम को चुना गया। के.रे.बो.-के.त.अ.व प्र.सं, राँची के वैज्ञानिकों को जो तसर रेशम पर देश के अग्रणी विशेषज्ञ हैं, न केवल झारखण्ड बल्कि छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे तसर उत्पादक क्षेत्रों के जिलों के लिए नोडल अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया। यह तसर विशेषज्ञों को सीधे तसर किसानों से जोड़कर प्रासंगिक और प्रभावी प्रौद्योगिकी हस्तांतरण सुनिश्चित करने की एक सुविचारित रणनीति को दर्शाता है।

अभियान की कार्य-प्रणाली -जिला अंगीकरण मॉडल : "मेरा रेशम मेरा अभिमान" अभियान की सफलता के केन्द्र में इसका "जिला अंगीकरण मॉडल" है जो एक सहयोगात्मक और जमीनी वास्तविकताओं पर आधारित ढाँचा है। यह मॉडल "ऊपर से नीचे" (top-down) के बजाय "नीचे से ऊपर" (bottom-up) दृष्टिकोण अपनाता है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित कार्य-योजना अपनाई गई :

- **टीम गठन :** केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा क्षेत्रीय कार्यान्वयन का नेतृत्व करने के लिए नवाचारों में पारंगत वैज्ञानिकों का चयन किया गया। इसके साथ ही राज्य रेशम निदेशालय के द्वारा संभावित जिलों का चयन किया गया और स्थानीय गतिविधियों के समन्वय के लिए जिला नोडल अधिकारियों को नामित किया गया। प्रत्येक जिले के लिए के.रे.बो. के वैज्ञानिक और राज्य नोडल अधिकारी वाली एक समर्पित टीम का गठन किया गया।
- **योजना :** इन टीमों ने स्थानीय चुनौतियों और कमियों की पहचान करने के लिए पहले आधारभूत सर्वेक्षण (baseline survey) किया जिसके आधार पर एक जिला-विशिष्ट कार्य-योजना विकसित की गई।
- **क्षेत्र कार्यान्वयन :** जिला अंगीकरण मॉडल का मूल किसानों के साथ सीधा जुड़ाव है। टीमों के द्वारा प्रक्षेत्रों का दौरा, उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन, जागरूकता कार्यक्रम और व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया गया। इससे किसानों को नई तकनीकों जैसे कि वैज्ञानिक कीटपालन विधियों, प्रभावी कीट और रोग प्रबंधन रणनीतियों और उन्नत धागाकरण तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ।
- **प्रत्यक्ष सम्पर्क :** इन कार्यक्रमों के माध्यम से टीमों का किसानों के साथ सीधा सम्पर्क स्थापित हुआ। इस प्रत्यक्ष सम्पर्क से न केवल किसानों को लाभ हुआ बल्कि वैज्ञानिकों को भी तत्काल प्रतिक्रिया (feedback) प्राप्त करने का अवसर मिला।

प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवं डिजिटल निगरानी : आधुनिकता का समावेश - "मेरा रेशम मेरा अभिमान" अभियान के दो मुख्य आधार स्तम्भ थे - उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों/नवाचारों का हस्तांतरण और उस हस्तांतरण की

निगरानी के लिए आधुनिक डिजिटल उपकरणों का उपयोग।

- **प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण :** इस अभियान ने किसानों को कई आधुनिक नवाचारों से परिचित कराया। इसमें उच्च उपज वाली और रोग-प्रतिरोधी रेशमकीट नस्लें, वैज्ञानिक कीटपालन विधियाँ, प्रभावी कीट और रोग प्रबंधन रणनीतियाँ, एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM) जो रासायनिक उपयोग को कम करता है और उन्नत धागाकरण तकनीक/मशीनें एवं अन्य कोसोत्तर प्रौद्योगिकियाँ शामिल हैं जो रेशम की गुणवत्ता में सुधार और मूल्यवर्धन करती हैं।

- **डिजिटल निगरानी प्रणाली :** "मेरा रेशम मेरा अभिमान" को जो बात अन्य अभियानों से अलग करती है, वह है इसकी पारदर्शिता और जवाबदेही के प्रति प्रतिबद्धता। इसके लिए एक समर्पित, उपयोगकर्ता-अनुकूल एम.आर.एम.ए.-वेब एप्लिकेशन विकसित किया गया जो निम्नलिखित तरीके से काम करता था।
    - **रीयल-टाइम डेटा :** सभी नोडल अधिकारियों और वैज्ञानिकों को इस ऐप पर लॉगिन एक्सेस दिया गया जिससे वे अपने द्वारा आयोजित प्रत्येक गतिविधि (प्रशिक्षण, दौरा, प्रदर्शन) को वास्तविक समय में अपलोड करते रहें।
    - **जियो-टैगिंग और जी.आई.एस. :** अपलोड की गई सभी तस्वीरों को जियो-टैग किया गया और स्थान को जी.आई.एस. (GIS) पर मैप किया गया जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि गतिविधियाँ वास्तव में प्रक्षेत्र में हो रही हैं।
    - **इंटरैक्टिव डैशबोर्ड :** यह सारा डेटा एक केन्द्रीय इंटरैक्टिव डैशबोर्ड पर प्रदर्शित होता रहा। जिसने प्रबंधन को कार्यक्रमों की प्रगति, क्षेत्रीय दौरों और किसानों की प्रतिक्रिया पर रीयल-टाइम अपडेट देखने में सक्षम बनाया जिससे डेटा-आधारित पर्यवेक्षण और समय पर हस्तक्षेप संभव हो पाया।

अभियान की सफलता एवं विस्तार : "मेरा रेशम मेरा अभिमान" अभियान का पैमाना महत्वाकांक्षी था (i) 26 रेशम उत्पादक राज्यों के 120 से अधिक जिलों को शामिल करना (ii) 1 लाख से अधिक किसानों तक पहुँचना और (iii) 1,000 से अधिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना। प्रारम्भ में 100-दिवसीय अभियान के रूप में लॉन्च किए गए "मेरा रेशम मेरा अभिमान" अभियान को इसकी जबर्दस्त प्रतिक्रिया और सफलता के कारण दीपावली तक बढ़ा दिया गया। यह विस्तार इसकी प्रभावशीलता का प्रमाण है। इस देशव्यापी अभियान में 28 राज्यों के 129 जिलों को शामिल किया गया, कुल 1425 कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें 74000 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह प्रगति दर्शाती है कि किसान नई तकनीकों को अपनाने के लिए उत्सुक हैं, बशर्ते उन्हें सही मार्गदर्शन और समर्थन मिले।

अपेक्षित परिणाम और तसर उद्योग पर दीर्घकालिक प्रभाव : "मेरा रेशम मेरा अभिमान" का प्रभाव अल्पकालिक उत्पादन वृद्धि से कहीं अधिक गहरा होने की उम्मीद है, विशेष रूप से तसर क्षेत्र के लिए।

- **उत्पादकता और आय में वृद्धि :** वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने से कोसा की पैदावार में प्रत्यक्ष वृद्धि होगी, गुणवत्ता में सुधार होगा और कीटों तथा बीमारियों से होने वाले नुकसान में कमी आएगी। इससे तसर किसानों के लिए उच्च और अधिक स्थिर आय सुनिश्चित होगी।

- **क्षमता निर्माण (Capacity Building) :** यह अभियान न केवल किसानों को बल्कि राज्य रेशम उत्पादन विभागों के जमीनी स्तर के कर्मचारियों को भी प्रशिक्षित और सशक्त बना रहा है। यह एक "ट्रेन द ट्रेनर" (Train the Trainer) प्रभाव पैदा करता है जो अभियान के समाप्त होने के बाद भी उत्पादन वृद्धि में स्थिरता सुनिश्चित करेगा।

- **अनुसंधान-प्रक्षेत्र फीडबैक लूप :** यह इस अभियान के सबसे महत्वपूर्ण दीर्घकालिक प्रभावों में से एक है। जब वैज्ञानिक सीधे प्रक्षेत्र में चुनौतियों का सामना करते हैं तो वे किसानों की वास्तविक समस्याओं (जैसे, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, नई बीमारियाँ) को समझते हैं। यह अमूल्य प्रतिक्रिया (feedback) प्रयोगशाला में वापस आती है और आवश्यकता आधारित अनुसंधान (need-based research) को जन्म देती है। इस प्रकार "प्रयोगशाला से प्रक्षेत्र तक" का एक-तरफ़ा प्रवाह एक गतिशील परस्पर सम्वाद बन जाता है।

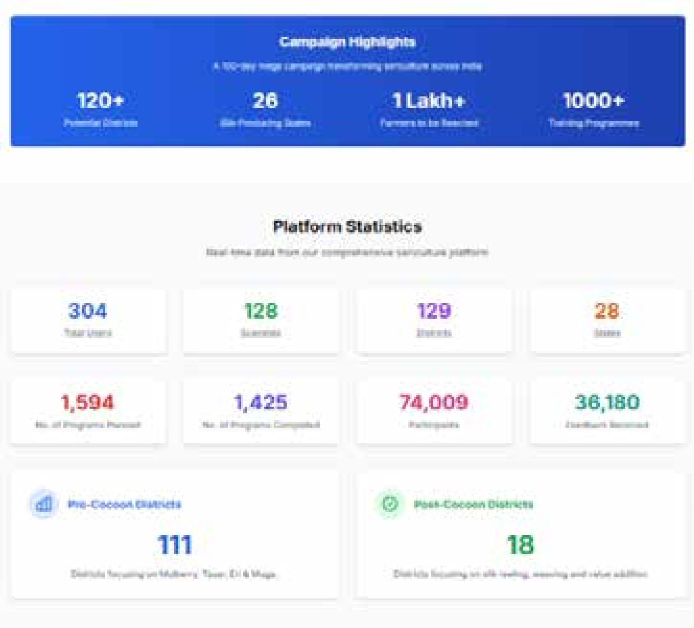

चुनौतियाँ और भविष्य की दिशाएँ : हालाँकि "मेरा रेशम मेरा अभिमान" अभियान ने महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है, फिर भी दीर्घकालिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इनमें अभियान अवधि के बाद प्रौद्योगिकियों को निरंतर अपनाना सुनिश्चित करना, क्षेत्रीय बुनियादी ढाँचे की असमानताओं को दूर करना, दूरस्थ तसर-उत्पादक क्षेत्रों में डिजिटल उपकरणों का विस्तार करना और मजबूत बाजार सम्पर्क स्थापित करना शामिल है। अभियान की भविष्य की दिशा इन बाधाओं को दूर करने पर केन्द्रित होगी जिसमें ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के साथ एकीकरण, गैर-पारम्परिक रेशम क्षेत्रों में विस्तार और सटीक रेशम उत्पादन के लिए संभावित रूप से एआई (AI) और आईओटी (IoT) का उपयोग करना शामिल है।

निष्कर्ष : "मेरा रेशम मेरा अभिमान" केवल एक समयबद्ध अभियान नहीं है। यह भारत के रेशम उत्पादन क्षेत्र के आधुनिकीकरण के लिए एक बहुप्रतीक्षित आंदोलन है। नए जिलों में क्षैतिज विस्तार और पारम्परिक केन्द्रों में उत्पादकता लाभ पर ध्यान केन्द्रित करके यह योजना समावेशी विकास सुनिश्चित करती है। तसर उद्योग से जुड़े वैज्ञानिक और राज्य निदेशालय के अधिकारी/कर्मचारी दूरगामी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इस अभियान के माध्यम से इस क्षेत्र की चुनौतियों को सीधे सम्बोधित कर रहा है। "जिला अंगीकरण मॉडल" के माध्यम से वैज्ञानिक विशेषज्ञता को जमीनी स्तर पर ले जाकर और डिजिटल निगरानी के माध्यम से अभूतपूर्व पारदर्शिता सुनिश्चित करके यह अभियान न केवल रेशम का उत्पादन बढ़ा रहा है बल्कि हजारों किसानों के जीवन में गौरव, समृद्धि और उद्देश्य का एक नया धागा बुन रहा है। यह भारत की आत्मनिर्भरता और ग्रामीण स्थिरता के व्यापक लक्ष्यों की दिशा में एक सुदृढ़ कदम है।

*वैज्ञानिक-डी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

तसर सेरीसिन : उप-उत्पाद से जैव संसाधन तक

डॉ. कर्मवीर जेना*

परिचय : भारत सभी प्रमुख रेशम किस्मों का गृह स्थान है जिनमें शहतूत और वन्य रेशम जैसे एरी, मूगा, शीतोष्ण तसर और उष्णकटिबंधीय तसर शामिल हैं। इनमें से जंगली रेशमकीट *एन्थीरिया माइलिट्टा* द्वारा उत्पादित उष्णकटिबंधीय तसर रेशम अपनी प्राकृतिक मजबूती, विशिष्ट बनावट और चमकदार रूप के लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। परम्परागत रूप से इन कोसों से प्राप्त फ़ाइब्रोइन का उपयोग कपड़ा उत्पादन में किया जाता रहा है जबकि बाहरी प्रोटीन परत सेरीसिन को अक्सर सीमित उपयोग वाले उपोत्पाद के रूप में माना जाता था। हालाँकि पदार्थ विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी में हालिया प्रगति ने इस दृष्टिकोण को बदल दिया है। सेरीसिन को एक स्थायी और कार्यात्मक जैव-सामग्री के रूप में इसकी क्षमता के लिए तेजी से मान्यता मिल रही है। यह एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि, जैव निम्नीकरणीयता, नमी धारण क्षमता और फिल्म निर्माण क्षमता जैसे प्रमुख गुण प्रदर्शित करता है जो इसे सौंदर्य प्रसाधनों, चिकित्सा उत्पादों और पर्यावरण अनुकूल प्रौद्योगिकियों में अनुप्रयोगों के लिए आकर्षक बनाता है। नवीकरणीय और जैव-संगत संसाधनों की बढ़ती माँग के साथ सेरीसिन कई उद्योगों के लिए एक आशाजनक प्रकृति-व्युत्पन्न समाधान प्रदान करता है।

रेशम प्रोटीन क्या है ?

रेशम प्रोटीन रेशमकीट के कोसा से प्राप्त एक प्राकृतिक जैव पदार्थ है और मुख्य रूप से दो प्रमुख प्रोटीनों से बना होता है : फ़ाइब्रोइन और सेरीसिन।

• फ़ाइब्रोइन रेशम के रेशे के संरचनात्मक केंद्र के रूप में कार्य करता है जिससे मज़बूत और टिकाऊ धागे बनते हैं।

• सेरीसिन एक सुरक्षात्मक चिपकने वाली परत के रूप में कार्य करता है जो फ़ाइब्रोइन तंतुओं को एक साथ बाँधता है।

तसर रेशम के कोसा में सेरीसिन कुल कोसा भार का लगभग 15-18% होता है। शहतूत रेशम (बॉम्बिक्स मोरी) से प्राप्त सुविचारित सेरीसिन के विपरीत, तसर सेरीसिन एक विशिष्ट अमीनो अम्ल संरचना और आण्विक संरचना प्रदर्शित करता है जो इसे अद्वितीय कार्यात्मक गुण प्रदान करता है। सेरीन, एस्पार्टिक अम्ल, ग्लाइसिन, ग्लूटामिक अम्ल और थ्रेओनीन से भरपूर इसका अमीनो अम्ल इसकी उत्कृष्ट नमी धारण क्षमता, एंटीऑक्सीडेंट गतिविधि और जैव-संगतता में योगदान देता है। ये गुण तसर सेरीसिन को जैव-चिकित्सा और त्वचा विज्ञान सम्बन्धी अनुप्रयोगों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त बनाते हैं।

रेशम की डिगमिंग : कोसा से रेशम प्रोटीन, विशेष रूप से सेरीसिन निकालने की प्रक्रिया को डीगमिंग कहा जाता है। परम्परागत रूप से यह चरण रेशम के रेशों को वस्त्र बनाने से पहले शुद्ध करने के लिए किया जाता है। डीगमिंग में आमतौर पर रेशम के कोसा को पानी में उबाला जाता है, अक्सर क्षारीय घोल के साथ ताकि सेरीसिन की परत को प्रभावी ढंग से हटाया जा सके और आंतरिक फ़ाइब्रोइन धागों को अलग किया जा सके।

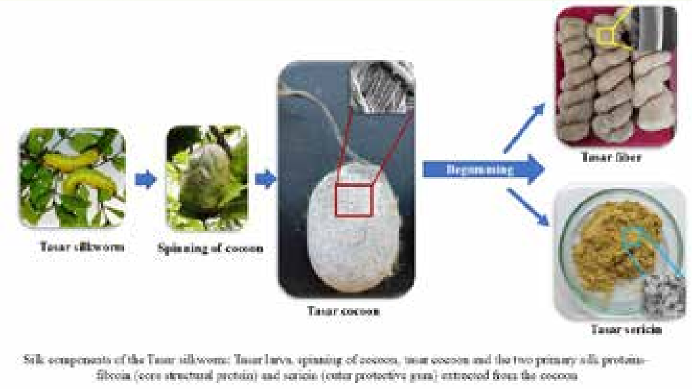

Silk components of the Tasar silkworm: Tasar larva, spinning of cocoon, tasar cocoon and the two primary silk proteins–fibroin (core structural protein) and sericin (outer protective gum) extracted from the cocoon

चित्र : तसर रेशमकीट के रेशम घटक : तसर लार्वा, कोसा का निर्माण, तसर कोसा और कोसा से निकाले गए दो प्राथमिक रेशम प्रोटीन - फ़ाइब्रोइन (मुख्य संरचनात्मक प्रोटीन) और सेरीसिन (बाहरी सुरक्षात्मक गोंद)।

सेरीसिन के कार्यात्मक गुण :

- सेरीसिन जैविक उत्तकों के साथ अत्यधिक संगत है और सूजन या प्रतिरक्षा अस्वीकृति को ट्रिगर नहीं करता है जिससे यह घाव ड्रेसिंग, उत्तक इंजीनियरिंग स्कैफोल्ड और जैव चिकित्सा प्रत्यारोपण में उपयोग के लिए एक आशाजनक सामग्री बन जाता है।
- सेरीसिन में शक्तिशाली मुक्त कणों को हटाने की क्षमता होती है जो ऑक्सीडेटिव तनाव से सुरक्षा प्रदान करता है, जो कोशिकीय उम्र बढ़ने, त्वचा विकारों और विभिन्न अपक्षयी स्थितियों का एक अंतर्निहित कारक है।
- इसकी प्राकृतिक रूप से उच्च सेरीन सामग्री उत्कृष्ट नमी धारण क्षमता में योगदान करती है जिससे हाइड्रेशन और त्वचा अवरोध सुरक्षा के उद्देश्य से कॉस्मेटिक और त्वचा देखभाल अनुप्रयोगों में इसका मूल्य बढ़ जाता है।
- शोध से संकेत मिलता है कि सेरीसिन कुछ सूक्ष्मजीवी उपभेदों के विकास को रोक सकता है जिससे यह रोगाणुरोधी ड्रेसिंग, चिकित्सा वस्त्र और व्यक्तिगत स्वच्छता उत्पादों में उपयोग के लिए उपयुक्त हो जाता है।
- सेरीसिन को लचीली, जैव निम्नीकरणीय फिल्मों में संसाधित किया जा सकता है जिनका टिकाऊ पैकेजिंग, नियंत्रित दवा वितरण प्रणालियों और जैव चिकित्सा उपकरणों के लिए कोटिंग्स में अनुप्रयोगों के लिए परीक्षण किया जा रहा है।

उभरते उद्योगों के लिए एक बहुमुखी जैव सामग्री : रेशमकीट के कोसा से निकाला जाने वाला एक प्राकृतिक प्रोटीन सेरीसिन अपने विशिष्ट कार्यात्मक

गुणों और पर्यावरण के अनुकूल स्वरूप के कारण विभिन्न उद्योगों में बढ़ती रुचि आकर्षित कर रहा है। कॉस्मेटिक उद्योग में सेरीसिन को एंटी-एजिंग क्रीम, मॉइस्चराइज़र और त्वचा को चमकदार बनाने वाले फ़ॉर्मूलेशन जैसे उत्पादों में शामिल किया जाता है क्योंकि यह नमी बनाए रखने, त्वचा की लोच में सुधार करने और महीन रेखाओं को कम करने की क्षमता रखता है जिससे यह सिंथेटिक एडिटिव्स का एक सुरक्षित और टिकाऊ विकल्प बन जाता है। जैव चिकित्सा अनुप्रयोगों में सेरीसिन आधारित हाइड्रोजेल और स्कैफोल्ड ने अपनी जैव-संगतता और नमी बनाए रखने की क्षमता के कारण घाव भरने में तेज़ी लाने और कोशिका प्रसार को बढ़ावा देने की क्षमता दिखाई है। इसके अतिरिक्त दवा वितरण के क्षेत्र में सेरीसिन का उपयोग नियंत्रित रिलीज़ के लिए माइक्रोकैप्सूल और नैनोकणों के निर्माण, चिकित्सीय प्रभावकारिता को बढ़ाने और प्रतिकूल प्रभावों को कम करने के लिए किया जाता है। कपड़ा उद्योग में सेरीसिन का उपयोग पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए कपड़ों की परिष्करण तकनीकों में किया जा रहा है ताकि विषाक्त रसायनों का उपयोग किए बिना कोमलता, यूवी सुरक्षा और रोगाणुरोधी गुण प्रदान किए जा सकें। बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग में इसकी क्षमता वैश्विक स्थिरता प्रयासों के अनुरूप भी है जो प्लास्टिक फिल्मों का एक प्राकृतिक विकल्प प्रदान करती है। अपने औद्योगिक उपयोगों के अलावा सेरीसिन रेशम उत्पादन के एक उप-उत्पाद को एक मूल्यवान संसाधन में परिवर्तित करके सतत् विकास और वृत्तीय अर्थव्यवस्था मॉडल का समर्थन करता है। यह दृष्टिकोण न केवल पर्यावरणीय प्रभाव को कम करता है बल्कि रेशम उत्पादन समुदायों के लिए, विशेष रूप से भारत और अन्य रेशम उत्पादक क्षेत्रों में नए आर्थिक अवसर भी खोलता है। जैसे-जैसे प्राकृतिक, बायोडिग्रेडेबल और उच्च-प्रदर्शन जैव-सामग्री की माँग बढ़ती जा रही है, तसर सेरीसिन एक बहुमुखी और व्यावसायिक रूप से आशाजनक जैव-संसाधन के रूप में उभर रहा है जिसका पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक मूल्य महत्वपूर्ण है।

चुनौतियाँ और भविष्य का दृष्टिकोण : हालाँकि तसर सेरीसिन जैव-चिकित्सा, कॉस्मेटिक और औद्योगिक अनुप्रयोगों में अनेक लाभ प्रदान करता है फिर भी इसकी पूर्ण क्षमता का एहसास करने के लिए कई चुनौतियों का समाधान किया जाना आवश्यक है :

- गुणवत्ता और प्रदर्शन में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए निष्कर्षण और शुद्धिकरण तकनीकों का मानकीकरण।
- प्रोटीन की कार्यात्मक अखंडता से समझौता किए बिना उत्पादन प्रक्रियाओं का विस्तार।
- नैदानिक, औषधीय और कॉस्मेटिक फ़ॉर्मूलेशन में उपयोग के लिए नियामक अनुमोदन जिसके लिए व्यापक सुरक्षा और प्रभावकारिता डेटा की आवश्यकता होती है।

इन बाधाओं के बावजूद चल रहे अनुसंधान, तकनीकी प्रगति और बढ़ता निवेश इन सीमाओं को पार करने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। टिकाऊ, जैव निम्नीकरणीय सामग्रियों में बढ़ती वैश्विक रुचि के साथ, तसर सेरीसिन व्यापक मान्यता और अपनाने के लिए अच्छी स्थिति में है। इसके अद्वितीय जैव सक्रिय गुण और कम पर्यावरणीय प्रभाव इसे विज्ञान और उद्योग दोनों में भविष्य के नवाचारों के लिए एक आकर्षक उम्मीदवार बनाते हैं।

के.रे.बो.- केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान की भूमिका : केन्द्रीय रेशम बोर्ड - केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (के.रे.बो.-के.त.अ. व प्र.सं.) एक मूल्यवान जैव-संसाधन के रूप में तसर सेरीसिन की पूर्ण क्षमता को उजागर करने के प्रयासों में अग्रणी है। इसकी कार्यात्मक बहुमुखी प्रतिभा और पर्यावरणीय लाभों को पहचानते हुए के.रे.बो.-के.त.अ. व प्र.सं. ने इस कम उपयोग किए जाने वाले रेशम प्रोटीन के निष्कर्षण, शुद्धिकरण और औद्योगिक अनुप्रयोग से जुड़ी प्रमुख चुनौतियों का समाधान करने में एक रणनीतिक भूमिका निभाई है। संस्थान के अनुसंधान का एक प्रमुख केंद्र बिन्दु सेरीसिन निष्कर्षण और शुद्धिकरण प्रोटोकॉल का मानकीकरण है। इन प्रयासों का उद्देश्य कृषि, फार्मास्यूटिकल्स, सौंदर्य प्रसाधन और जैव-सामग्री सहित विविध क्षेत्रों की कठोर आवश्यकताओं को पूरा करने वाली विश्वसनीय, उच्च-गुणवत्ता वाली पैदावार सुनिश्चित करना है। तापमान, पीएच और विलायक प्रणालियों जैसे मापदंडों का अनुकूलन करके संस्थान प्रयोगशाला और व्यावसायिक स्तर पर उपयोग के लिए उपयुक्त, सुसंगत प्रदर्शन विशेषताओं वाले जैव सक्रिय सेरीसिन के उत्पादन की दिशा में काम कर रहा है। वैज्ञानिक परिशोधन के अलावा के.रे.बो.-के.त.अ. व प्र.सं. ऐसी मापनीय और आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकों का विकास कर रहा है जो सेरीसिन की कार्यात्मक अखंडता और पर्यावरणीय स्थिरता को बनाए रखते हुए बड़े पैमाने पर उत्पादन का समर्थन करती हैं। ये नवाचार सेरीसिन आधारित उत्पादों को किफ़ायती और सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण हैं। विशेष रूप से उन उद्योगों के लिए जो सिंथेटिक सामग्रियों के जैव-निम्नीकरणीय और गैर-विषाक्त विकल्प तलाश रहे हैं। इसके अलावा संस्थान विश्वविद्यालयों, अनुसंधान निकायों और उद्योग भागीदारों के साथ सहयोगात्मक पहलों में सक्रिय रूप से संलग्न है, उत्पाद विकास के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। मौलिक अनुसंधान और औद्योगिक कार्यान्वयन के बीच की खाई को पाटकर के.रे.बो.-के.त.अ. व प्र.सं. स्वास्थ्य सेवा और व्यक्तिगत देखभाल समाधानों में तसर सेरीसिन के एकीकरण को सुगम बना रहा है। जैसे-जैसे प्राकृतिक टिकाऊ और उच्च-प्रदर्शन सामग्रियों की वैश्विक माँग बढ़ती जा रही है, के.रे.बो.-के.त.अ. व प्र.सं. का निरंतर कार्य तसर सेरीसिन को व्यापक क्षमता वाले एक परिवर्तनकारी घटक के रूप में स्थापित कर रहा है। इसके प्रयास न केवल रेशम उद्योग के उप-उत्पादों के मूल्यवर्धन का समर्थन करते हैं बल्कि वृत्ताकार अर्थव्यवस्था प्रथाओं, ग्रामीण विकास और हरित जैव प्रौद्योगिकी नवाचार में भारत के नेतृत्व में भी योगदान करते हैं।

निष्कर्ष : तसर सेरीसिन जिसे कभी रेशम उद्योग का एकमात्र अपशिष्ट उत्पाद माना जाता था, अब एक अत्यंत बहुमुखी, बहुक्रियाशील प्रोटीन के रूप में उभर रहा है जिसकी औद्योगिक और जैव-चिकित्सा क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान है। इसकी विशिष्ट रासायनिक संरचना, व्यापक-स्पेक्ट्रम जैव-सक्रियता और जैव-निम्नीकरणीय, पर्यावरण-अनुकूल प्रकृति इसे सौंदर्य प्रसाधनों और व्यक्तिगत देखभाल से लेकर घाव भरने, दवा वितरण और उत्तक इंजीनियरिंग तक के अनुप्रयोगों में सिंथेटिक सामग्रियों का एक आकर्षक विकल्प बनाती है। सतत् नवाचार से प्रेरित इस युग में तसर सेरीसिन का पुनरुत्थान समयोचित और प्रभावशाली दोनों है। यह न केवल हरित प्रौद्योगिकियों की ओर एक मार्ग प्रस्तुत करता है बल्कि रेशम उत्पादन के उप-उत्पादों में मूल्यवर्धन, पर्यावरणीय अपशिष्ट को कम करने और विशेष रूप से ग्रामीण रेशम उत्पादक समुदायों में आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने का एक अवसर भी प्रस्तुत करता है। जैसे-जैसे अनुसंधान और व्यावसायीकरण के प्रयास आगे बढ़ रहे हैं, तसर सेरीसिन एक अधिक स्थायी और स्वास्थ्य-सचेत भविष्य के निर्माण में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाने के लिए तैयार है।

*वैज्ञानिक-डी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

तसर रेशम का ऐतिहासिक, पारिस्थितिकीय और सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य : एक समीक्षा

दिव्या राजावत*, श्रीनाथ वाई.एस., अरुणा रानी, नीरज शर्मा, राहुल कुमार, एन.बी. चौधरी

परिचय : रेशम कीटपालन (सेरीकल्चर), रेशम उत्पादन की कला और विज्ञान है, जो शहरी सम्पन्नता और ग्रामीण आजीविका के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है। ईसाई युग की शुरुआत के समय से ही इसकी उत्पत्ति मानी जाती है और यह भारत के सबसे पुराने कृषि-आधारित कुटीर उद्योगों में से एक है। इसका महत्व केवल कच्चे रेशम के उत्पादन तक सीमित नहीं है बल्कि यह आय के पुनर्वितरण का भी एक प्रमुख साधन है जिसकी माँग मुख्यतः समाज के वंचित वर्गों से आती है। ऐसा माना जाता है कि एरी, तसर और मूगा जैसे जंगली रेशम का उत्पादन भारत में प्राचीन समय से होता आया है। वैदिक काल (1500 ई.पू.-500 ई.पू.) और महाकाव्य-पुराण काल (200 ई.पू.-700 ई.) के साहित्यिक स्रोतों, जैसे ऋग्वेद, रामायण और महाभारत में रेशम के संकेत मिलते हैं। ऋग्वेद में प्रयुक्त "ऊर्णा" शब्द को अक्सर रेशम के रूप में व्याख्यायित किया गया है। विभिन्न ग्रंथों और पुस्तकों में रेशमी वस्त्र और रेशम से सम्बन्धित ऐतिहासिक पहलुओं का विवरण दिया गया है। हालाँकि वस्त्र उत्पादन में मुख्य रूप से बॉम्बिक्स मोरी प्रजाति का उपयोग किया जाता है लेकिन रेशम उत्पादन में अन्य कई प्रजातियाँ भी शामिल हैं। बॉम्बिक्स मोरी के साथ-साथ *एन्थीरिया पर्नी, एन्थीरिया माइलिट्टा* और *एन्थीरिया यामामाई* क्रमशः चीन, भारत और जापान में तसर या तसर जैसी रेशमी किस्मों के उत्पादन में योगदान देती हैं। इसी प्रकार फिलोसामिया सिंथिया और फिलोसामिया रिसिनी का उपयोग एरी रेशम उत्पादन में किया जाता है। वहीं *एन्थीरिया असामा* अपनी सुनहरी पीली रेशमी किस्म, जिसे मूगा रेशम कहा जाता है, के लिए प्रसिद्ध है। इन विविधताओं में भारत अद्वितीय है क्योंकि यह विश्व का एकमात्र देश है जहाँ ये तीनों प्रकार के रेशम का उत्पादन होता है। इन्हें प्रायः "जंगली रेशम" कहा जाता है लेकिन इनके पालन और प्रबंधन के कारण इन्हें अधिक सटीक रूप से "अर्ध-पालतू" कहना उचित होगा। तसर रेशमकीट जिसका वैज्ञानिक नाम *एन्थीरिया माइलिट्टा* है, उष्णकटिबंधीय भारत में पाए जाने वाले स्वदेशी रेशम उत्पादक कीट हैं, जो सैटर्निडाई परिवार से सम्बन्धित हैं। ये रेशम उत्पादन और रेशम कीटपालन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए प्रसिद्ध हैं। इनके जीवन के लिए विशेष खाद्य पौधों की आवश्यकता होती है जिनमें मुख्य रूप से टर्मिनेलिया और शोरिया प्रजातियों के वृक्ष आते हैं, जो तसर कीटों के प्राकृतिक आवासों में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। तसर रेशम का उत्पादन भारत के कई राज्यों जैसे झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, ओडिशा, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में होता है। इस व्यापक समीक्षा में हमने तसर संस्कृति के ऐतिहासिक विकास को विभिन्न वर्णनात्मक चरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। साथ ही हमने तसर रेशम उत्पादन से उत्पन्न सामाजिक-आर्थिक प्रभावों पर प्रकाश डाला है और उन विविध पहलुओं का विश्लेषण किया है जो इसकी महत्ता को निर्धारित करते हैं। तालिका-1 विश्व भर में रेशम सम्बन्धी गतिविधियों के कालानुक्रमिक विकास को प्रदर्शित करती है।

तालिका-1 : विश्व भर में रेशम गतिविधियों का कालानुक्रमिक विकास

क्र. सं.	काल खण्ड	गतविधियाँ
1	6,500 ई.पू.	रेशम का उल्लेख ऋग्वेद में किया गया।
2	5000-3000 ई.पू.	चीन में रेशमी वस्त्र निर्माण स्थापित हुआ। इसे राज्य का रहस्य घोषित किया गया और खुलासा करने पर मृत्यु दंड का प्रावधान था।
3	2450 ई.पू.	जंगली रेशम का उपयोग सिन्धु/सरस्वती सभ्यता में धागे के रूप में हुआ। रामायण में इसका उल्लेख मिलता है।
4	2000 ई.पू.	पूर्वी एशिया और पश्चिमी एशिया के बीच रेशम व्यापार की शुरुआत।
5	1070 ई.पू.	मिश्र तक रेशम का व्यापार हुआ जैसा कि राजाओं की घाटी में एक ममी के बालों में मिले रेशमी धागे से प्रमाणित है।
6	30 ई.पू.	रोम और एशिया के बीच व्यापार का विस्तार। रोम में इतनी अधिक मात्रा में रेशम आया कि सीनेट ने इसके पहनने पर प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया। इसे विलासिता का प्रतीक माना गया और व्यापार रोम के खजाने को खाली कर रहा था।
7	200 ई.	रेशम मार्ग व्यापार स्थापित हुआ। रेशम पालन जापान में फैल गया। घरेलू रेशमकीटों का उपयोग करते हुए रेशम पालन भारत में फैल गया।
8	552 ई.	बीजान्टिन सम्राट जस्टिनियन ने रेशमकीट के अण्डे प्राप्त किए जिन्हें बाँस की छड़ों में छिपाकर मध्य एशिया से लाया गया। बीजान्टिन चर्च ने रेशमी वस्त्र बनाना शुरू किया।
9	1200 ई.	इटली ने एक बड़ा घरेलू रेशम उद्योग विकसित किया क्योंकि चौथे धर्मयुद्ध के बाद कुशल बुनकर कॉन्स्टेंटिनोपल से पलायन कर गए। भारत में कश्मीर से मैसूर तक रेशम उत्पादन फला-फूला।

1. सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण : संस्कृत महाकाव्यों रामायण, महाभारत और मनुस्मृति में "कौशेय" शब्द का उल्लेख मिलता है जो प्राचीन काल में रेशम के लिए प्रयुक्त होता था। हिन्दू पौराणिक कथाओं में देवी सीता को "कौशेय वासिनी" कहा गया है जो रेशमी वस्त्रों से उनके सम्बन्ध का प्रतीक है। महाभारत के सभा पर्व में भी "कौशेय" शब्द का उल्लेख मिलता है जहाँ युधिष्ठिर का वर्णन किया गया है। इन ग्रंथों में धौतपत्त, कौशेय, काशिकांशुक, काशी, पट्टांशुक और चिन्शुक जैसे शब्द भी संदर्भित होते हैं (तालिका-1)। हिन्दू धर्म में क्षौम और कौशेय वस्त्रों को बौद्ध धर्म का पालन करने वाले लोगों द्वारा पहनने की अनुमति थी जो उनकी पवित्रता का संकेत है। रामायण में रेशम का वर्णन न केवल शाही वर्ग के भव्य परिधान के रूप में किया गया है बल्कि साधारण लोगों के परिधान के रूप में भी, जहाँ इसे अक्सर "कौशेय" कहा गया है। हिन्दू परम्परा में रेशम केवल वैभव और विलासिता का प्रतीक नहीं है बल्कि इसे

पवित्रता का प्रतीक भी माना गया है जो सत्व रजस प्रधान वस्त्र माना जाता है। महाभारत के एक श्लोक में द्रौपदी को रेशम के वस्त्रों में सुसज्जित बताया गया है, वहीं कृष्ण लाल रेशमी वस्त्र पहनकर अपनी सास को सम्मानपूर्वक प्रणाम करते हैं। उनकी कलाइयों में शुभ सूत्र बंधे हुए होते हैं जो हिन्दू पौराणिक कथाओं और समाज में रेशम के सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्व को दर्शाता है। तसर रेशम रेशम की प्रमुख किस्मों में से एक है जिसने भारत को तसर रेशम के प्रमुख उत्पादक देशों में स्थापित किया है। तसर रेशम की विशेषता इसकी प्राकृतिक चमक, अद्वितीय बनावट और प्राकृतिक रंगों की विविधता है। अपनी प्राकृतिक और जैविक विशेषताओं के कारण यह रेशम सततता और पर्यावरण अनुकूलता के सिद्धांतों के अनुरूप है। तसर रेशम की उत्पत्ति सिंधु घाटी सभ्यता के समय में हुई मानी जाती है। यह अद्भुत तंतु लगभग 4000 वर्षों से अधिक समय से प्रासंगिक और आकर्षक बना हुआ है। अपनी कालजयी सुंदरता और टिकाऊ गुणवत्ता के कारण तसर रेशम आज भी भारत की समृद्ध वस्त्र विरासत का एक अमूल्य हिस्सा है जो सौंदर्य और स्थिरता दोनों के लिए सम्मानित है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सातवीं शताब्दी के चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भारतीय रेशम को "वन्य रेशम" कहा था। उन्होंने "कौशेय" का उल्लेख समकालीन लोगों के वस्त्रों के संदर्भ में किया। वाटर्स थॉमस (1904) ने उल्लेख किया है कि ह्वेनसांग ने पुरुषों और महिलाओं के लिए बिना सिले हुए वस्त्रों का वर्णन किया। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के भारतीय ग्रंथों में भी रेशम बुनाई का उल्लेख मिलता है जो यह दर्शाता है कि प्राचीन काल में यह कला कितनी सामान्य थी।

2. शल्य चिकित्सा और चिकित्सा क्षेत्र में रेशम का उल्लेख : सुश्रुत संहिता जो चिकित्सा और शल्य चिकित्सा पर आधारित एक प्राचीन संस्कृत ग्रंथ है, में कौशेय को "पट्टियों के लिए प्रयुक्त वस्त्र" के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह आज भी प्रासंगिक है क्योंकि रेशम में कई जैव-चिकित्सीय गुण पाए जाते हैं। कोश और कौशेय का उल्लेख भारत के कई संस्कृत ग्रंथों में हुआ है, जैसे – शतपथ ब्राह्मण, सुश्रुत संहिता, कौटिल्य का अर्थशास्त्र वशिष्ठ धर्मसूत्र, विष्णु धर्मसूत्र, पाणिनि के सूत्रपाठ और गणपाठ तथा वैखानस धर्मसूत्र। यह तथ्य समय के साथ रेशम के बारे में उपलब्ध जानकारी को स्पष्ट करता है। इसी के साथ अमर कोश में "कौशेय" की एक विशेष किस्म का उल्लेख है जिसे संरक्षक माना गया है और उसे "धवलित या श्वेत कौशेय" कहा गया है। ईसा पूर्व 4वीं शताब्दी में प्राचीन व्याकरणाचार्य कात्यायन ने कौशेय को विशेष रूप से विकार के रूप में परिभाषित किया जो कोष का उत्पाद है (विकार: कोशाद्वम्) - अर्थात् रेशमी वस्त्र। यह इस तथ्य को इंगित करता है कि रेशम का उपयोग रोगों/विकारों के उपचार में प्राचीन काल से ही किया जाता रहा है। साथ ही यह भी उल्लेख है कि ये रेशमकीट पलाश के वृक्षों पर पाले जाते थे। इसके अलावा किट्सुत्रम्, कृमिनाग, पट्टसूत्र या पत्राण जैसे नाम संभवतः उन विभिन्न जंगली रेशम की किस्मों को संदर्भित करते हैं जो विभिन्न अपालकृत रेशमकीटों द्वारा अलग-अलग वृक्षों पर पाले जाने से प्राप्त होती थीं। इनसे विभिन्न गुणवत्ता और रंगों की रेशमी किस्में तैयार की जाती थीं।

3. तसर का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव और क्षेत्रीय महत्व : मुख्य रूप से आदिवासी और ग्रामीण समुदायों की महिलाएँ इस कला में निपुण रही हैं। वे कोसा से रेशम निकालने और उससे वस्त्र बुनने की जटिल प्रक्रियाओं में प्रशिक्षित रही हैं। यह परम्परा न केवल रोज़गार सृजन का माध्यम है बल्कि सांस्कृतिक धरोहर को भी संरक्षित करती है और महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण प्रदान करता है। वर्तमान में यह उद्योग देश भर में लगभग 3.5 लाख लोगों को आजीविका प्रदान करता है। यह परम्परा कौशल, आजीविका और संस्कृति के बीच के गहरे सम्बन्ध को दर्शाती है। तसर रेशम उत्पादन मुख्यतः छह प्रमुख क्षेत्रों में केन्द्रित है जिन्हें तसर क्षेत्र कहा जाता है। ये क्षेत्र हैं – मध्य प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, बिहार, पश्चिम बंगाल और असम। ये सभी क्षेत्र मिलकर भारत में तसर रेशम उत्पादन की रीढ़ की हड्डी बनाते हैं। भारत तसर रेशम का सबसे बड़ा उत्पादक है और इनमें झारखण्ड को इसका मुख्य केंद्र माना जाता है। कोल्हान क्षेत्र के सारंडा वन अपनी श्रेष्ठ कोसा गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध है और इसे डाबा इकोरेस का गृह प्रदेश कहा जाता है।

चित्र : नक्सल प्रभावित कोल्हान क्षेत्र में तसर कोसा उत्पादन का निरीक्षण करती के.त.अ. व प्र.सं. की टीम

तसर रेशम उत्पादन एक ग्रामीण कला है जो परम्परा में गहराई से जुड़ी हुई है। बिहार का भागलपुर, जहाँ 30,000 से अधिक रंगरेज़, कताई करने वाले और बुनकर रहते हैं, तसर और अन्य स्वदेशी रेशमी किस्मों का एक प्रमुख केंद्र है। छत्तीसगढ़ के चांपा की कोसा सिल्क, जो अपनी श्रेष्ठ गुणवत्ता, असमतल बनावट और चटख रंगों के लिए जानी जाती है, को भारत सरकार द्वारा 2011 में भौगोलिक संकेतक (GI) का दर्जा दिया गया। झारखण्ड राष्ट्रीय रेशम उत्पादन में लगभग 70% योगदान देता है जिसमें से लगभग 40% उत्पादन कोल्हान-सारंडा क्षेत्र से आता है। झारखण्ड अपनी तसर रेशम पालन में विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध है और देश में सर्वोत्तम तसर रेशम उत्पादन करता है। चक्रधरपुर जिला, पश्चिम सिंहभूम प्रखंड के कुरुजुली गाँव और इसके आस-पास के क्षेत्र उत्कृष्ट गुणवत्ता के बीज कोसा के लिए प्रसिद्ध हैं। तसर रेशम उद्योग गरीब लोगों को आय सृजन के रोजगार प्रदान करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. तसर रेशम उत्पादन और वन संरक्षण : तसर रेशमकीट कोसा का उत्पादन झारखण्ड राज्य के कोल्हान और दक्षिण छोटानागपुर प्रखंडों के वनों में रहने वाले आदिवासी समुदायों और स्थानीय निवासियों के लिए एक महत्वपूर्ण अतिरिक्त आय और आजीविका का स्रोत है। हालाँकि तेजी से बढ़ती जनसंख्या और विकासात्मक गतिविधियों के कारण वनों का क्षेत्र घटता जा रहा है। तसर खाद्य पौधों सहित पेड़ों की अंधाधुंध कटाई से रेशमकीट की आबादी में निरंतर गिरावट आई है जिससे कोसा संग्राहकों और उत्पादकों की आजीविका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। यह प्रवृत्ति खाद्य पौधों और कीटों की इकोरेस के नुकसान का कारण भी बनती है जिससे तसर रेशम उद्योग के विभिन्न चरणों में शामिल लोगों पर असर पड़ता

है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए प्राकृतिक वनों और आस-पास के गाँवों में खाद्य पौधों की संख्या बढ़ाने के उपाय किए जाने चाहिए ताकि जैविक तसर कोसा का उत्पादन बढ़ाया जा सके। जैव विविधता संरक्षण प्रयासों में स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार सृजन को प्राथमिकता देनी चाहिए जो वन संसाधनों पर निर्भर हैं ताकि वे संरक्षण पहलों में सक्रिय रूप से शामिल हो सकें। इस प्रकार तसर संस्कृति का वन संरक्षण प्रयासों से गहरा सम्बन्ध है जो सतत् आजीविका और पर्यावरण संरक्षण के बीच सहजीवी सम्बन्ध को रेखांकित करता है।

2. सम्बन्धित संस्थान : तसर रेशम के अध्ययन और उन्नति के लिए समर्पित एकमात्र संस्थान केन्द्रीय रेशम बोर्ड-केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची है। वर्ष 1964 में केन्द्रीय रेशम बोर्ड के अधीन स्थापित संस्थान का उद्देश्य भारत में उष्णकटिबंधीय और समशीतोष्ण तसर उद्योग को अनुसंधान और विकास सहायता प्रदान करना है। संस्थान के पास छह क्षेत्रीय रेशम पालन अनुसंधान केन्द्र (RSRS) , तीन अनुसंधान विस्तार केंद्र (REC) , एक P4 ब्रीडिंग स्टेशन और एक कच्चा माल बैंक का व्यापक नेटवर्क है। संस्थान का मिशन 2047 तक तसर रेशम उत्पादन को दोगुना करना और इसके साथ ही हितधारकों, विशेषकर ग्रामीण गरीबों और आदिवासी समुदायों की आय में वृद्धि करना है, जो तसर रेशम उद्योग में लगे हुए हैं। इसके अतिरिक्त गैर-सरकारी संगठन (NGO) प्रफेशनल असिस्टेंस फॉर डेवलपमेंट एक्शन (PRADAN) ने तसर रेशम कार्यक्रम की शुरुआत की है जिसका उद्देश्य हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर अनुसूचित जनजाति (ST) और अनुसूचित जाति (SC) के लोगों की आजीविका में सुधार करना है। यह पहल बिहार, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान और पश्चिम बंगाल में फैली हुई है और तसर रेशम पालन आधारित आजीविका को बढ़ावा देने पर केन्द्रित है। प्रदान का तसर रेशम कार्यक्रम चार चरणों में संचालित होता है। पहला चरण प्रयोग और मॉडल निर्माण पर केंद्रित है जिसमें तसर पालन की व्यवहार्यता और बेहतर तकनीकी मॉडल विकसित किए जाते हैं। दूसरा चरण इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए तसर रेशम पालन को सतत् आजीविका के लिए मुख्य धारा की गतिविधि बनाने पर जोर देता है। तीसरे चरण में स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (SGSY) के अंतर्गत इस गतिविधि का विस्तार किया जाता है ताकि अधिक-से-अधिक ग्रामीण परिवारों को इससे जोड़ा जा सके। अंततः चौथा चरण महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना के तहत तसर पालन के विस्तार और सुदृढ़ीकरण पर केन्द्रित है जिससे महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत हो सके और वे ग्रामीण विकास की मुख्यधारा में सक्रिय भूमिका निभा सकें ।

निष्कर्ष : तसर संस्कृति का कालक्रम और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव इसकी ऐतिहासिक महत्ता और आर्थिक योगदान को स्पष्ट करता है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक तसर संस्कृति न केवल आजीविका का साधन रही है बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक परम्पराओं और पर्यावरण संरक्षण का अभिन्न हिस्सा बन गई है। यह उद्योग श्रम-प्रधान होने के कारण गरीबी उन्मूलन में सहायक है और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करता है। तसर पालन का उत्पादन चक्र छोटा होता है (लगभग 3-4 महीने) जिससे महिलाओं और किसानों को कम समय में अधिक आय प्राप्त होती है, वह भी न्यूनतम् निवेश में। इस व्यवसाय में महिलाओं की भागीदारी महत्वपूर्ण है जिससे उनका आर्थिक सशक्तिकरण होता है और पारम्परिक ज्ञान का संरक्षण होता है। आदिवासी समुदायों के लिए यह आजीविका आदर्श है क्योंकि इनके वन क्षेत्रों में तसर के लिए आवश्यक पेड़ जैसे अर्जुन, आसन और साल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। तसर पालन न केवल आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है बल्कि यह पर्यावरण-अनुकूल भी है। यह प्राकृतिक वनों के संरक्षण, जैव विविधता, मिट्टी और जल संरक्षण को बढ़ावा देता है तथा कार्बन अवशोषण में सहायक है। इस प्रकार तसर संवर्धन न केवल कोसा उत्पादन तक सीमित है बल्कि जैव विविधता संरक्षण और पारिस्थितिक संतुलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिससे यह आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है।

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

तसर रेशम कीटपालन द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में सतत् आजीविका संवर्धन : एक समीक्षा

श्रीनाथ वाई.एस.*, दिव्या राजावत, जया मिंज, हरेन्द्र यादव एवं एन.बी. चौधरी

परिचय : भारत विविधताओं की भूमि है, जहाँ विभिन्न जातियों, धर्मों, संस्कृतियों और परम्पराओं के लोग मिलकर एक जीवंत समाज का निर्माण करते हैं। इन विविध समुदायों में आदिवासी लोगों, जिन्हें आदिवासी या जनजाति कहा जाता है, का विशेष स्थान है। ये मूल निवासी समुदाय प्राचीन काल से प्रकृति के साथ संतुलन में जीवन-यापन कर रहे हैं और अपनी अनूठी संस्कृति, परम्पराओं, भाषाओं और विश्वासों को संरक्षित किए हुए हैं। आदिवासी संस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक तसर रेशम उत्पादन है। यह केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं है बल्कि आदिवासी धरोहर, हस्तकला और पर्यावरण के साथ टिकाऊ सम्बन्ध का भी प्रतीक है। तसर संवर्धन आदिवासी समुदायों के सामाजिक-आर्थिक विकास और उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तसर रेशम जिसे तसर सिल्क खेती भी कहा जाता है, भारत में आदिवासी लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में सहायक है। यह केवल एक पारम्परिक गतिविधि नहीं है बल्कि कई आदिवासी समुदायों के लिए आजीविका, संस्कृति और गर्व का स्रोत भी है। तसर रेशम मुख्य रूप से झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओड़िशा, महाराष्ट्र और पश्चिम बंगाल के वन क्षेत्रों में उत्पादित होता है, जहाँ अनेक आदिवासी समुदाय निवास करते हैं। तसर रेशम एक प्रकार का जंगली रेशम है जो अर्जुन और आसन जैसे पेड़ों की पत्तियों पर पाले जाने वाले रेशम कीड़े से प्राप्त होता है। मलबरी रेशम की नर्म और चमकदार बनावट के विपरीत तसर रेशम का रंग सुनहरा-भूरा और मजबूत होता है। यह अधिक साँव लेने योग्य और पर्यावरण-अनुकूल होता है जिससे यह भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में लोकप्रिय है। भारत में तसर रेशम का अधिकांश उत्पादन आदिवासी समुदायों द्वारा किया जाता है जो पीढ़ियों से इस कला का अभ्यास कर रहे हैं।

तसर रेशम उत्पादन प्रक्रिया : तसर रेशम का उत्पादन एक सावधानीपूर्वक प्रक्रिया है जिसमें पारम्परिक प्रथाओं में निहित कई महत्वपूर्ण चरण शामिल हैं। यह सिल्कवर्म के पालन-पोषण से शुरू होता है जिन्हें मुख्यतः वन क्षेत्रों में पाला जाता है और मुख्य रूप से अर्जुन, आसन और साल के पेड़ों की पत्तियों को खिलाया जाता है। यह प्राकृतिक आहार न केवल सिल्कवर्म के स्वास्थ्य के लिए सहायक है बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि पूरी उत्पादन प्रक्रिया पर्यावरण-अनुकूल बनी रहे। जब सिल्कवर्म अपना जीवन चक्र पूरा कर लेते हैं और अपना कोसा बनाते हैं तो इन्हें आदिवासी समुदाय सावधानीपूर्वक एकत्र करते हैं, जो इस कला के लम्बे समय से संरक्षक रहे हैं। इसके बाद सिल्क निकालने की प्रक्रिया होती है जिसमें कोसा को धीरे-धीरे उबालकर रेशम की महीन धागों को खोला जाता है ताकि उनकी प्राकृतिक चमक और मजबूती बनी रहे। अंततः इन नाजुक रेशमी धागों को काता और बुनकर सुंदर वत्रों में बदला जाता है जिसे मुख्य रूप से आदिवासी महिलाएँ पारम्परिक हथकरघों का उपयोग करके करती हैं। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया न केवल उच्च गुणवत्ता वाला तसर रेशम उत्पन्न करती है बल्कि इन समुदायों की संस्कृतिक विरासत और आजीविका को भी संरक्षित करती है।

संस्कृति और प्रकृति का संरक्षण : तसर रेशम केवल एक व्यावसायिक उत्पाद नहीं है वल्कि यह एक जीवंत परम्परा है जो आदिवासी जीवन की संस्कृतिक बुनावट में गहराई से निहित है। पीढ़ियों से मूल निवासी समुदायों ने सिल्कवर्म पालन, कोसा प्रक्रिया और हथकरघा बुनाई का जटिल ज्ञान मौखिक परम्पराओं और व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से अगली पीढ़ी तक पहुँचाया है। तसर खेती की इस प्रथा को जारी रखते हुए आदिवासी कारीगर न केवल अपनी आजीविका बनाए रखते हैं बल्कि अपनी संस्कृतिक पहचान, पूर्वजों का ज्ञान और कारीगरी की विरासत की रक्षा भी करते हैं। इस निरंतरता से समुदाय में गर्व और अपनत्व की भावना मजबूत होती है। इतना ही महत्वपूर्ण है तसर संवर्धन की पर्यावरण संरक्षण में भूमिका। एक वन-आधारित गतिविधि होने के नाते यह मुख्य रूप से अर्जुन और आसन जैसे स्थानीय पेड़ों के स्वास्थ्य पर निर्भर करती है जो सिल्कवर्म के मुख्य आहार स्रोत हैं। इन पेड़ों की रक्षा करने की आवश्यकता स्वाभाविक रूप से वन पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा को बढ़ावा देती है। इस प्रकार तसर खेती मानव और प्रकृति के बीच सहजीवी सम्बन्ध को पोषित करती है जहाँ आर्थिक आजीविका और पारिस्थितिक संरक्षण साथ-साथ चलते हैं। इस टिकाऊ प्रथा के माध्यम से आदिवासी समुदाय जैव विविधता के प्रति गहरी सराहना विकसित करते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनकी आजीविका पर्यावरणीय हानि के जोखिम पर न हो। इस तरह तसर संवर्धन यह दर्शाती है कि पारम्परिक प्रथाएँ संस्कृतिक संरक्षण और पर्यावरणीय प्रबंधन को सामंजस्यपूर्ण रूप से जोड़ सकती हैं।

चित्र-1 : आदिवासी समुदाय सुनहरे तसर कोसा का संग्रह और कटाई करते हुए

तालिका-1 : तसर संस्कृति के आर्थिक-सामाजिक संकेतक

राज्य/क्षेत्र	अनुमानित तसर उत्पादन (कोसा टन प्रति वर्ष)	जनजातीय परिवारों की संख्या जो तसर से जुड़े हैं	औसत वार्षिक आय (एक परिवार के (लिए तसर से	महिलाओं की भागीदारी (%)
झारखण्ड	1,200 टन	20,000 परिवार	₹ 50,000 ₹70,000	लगभग 6065%
छत्तीसगढ़	900 टन	15,000 परिवार	₹ 40,000 ₹60,000	लगभग 5560%
पश्चिम बंगाल	800 टन	25,000 परिवार	₹ 45,000 ₹65,000	लगभग 6070%
ओडिशा	700 टन	10,000 परिवार	₹ 35,000 ₹55,000	लगभग 5060%
भारत कुल	4,500 -5,000 टन	80,000-1,00,000 परिवार औसतन	₹45,000-₹60,000	लगभग 60% औसतन

तसर रेशम पालन की चुनौतियाँ : संस्कृतिक महत्व और व्यापक आर्थिक संभावनाओं के बावजूद तसर रेशम कीटपालन कई गम्भीर चुनौतियों का सामना करता है जो इसके विकास और दीर्घकालिक स्थिरता में बाधा डालती हैं। एक प्रमुख समस्या अप्रभावी विपणन है जहाँ आदिवासी उत्पादक संगठित और उच्च-मूल्य वाले बाजारों तक सीमित पहुँच के कारण मध्यस्थों पर अत्यधिक निर्भर होते हैं। इसके परिणामस्वरूप उन्हें अक्सर अपने कोसा और रेशम उत्पादों को कम मूल्य पर बेचना पड़ता है जिससे उनकी आय कम होती है और बड़े पैमाने पर अपनाने की प्रोत्साहन घटती है। ब्रांडिंग की कमी, अपर्याप्त प्रचार और मजबूत उत्पादक-उपभोक्ता सम्बन्धों का अभाव तसर रेशम की दृश्यता और वैश्विक मान्यता को और सीमित करता है। व्यापक स्तर पर वनों की कटाई, पर्यावरणीय क्षरण और वन संसाधनों का अधिक दोहन इन महत्वपूर्ण भोज्य पौधों की उपलब्धता को खतरे में डालता है। इससे न केवल कीटपालन प्रभावित होता है बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए पारिस्थितिक असंतुलन भी पैदा होता है। इसके अलावा यह उद्योग जलवायु सम्बन्धी जोखिमों जैसे लम्बी सूखाड़, असंगत वर्षा और मौसमी बाढ़ के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है। ये अप्रत्याशित जलवायु परिवर्तन सीधे सिल्कवर्म के जीवित रहने, पत्तियों की उपलब्धता और समग्र उत्पादकता को प्रभावित करते हैं जिससे अक्सर फसल हानि और आदिवासी किसानों के लिए वित्तीय कठिनाई उत्पन्न होती है जो अपनी आजीविका के लिए रेशम कीटपालन पर निर्भर हैं।

तसर संवर्धन में चुनौतियों को पार करने की रणनीतियाँ : इन महत्वपूर्ण समस्याओं को दूर करने के लिए व्यापक और टिकाऊ उपाय आवश्यक हैं। विपणन के संदर्भ में ऐसी समेकित रणनीतियाँ विकसित करनी होगी जो उत्पादकों को सीधे उपभोक्ताओं से जोड़ें और शोषक मध्यस्थों को समाप्त करें। प्रमाणन गुणवत्ता सुनिश्चित करना और प्रचार अभियान के माध्यम से तसर रेशम की मजबूत ब्रांड पहचान बनाने से इसके बाजार मूल्य को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। सहकारी समितियों का निर्माण, व्यापार मेलों का आयोजन और आधुनिक इ-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग उत्पादकों को सशक्त बनाएगा और उन्हें बेहतर सौदेबाजी की शक्ति

प्रदान करेगा। संसाधन निर्भरता की समस्या से निपटने के लिए सतत् कटाई प्रथाओं और समुदाय-प्रेरित पुनर्वानिकी कार्यक्रमों को बढ़ावा देना आवश्यक है। साथ ही अर्जुन और आसन जैसे पेड़ों की बड़े पैमाने पर रोपाई को प्रोत्साहित करने वाले एग्रोफॉरेस्ट्री सिस्टम अपनाए जाने चाहिए। ये उपाय न केवल भोज्य पौधों की स्थिर आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे बल्कि पारिस्थितिक पुनर्स्थापन में भी योगदान देंगे। अंत में जलवायु जोखिमों से निपटने के लिए आपदा तैयारी योजनाओं, पूर्व चेतावनी प्रणालियों और सिल्कवर्म पालन कर्ताओं के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए फसल बीमा योजनाओं के माध्यम से जलवायु लचीलापन विकसित करना आवश्यक है। इस प्रकार के कदम अस्थिरता को कम करेंगे, आजीविकाओं की सुरक्षा करेंगे और उत्पादन के लिए अधिक स्थिर वातावरण सुनिश्चित करेंगे।

सरकारी पहल : तसर रेशम पालन के सामाजिक-आर्थिक महत्व और आदिवासी सशक्तिकरण की आवश्यकता को मान्यता देते हुए भारत सरकार ने तसर रेशम पालन को बढ़ावा देने और आदिवासी समुदायों की समग्र भलाई में सुधार के लिए कई लक्षित पहलें शुरू की हैं। इनमें से एक पहल है राष्ट्रीय आदिवासी विकास कार्यक्रम (NTDPC), जो आदिवासी क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचा, स्वास्थ्य, शिक्षा और सतत् आजीविका सृजन पर ध्यान केन्द्रित करके समग्र विकास को बढ़ावा देती है। इसके पूरक रूप में तसर रेशम विकास कार्यक्रम है जो कौशल विकास प्रशिक्षण, आधुनिक तकनीक तक पहुँच और विपणन समर्थन प्रदान करता है जिससे आदिवासी रेशम उत्पादकों की उत्पादकता और लाभ प्रदाता बढ़ती है। वन अधिकार अधिनियम (FRA), 2006 भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह आदिवासी समुदायों को वन भूमि का कानूनी स्वामित्व प्रदान करता है। यह कानून उन्हें अपनी पारम्परिक निवास स्थलों का सतत् प्रबंधन करने और वन-आधारित आजीविकाओं जैसे तसर पालन को जारी रखने में सक्षम बनाता है। इसके अतिरिक्त आदिवासी उप-योजना (TSP) आदिवासी जनसंख्या के विकास के लिए समर्पित बजटीय आबंटन सुनिश्चित करती है जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण बुनियादी ढाँचा और आर्थिक विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है। कुल मिलाकर ये पहलें तसर रेशम पालन मूल्य श्रृंखला को सशक्त बनाने, आदिवासी क्षेत्रों में जीवन स्तर सुधारने और पारम्परिक ज्ञान को आधुनिक समर्थन प्रणालियों के साथ जोड़कर समावेशी विकास को बढ़ावा देने का उद्देश्य रखती हैं।

चित्र-2 : केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची के निदेशक और वैज्ञानिकों की तसर किसानों के साथ बातचीत

*वैज्ञानिक-बी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

तसर रेशमकीट के स्वास्थ्य पर पोषक तत्वों की भूमिका और रोग से बचाव में इनका योगदान

अरुणा रानी*, शांताकार गिरि, जय प्रकाश पाण्डेय, दिव्या राजावत, आई.जी. प्रभु एवं एन.बी. चौधरी

परिचय : तसर रेशमकीट एक ऐसा कीट है जो प्राकृतिक रेशम का उत्पादन करता है और भारत के वनवासी क्षेत्रों में पारम्परिक विधियों से इसका पालन किया जाता है। यह कीट मुख्यतः झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में पाया जाता है। तसर रेशम अपनी खुरदरी बनावट, प्राकृतिक चमक और मजबूती के कारण वैश्विक स्तर पर भी बहुत लोकप्रिय है। यह कीट टर्मिनेलिया व शोरिया प्रजाति के वृक्षों की पत्तियों पर निर्भर रहता है जो इसके पोषण का प्रमुख स्रोत होते हैं। तसर कीटपालन न केवल एक आर्थिक गतिविधि है बल्कि यह हजारों ग्रामीण व आदिवासी परिवारों की आजीविका का आधार भी है। अतः इन कीटों के स्वास्थ्य की देखभाल और रोग नियंत्रण अत्यंत आवश्यक हो जाता है क्योंकि किसी भी प्रकार की बीमारी या पोषण की कमी से उनकी उत्पादकता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। सभी जैविक प्राणियों की तरह, तसर रेशमकीट को भी अपने जीवन चक्र के प्रत्येक चरण-अंडा, लार्वा, प्यूपा और वयस्क में संतुलित पोषण की आवश्यकता होती है। ये पोषक तत्व शरीर की कोशिकीय वृद्धि, उत्तक निर्माण तथा रोग प्रतिरोधक प्रणाली को सक्रिय बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिससे कीट रोगजनकों के संक्रमण से सुरक्षित रह सके। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, कीट रोगों में वृद्धि और खाद्य वृक्षों की गुणवत्ता में गिरावट जैसे कारकों के कारण तसर रेशमकीट पालन को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों का समाधान पोषण आधारित प्रबंधन द्वारा किया जा सकता है। इसलिए तसर रेशमकीट के स्वास्थ्य व रोग प्रतिरोधक क्षमता को बनाए रखने हेतु संतुलित एवं समृद्ध पोषण की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

तसर रेशमकीट के पोषण स्रोत : तसर रेशमकीट के पोषण का प्रमुख स्रोत उसके द्वारा खाई जाने वाली पत्तियाँ होती हैं। तसर रेशमकीट प्राकृतिक रूप से टर्मिनेलिया व शोरिया परिवार के वृक्षों पर निर्भर होते हैं। ये वृक्ष तसर रेशमकीट की जीवन शैली और विकास के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति करते हैं। पत्तियाँ कीट के शरीर के विकास, रेशम निर्माण और रोग प्रतिरोधक क्षमता को प्रभावित करती हैं। इसलिए तसर रेशमकीट के पोषण स्रोत को समझना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि इसके पालन के दौरान कीटों को आवश्यक पोषण मिल सके (तालिका-1)। तसर रेशमकीट मुख्य रूप से तीन प्रकार के वृक्षों की पत्तियाँ खाता है। जैसे टर्मिनेलिया प्रजाति जिसमें प्रमुख वृक्ष अर्जुन और आसन हैं। इन वृक्षों की पत्तियाँ पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और फाइबर की मात्रा उस स्तर पर पायी जाती है जो तसर रेशमकीट के बढ़ोत्तरी और उनके स्वास्थ्य के लिए आवश्यक होती है। यह तसर रेशमकीट के विकास के लिए आदर्श पत्तियाँ हैं। अनुकूलतम् प्रोटीन (25-30%) और फाइबर की मात्रा के कारण

यह कीट के शरीर के निर्माण और कोसा के आकार को बढ़ाने में सहायक होती हैं। शोरिया प्रजाति के प्रमुख वृक्ष जिसे हम साल के नाम से जानते हैं, उसकी पत्तियाँ प्रोटीन और खनिजों से समृद्ध होती हैं। हालाँकि इनकी पत्तियाँ तुलनात्मक रूप से अधिक फाइबर युक्त होती हैं जो कीटों के पाचन को धीमा कर सकती हैं परन्तु साल वृक्षों के उच्चतम भाग की डालियों की पत्तियों में उच्च प्रोटीन और खनिज, पदार्थ पाये जाने के कारण साल की पत्तियाँ तसर रेशमकीट की वृद्धि में सहायक होती हैं और इनसे उत्पादित कोसा की बनावट और गुणवत्ता तुलनात्मक रूप से मजबूत और गठीला होता है। तसर की प्रायः सभी पारि-प्रजातियाँ मुख्यतः साल वृक्षों की पत्तियाँ खाकर ही अपना जीवन चक्र पूरा करती हैं। इसलिए साल वृक्ष को तसर रेशमकीट की उत्पत्ति का कारक भी माना जाता है।

तालिका -1 : तसर रेशमकीट की पत्तियों में प्रमुख पोषक तत्व एवं उनके गुण

क्र. सं.	पोषक तत्व	महत्व
1.	प्रोटीन	✓ प्रोटीन तसर रेशमकीट के लिए एक आवश्यक पोषक तत्व है। ✓ यह उसके शरीर के निर्माण, कोशिका विभाजन और रेशम के निर्माण में सहायक होता है। ✓ विशेष रूप से पत्तियों में मौजूद फाइब्रॉइन और सेरीसिन प्रोटीन तसर रेशमकीट के कोसा निर्माण में मुख्य भूमिका निभाते हैं। ✓ टर्मिनेलिया और शोरिया प्रजाति के वृक्षों की पत्तियाँ प्रोटीन की आपूर्ति करती हैं।
2.	कार्बोहाइड्रेट	✓ कार्बोहाइड्रेट तसर रेशमकीट के लिए ऊर्जा का प्रमुख स्रोत होते हैं। ✓ पत्तियों में मौजूद शर्करा और स्टार्च की मात्रा कीट के शरीर के सामान्य कार्यों, जैसे रेंगना, पाचन और विकास के लिए आवश्यक होती है। ✓ शोरिया और टर्मिनेलिया प्रजाति के वृक्षों की पत्तियाँ कार्बोहाइड्रेट से भरपूर होती हैं।
3.	वसा	✓ वसा कोशिकाओं और उत्तकों के निर्माण में सहायक होते हैं। ✓ ये ऊर्जा का भंडारण भी करते हैं जो विशेष रूप से प्यूपा अवस्था में महत्वपूर्ण होता है, जब कीट ऊर्जा का उपयोग कम करता है। ✓ साथ ही हार्मोन संतुलन में इसकी भूमिका देखी गई है। ✓ शोरिया प्रजाति की पत्तियाँ वसा की एक अच्छी स्रोत हो सकती हैं हालाँकि इनकी मात्रा कम होती है।
4.	खनिज	✓ खनिज तत्व तसर रेशमकीट के शरीर में कई जैविक प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक होते हैं। ✓ इनका उपयोग कोशिका संरचना, मांसपेशियों की कार्य क्षमता और प्रतिरक्षा प्रणाली के संचालन में होता है। ✓ कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम और फास्फोरस शोरिया और टर्मिनेलिया वृक्षों की पत्तियों में पाए जाते हैं। ✓ खनिजों की कमी से निर्मोचन असमान होता है। ✓ इम्यून सिस्टम कमजोर हो जाता है। कैल्शियम और फॉस्फोरस लार्वा की त्वचा और आंतरिक अंगों को मजबूती देते हैं। ✓ साथ ही मैग्नीशियम, जिंक, कॉपर, कोशिकाओं में एंजाइम क्रियाओं के लिए आवश्यक है। ✓ ट्रेस एलिमेंट्स जैसे जिंक, प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को तेज करता है। ✓ कॉपर और सिलेनियम, सेल की मरम्मत में सहायक होते हैं। ✓ इनकी कमी से कोसा की दुर्बलता एवं लार्वा विकृति देखा गया है और मृत्यु दर बढ़ सकती है।
5.	विटामिन	✓ विटामिन कीटों की पाचन क्रिया, कोशिका वृद्धि और प्रतिरक्षा प्रणाली को नियंत्रित करने में सहायक होते हैं। ✓ विटामिन A, C और B समूह के विटामिन विशेष रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। ✓ पत्तियों में इन विटामिन्स की उपस्थिति सुनिश्चित करती है कि कीट संक्रमण से सुरक्षित रहे और उसकी वृद्धि सामान्य रूप से हो सके। ✓ विटामिन B1, B2, B6 भोजन को ऊर्जा में बदलते हैं एवं विटामिन C और E लार्वा की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। ✓ विटामिन की कमी से लार्वा की मृत्यु दर बढ़ जाती है। ✓ खासकर वाइरोसिस जैसी बीमारी का संक्रमण जल्दी होता है।

तसर रेशमकीट की वृद्धि और उत्पादकता पर पोषण स्रोतों का प्रभाव : तसर रेशमकीट के लिए उच्च गुणवत्ता वाली पत्तियाँ उसके विकास को बढ़ावा देती हैं। प्रोटीन और कार्बोहाइड्रेट से भरपूर पत्तियाँ कीट को तेजी से बढ़ने और बड़े आकार के कोसा बनाने में मदद करती हैं (चित्र-1)। कोसा गुणवत्ता पत्तियों में मौजूद प्रोटीन, खनिज और वसा की सही मात्रा कीट के शरीर के निर्माण और कोसा के आकार व गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करती है। बेहतर पोषण वाले कीट अधिक मजबूत और भारी कोसा उत्पन्न करते हैं जिससे रेशम की गुणवत्ता भी उच्च होती है (तालिका-2)। यदि पत्तियों में पोषक तत्वों की कमी होती है तो तसर रेशमकीट शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं जिससे उनकी प्रतिरक्षा क्षमता कम हो जाती है और वे आसानी से रोगों का शिकार हो सकते हैं।

चित्र-1 : (क) तसर रेशमकीट के पालन हेतु भोज्य अर्जुन पौधों की देखभाल (ख) तसर रेशमकीट की स्वस्थ प्रथम इन्स्टार (ग) तसर रेशमकीट की स्वस्थ पंचम इन्स्टार (घ) गुणवता वाले कोसा का उत्पादन।

तालिका-2 : पोषण और रेशम उत्पादन का सीधा सम्बन्ध में।

क्र. सं.	पोषक तत्व	भूमिका	परिणाम यदि मात्रा पर्याप्त हो	परिणाम यदि मात्रा में कमी हो
1.	प्रोटीन	फाइ-ब्रॉइन निर्माण	मोटा और चमकदार कोसा	कमजोर कोसा
2.	कार्बोहाइ-ड्रेट	ऊर्जा	तेजी से वृद्धि	सुस्त विकास
3.	विटामिन्स	रोग प्रति-रोध	स्वस्थ लार्वा	संक्रमण का खतरा
4.	मिनरल्स	सेल क्रिया	अच्छी ग्रोथ	असमान निर्मोचन
5.	लिपिड्स	हार्मोन संतुलन	मजबूत कोशिकाएँ	बीमारी का खतरा

निष्कर्ष : तसर रेशमकीट का जीवन-चक्र, विकास और उत्पादन क्षमता पूर्णतः इस बात पर निर्भर करती है कि उसे जीवन के विभिन्न चरणों में कैसा पोषण मिल रहा है। यह पोषण मुख्य रूप से उसकी खुराक यानी कि अर्जुन, आसन, साल जैसे वृक्षों की पत्तियों से प्राप्त होता है। इन पत्तियों में उपस्थित प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, खनिज तत्व और विटामिन सभी तसर रेशमकीट के शरीर की बुनियादी जैविक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। इन पोषक तत्वों की पर्याप्त और संतुलित आपूर्ति से लार्वा की तेजी से वृद्धि होती है, कोसा का आकार और गुणवत्ता बेहतर होता है और कीट की रोगों से लड़ने की क्षमता (प्रतिरक्षा प्रणाली) मजबूत बनती है। इसके विपरीत यदि पौष्टिक तत्वों की कमी होती है या खाद्य वृक्ष की गुणवत्ता घटिया होती है तो कीट की विकास दर धीमी हो जाती है, कोसा हल्के व कमजोर बनते हैं और कीट संक्रमण या रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाता है। इसलिए यह स्पष्ट है कि पोषण केवल शरीर निर्माण तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह तसर कीट की सम्पूर्ण जीवन गुणवत्ता, उसकी उत्पादकता, जीवन काल, रोग प्रतिरोधक क्षमता और आर्थिक लाभ को भी सीधे प्रभावित करता है। तसर पालन को लाभकारी और सतत् बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उच्च गुणवत्ता वाली पत्तियाँ प्रदान की जाएँ, खाद्य वृक्षों का वैज्ञानिक चयन और समयानुसार देखभाल की जाए तथा जैविक पोषण पूरकों और उचित वातावरण के माध्यम से कीट के पोषण को सुदृढ़ किया जाए। इस प्रकार पोषण प्रबंधन के प्रति सजगता न केवल तसर कीट के स्वास्थ्य की रक्षा करती है बल्कि ग्रामीण आजीविका, वन आधारित अर्थव्यवस्था और स्थायी रेशम उत्पादन प्रणाली को भी मजबूती प्रदान करती है।

*जे.आर.एफ., के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

तसर रेशमकीट में वाइरोसिस का प्रकोप और उसका आर्थिक प्रभाव

जया मिंज*, श्रीनाथ वाई.एस., दिव्या राजावत, हरेन्द्र यादव एवं एन.बी. चौधरी

परिचय : तसर रेशम जिसे *एन्थीरिया माइलिट्टा* नामक उष्णकटिबंधीय रेशमकीट द्वारा उत्पादित किया जाता है, अपने समृद्ध बनावट, प्राकृतिक सुनहरी चमक और पर्यावरण अनुकूल उत्पादन विधियों के कारण भारत में सबसे मूल्यवान रेशम किस्मों में से एक है। पारम्परिक तसर पालन मुख्यतः झारखण्ड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र के वन क्षेत्रों में आदिवासी और ग्रामीण समुदायों द्वारा किया जाता है और यह ग्रामीण रोजगार व वन-आधारित आजीविका में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है लेकिन इस क्षेत्र की स्थिरता और लाभ प्रदाता को रेशमकीटों में होने वाली बीमारियाँ, विशेष रूप से वाइरोसिस-एक वायरल संक्रमण है जो लार्वा स्वास्थ्य और कोसा उपज पर गम्भीर प्रभाव डालता है। तसर कीटों को प्रभावित करने वाले विभिन्न रोगों में वाइरोसिस ने सबसे अधिक विनाशकारी रूप धारण कर लिया है क्योंकि यह अक्सर बड़े पैमाने पर फसल हानियों का कारण बनता है। वाइरोसिस के कारणों, लक्षणों और प्रभाव को समझना तसर पालनकारों की आजीविका की रक्षा और इस मूल्यवान रेशम की निरंतर उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : साइटोप्लाज़्मिक पॉलीहैड्रोसिस वायरस (सी.पी.वी.) की खोज और शोध का इतिहास सन् 1934 में प्रारम्भ हुआ, जब जापानी वैज्ञानिक एन. इशिमोरी ने बॉम्बिक्स मोरी में एक ऐसे रोग का वर्णन किया जिसमें मिडगट (मध्य आंत्र) की कोशिकाओं के साइटोप्लाज़्म में प्रोटीन आधारित समावेशन कण बनते हैं। इस खोज ने सी.पी.वी. को अन्य कीट वायरसों जैसे न्यूक्लियर पॉलीहैड्रोसिस वायरस से अलग पहचान दिलाई। 1950 के दशक में के. एम. स्मिथ और वाइकॉफ ने सी.पी.वी. को उसकी विशिष्ट पोलीहाईड्रा संरचना के आधार पर पृथक्क किया। इसके बाद 1964 में हयाशी और कावासे ने बताया कि सी.पी.वी. का जीनोम डबल-स्ट्रैंडेड से बना होता है जो डी.एन.ए. आधारित कीट वायरसों से भिन्न है। सन् 1969 में यह स्पष्ट हुआ कि सी.पी.वी. का जीनोम 10 विभाजित द्वि-सूत्री राइबोन्यूक्लिक अम्ल से मिलकर बना है जिसके कारण इसे रिओविरिडी परिवार में सम्मिलित किया गया। 1970 के दशक में सी.पी.वी. की प्रतिकृति और लिप्यांतरण से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त हुईं जिनमें वायरल आरएनए पोलीमरेज़ की क्रियाशीलता का पता चला। सन् 1991 में अंतर्राष्ट्रीय विषाणु वर्गीकरण समिति ने सी.पी.वी. को रिओविरिडी परिवार के अंतर्गत साइपोवायरस वंश में औपचारिक रूप से वर्गीकृत किया। इसके पश्चात् 1990 के दशक में इलेक्ट्रोफोरेसिस तकनीकों की सहायता से 20 से अधिक सी.पी.वी. प्रजातियों की पहचान उनके जीनोमिक खंडों के प्रवासन प्रतिरूप के आधार पर की गई। सन् 2000 के बाद जीनोम अनुक्रमण और क्रायो-इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी के माध्यम से सी.पी.वी. की संरचना और विकास की समझ और गहन हुई। इन अध्ययनों से ज्ञात हुआ कि सी.पी.वी. की एकल-स्तरीय कैपसिड संरचना होती है तथा इसके पॉलीहैड्रा क्रिस्टलीय ढाँचे का अध्ययन जैव प्रौद्योगिकी और पुनरुत्थान चिकित्सा के संभावित अनुप्रयोगों हेतु किया जा रहा है। विशेष रूप से सी.पी.वी. तसर रेशमकीट को संक्रमित करता है जिसके

परिणामस्वरूप कोसा उत्पादन में भारी कमी आती है। फलस्वरूप सी.पी.वी. उष्णकटिबंधीय रेशम पालन में एक गम्भीर समस्या बन गया है। इसके प्रबंधन की रणनीतियों में बेहतर पालन स्वच्छता, रोग की शीघ्र पहचान तथा संभावित एंटीवायरल पदार्थों के विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

वाइरोसिस तसर कीटों में संरचना, जीनोम, लक्षण और संचरण :

1. वायरस संरचना : साइटोप्लाज़्मिक पॉलीहैड्रोसिस वायरस या साइपोवायरस रिओविरिडी परिवार से सम्बन्धित विषाणु हैं। ये बिना आवरण वाले बीस मुखी (आइकोसाहेड्रल) कैपसिड संरचना वाले विषाणु होते हैं। इनकी कैपसिड सामान्यतः 60 से 70 नैनोमीटर व्यास की होती है और यह अन्य रिओविरिडी परिवार के विषाणुओं की तुलना में अपेक्षाकृत सरल होती है। सी.पी.वी. की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि इनकी कैपसिड के बीसमुखीय ढाँचे के पाँच गुना अक्षों पर बारह मीनार जैसी उभार संरचनाएँ होती हैं जो संदेशवाहक आरएनए के संश्लेषण तथा उसके सिर पर टोपी जैसे रासायनिक समूह (कैपिंग) लगाने की प्रक्रिया में भाग लेती हैं। कैपसिड कई संरचनात्मक प्रोटीनों से मिलकर बनी होती है जिनमें प्रमुख हैं - कैपसिड शेल प्रोटीन, मीनार प्रोटीन तथा क्लैम्प प्रोटीन। सी.पी.वी. की एक अनूठी विशेषता यह भी है कि यह बड़े क्रिस्टलीय आवरण-पिंड जिन्हें पॉलीहैड्रा कहा जाता है, बनाते हैं। ये पॉलीहैड्रा परिपक्व विषाणु कणों को पर्यावरणीय क्षरण से सुरक्षा प्रदान करते हैं और संक्रमण के प्रसार को सुगम बनाते हैं।

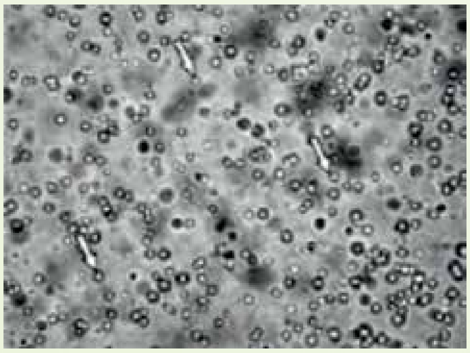

चित्र-1 : संक्रमित तीसरे अवस्था के लार्वा के मध्यम आतड़ से अलग किया गया साइटोप्लाज़्मिक पॉलीहेड्रोसिस वायरस।

2. वायरल जीनोम : सी.पी.वी. का जीनोम रैखिक द्वि-सूत्री राइबोन्यूक्लिक अम्ल से बना होता है और खंडित संरचना वाला होता है। अधिकांश प्रजातियों में 10 अलग-अलग जीनोमिक खंड पाए जाते हैं जबकि कुछ प्रजातियों में यह संख्या 11 तक हो सकती है। ये खंड लगभग 1 से 4.2 किलोबेस युग्म लम्बे होते हैं और कुल जीनोम का आकार लगभग 25 किलोबेस युग्म होता है। यह जीनोम 10 से 12 विभिन्न विषाणु प्रोटीनों को निर्मित करता है जिनमें प्रमुख रूप से आरएनए पर निर्भर आरएनए पोलीमरेज़ तथा पॉलीहैड्रिन शामिल हैं। प्रत्येक खंड के पाँचवें और तीसरे सिरे पर संरक्षित अनुक्रम पाए जाते हैं जो जीनोमिक खंडों की पहचान और उनके सही संयोजन के लिए आवश्यक होते हैं, ट्रांसक्रिप्शन की प्रक्रिया सम्पूर्ण कैपसिड संरचना के भीतर होती है जिससे द्वि-सूत्री आरएनए भोज्य की प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया से सुरक्षित रहता है। संश्लेषित संदेशवाहक आरएनए मीनारनुमा प्रक्षेपों के माध्यम से कोशिका के साइटोप्लाज़्म में पहुँचता है जहाँ उसका अनुवाद होकर वे विषाणु प्रोटीन बनते हैं जो प्रतिकृति और संयोजन प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक होते हैं।

3. लक्षण : तसर कीटों में वाइरोसिस संक्रमण के कारण लार्वा सुस्त हो जाते हैं, भूख त्याग देते हैं और शरीर फूल जाता है। इनके शरीर नरम और भंगुर हो जाते हैं और कभी-कभी फट जाते हैं। प्रभावित कीटों में हरी पित्तिका उल्टी में निकल सकती है और शरीर गुहा में द्रव्य संचय विशेष रूप से NPV मामलों में स्पष्ट होता है। सी.पी.वी. संक्रमण में मिडगट सफेद या पारदर्शी दिखाई देता है क्योंकि मिडगट की एपिथेलियल कोशिकाएँ विघटित होती हैं और मृत्यु आमतौर पर अंतिम अवस्थाओं में होती है। NPV संक्रमण में अंतः उत्तकों का व्यापक विघटन होता है जिससे शरीर तरल में बदल जाता है और "हैंगिंग सिम्प्टम" उल्टा "वी" आकार में झूला हुआ देखा जाता है। रक्तजल में सूक्ष्मदर्शी स्तर पर आवरण पिंड पाए जाते हैं जोकि इस वायरस का विशेष लक्षण है।

चित्र - 2 : तसर रेशमकीट में वायरस संक्रमण के कारण लटकने के लक्षण, भोज्य पौधे पर संक्रमित रेशमकीट।

4. संक्रमण : तसर रेशमकीटों में वाइरोसिस जो कि साइटोप्लाज्मिक पॉलीहैड्रोसिस वायरस या न्यूक्लियोपॉलीहैड्रोसिस वायरस के संक्रमण के कारण होता है, विभिन्न प्रकार के दृश्यमान और रोगात्मक लक्षण उत्पन्न करता है जो अक्सर लार्वा की मृत्यु पर समाप्त होते हैं। दोनों संक्रमणों में सामान्य लक्षणों में शामिल हैं-लार्वा की सुस्त गति, भूख की कमी और शरीर में सूजन या फूलने की स्थिति। लार्वा का शरीर मुलायम और नाजुक हो जाता है जो कई बार आसानी से फट सकता है। प्रभावित लार्वा हरे रंग की आंतों की सामग्री को उल्टी के रूप में बाहर निकाल सकते हैं और शरीर की गुहा में तरल का जमाव विशेष रूप से इसके संक्रमण में देखा जाता है। ए.एम. सी.पी.वी. के मामलों में लार्वा की मध्यांत्र (मिडगट) सफेद या पारदर्शी दिखाई देती है जो मिडगट की एपिथीलियल कोशिकाओं के विघटन के कारण होता है और मृत्यु आमतौर पर लार्वा की अंतिम अवस्था में होती है। दूसरी ओर एन.पी.वी. संक्रमण शरीर के आंतरिक उत्तकों को गंभीर रूप से तोड़ देता है जिससे शरीर तरल अवस्था में बदल जाता है। एन.पी.वी. का एक प्रमुख लक्षण "हैंगिंग सिंप्टम" है जिसमें संक्रमित लार्वा पेड़ पर उल्टे "वी" आकार में लटकते हुए पाए जाते हैं और फिर मर जाते हैं। इसके अलावा रक्तजल (हीमोलिम्फ) की सूक्ष्म जाँच में ओक्लूज़न बॉडीज़ की उपस्थिति पाई जाती है जो एन.पी.वी की विशेष पहचान है।

5. वाइरोसिस का संचरण : तसर रेशमकीटों में वाइरोसिस बहुत तेज़ी से फैलता है, विशेष रूप से उन पर्यावरणीय परिस्थितियों में जो इसके लिए अनुकूल होती हैं जैसे कि अधिक आर्द्रता और मध्यम तापमान। इसका सबसे सामान्य संचरण तरीका क्षितिजीय संचरण है जिसमें स्वस्थ लार्वा संक्रमित पत्तियों, मल, पालन सतहों या संक्रमित लार्वा की उल्टी व मल के माध्यम

से मौजूद वायरस कणों को निगल जाते हैं। भोज्य वृक्षों पर मृत व संक्रमित लार्वा भी वायरस कणों को वातावरण में छोड़ते हैं जो लम्बे समय तक जीवित रह सकते हैं और संक्रमण को और फैलाते हैं। ऊर्ध्वाधर संचरण जो अपेक्षाकृत कम होता है, तब होता है जब संक्रमित मादा कीट वायरस को अंडों के माध्यम से अगली पीढ़ी में पहुँचा देती है जिससे ये अंडे संक्रमण का प्रमुख स्रोत बन जाते हैं। यांत्रिक संचरण भी हो सकता है, जैसे संक्रमित पालन उपकरण, श्रमिकों के हाथ या लार्वा के आपसी सम्पर्क के माध्यम से। पर्यावरणीय कारक भी वायरस के फैलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं - जैसे कि भोज्य पौधों पर अत्यधिक भीड़ और अस्वच्छता वायरस के प्रसार को तेज कर देती है। बरसाती और आर्द्र मौसम वायरस के जीवित रहने और फैलने के लिए विशेष रूप से अनुकूल होता है। वायरस के जीनोम लक्षणों और संचरण के रास्तों की गहन समझ रोग के प्रभावी प्रबंधन के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रमुख नियंत्रण उपायों में शामिल हैं -रोगमुक्त अंडों का उपयोग, पालन उपकरणों और भोज्य पौधों की नियमित कीटाणुशोधन, एंटीवायरल पत्तियों के स्प्रे का प्रयोग तथा पालन प्रक्रिया के दौरान पर्याप्त दूरी और स्वच्छता बनाए रखना।

तसर रेशमकीट उत्पादन पर वाइरोसिस का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव : तसर रेशमकीटों में वाइरोसिस का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव बहुत व्यापक होता है जो केवल कीटों पर जैविक असर तक सीमित नहीं रहता। तसर रेशम पालन भारत के कई आदिवासी और ग्रामीण समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण वन आधारित आजीविका है, खासकर झारखण्ड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में। इसलिए इस बीमारी का फैलाव घरेलू अर्थव्यवस्था को अस्थिर कर सकता है और पारम्परिक जीवन शैली को बाधित कर सकता है। आर्थिक दृष्टि से इसका सबसे सीधा असर कोसा उत्पादन और आय की हानि के रूप में होता है क्योंकि वायरल संक्रमण के कारण लार्वा की मृत्यु दर बहुत अधिक हो जाती है, विशेषकर प्रमुख पालन मौसमों में। गम्भीर मामलों में कोसा उत्पादन 60-80% तक गिर सकता है जिससे किसानों को भारी वित्तीय नुकसान होता है। रोग प्रबंधन के लिए, पालनहारों को रोग निवारक और उपचारात्मक उपायों जैसे कीटाणुशोधन, प्रमाणित रोगमुक्त अंडों (DFLs) की खरीद और एंटीवायरल उपचार में निवेश करना पड़ता है। इन अतिरिक्त खर्चों के कारण उत्पादन लागत बढ़ जाती है और मुनाफे में कमी आती है। इसके अलावा कोसा की कम उपलब्धता आपूर्ति श्रृंखला को बाधित करती है जिससे बाजार अस्थिर हो जाता है और कीमतों में उतार-चढ़ाव होता है जो न केवल किसानों बल्कि धागाकारों, बुनकरों और व्यापारियों को भी प्रभावित करता है। कई छोटे किसान कर्ज़ और ऋण पर निर्भर हो जाते हैं जिससे वे कर्ज के जाल में फँस जाते हैं और आर्थिक रूप से असुरक्षित हो जाते हैं। सामाजिक रूप से वाइरोसिस से होने वाला संकट ग्रामीण और आदिवासी परिवारों को गहराई से प्रभावित करता है। कई लोगों के लिए तसर रेशम पालन उनकी मुख्य आय का स्रोत होता है और फसल की असफलता के कारण वे भोजन, दवा और शिक्षा जैसी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाते। बार-बार की असफलताएँ विशेषकर युवाओं के बीच ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन को बढ़ावा देती हैं जिससे समुदाय की संरचनाओं और पारम्परिक आजीविकाओं का क्षरण होता है। महिलाओं पर भी इसका प्रभाव महत्वपूर्ण है क्योंकि वे तसर पालन गतिविधियों में गहराई से शामिल होती हैं। फसल की असफलता उनकी वित्तीय स्वतंत्रता को प्रभावित करती है और परिवार के निर्णयों में उनकी भूमिका को सीमित कर देती है। इसके अलावा वाइरोसिस का मानसिक प्रभाव भी गहरा होता है-पालनहारों, विशेष रूप से पहली पीढ़ी के किसानों में मानसिक तनाव, चिंता और आत्मविश्वास की कमी आम होती है जो उन्हें रेशम पालन जारी रखने से हतोत्साहित कर सकता है। कुल मिलाकर वाइरोसिस तसर रेशम पालन की स्थिरता के लिए गम्भीर खतरा है और इसलिए इस रोग का प्रबंधन केवल एक जैविक आवश्यकता नहीं बल्कि एक सामाजिक और आर्थिक आवश्यक भी है।

तसर रेशम कीटों में वाइरोसिस के व्यापक विकासात्मक निहितार्थ एवं नियंत्रण और प्रबंधन : तसर रेशमकीटों में वाइरोसिस के व्यापक विकासात्मक प्रभाव केवल व्यक्तिगत किसानों तक सीमित नहीं हैं बल्कि ये क्षेत्रीय विकास, राष्ट्रीय कार्यक्रमों और पूरे रेशम उद्योग को प्रभावित करते हैं। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि यह सरकारी आजीविका योजनाओं जैसे वन धन योजना, एम.जी. एन. आर. ई. जी. ए. से जुड़े रेशम पालन प्रोजेक्ट्स और विभिन्न आदिवासी आजीविका मिशनों को बाधित करता है। ये योजनाएं ग्रामीण और आदिवासी समुदायों के लिए वन आधारित गतिविधियों जैसे तसर रेशम पालन के माध्यम से आय और रोजगार बढ़ाने के उद्देश्य से बनाई गई हैं लेकिन वाइरोसिस के कारण बार-बार फसल की असफलताएं इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को कम कर देती हैं जिससे निवेश पर लौटाव भी घट जाता है। इसके अलावा वाइरोसिस का रेशम उद्योग और निर्यात पर भी सीधा प्रभाव पड़ता है। तसर रेशम एक प्राकृतिक और पर्यावरण-हितैषी वस्त्र के रूप में घरेलू बाजारों के साथ-साथ निर्यात वस्तु के रूप में भी महत्वपूर्ण है। वायरल संक्रमण के कारण तसर कोसा उत्पादन में गिरावट भारत के कुल रेशम उत्पादन को कम कर देती है जिससे भारत की वैश्विक रेशम बाजार में स्थिति कमजोर होती है। इससे न केवल राष्ट्रीय राजस्व प्रभावित होता है बल्कि रेशम मूल्य श्रृंखला में ग्रामीण रोजगार पालन, धागाकरण, बुनाई और व्यापार भी बाधित होता है। अतः वाइरोसिस का नियंत्रण केवल कीटों के स्वास्थ्य के लिए ही नहीं बल्कि ग्रामीण आजीविका, आर्थिक विकास और निर्यात प्रतिस्पर्धा के व्यापक विकासात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भी आवश्यक है।

रोकथाम के उपाय : केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा किए गए अध्ययन में तसर रेशमकीटों में *एन्थीरिया माइलिट्टा* साइटोप्लास्मिक पॉलीहेड्रोसिस वायरस के प्रबंधन के लिए कई प्रभावी वायरस नाशक एजेंटों की पहचान की गई है। रासायनिक कीटाणुनाशकों में कैल्शियम हाइपोक्लोराइट (ब्लीचिंग पाउडर) 1-2% की सांद्रता, स्लेक्ड लाइम ($Ca(OH)_2$) 0.1-1%, फॉर्मेलडिहाइड घोल (1-2%) और सोडियम हाइपोक्लोराइट 0.1% ने वायरल कणों को निष्क्रिय करने में उल्लेखनीय प्रभाव दिखाया है। एक मानक कीटाणु शोधन प्रोटोकॉल के रूप में ब्लीचिंग पाउडर और स्लेक्ड लाइम को 1:9 अनुपात में मिलाकर पालन परिवेश को सैनिटाइज किया जाता है। ये कीटाणुनाशक पालन घरों, उपकरणों और आस-पास के क्षेत्रों में पालन चक्र से पहले और बाद में उपयोग किए जाते हैं। साथ ही लार्वा पालन के दौरान ब्लीचिंग पाउडर और लाइम से बने पाउडरयुक्त बेड डिसइंफेक्टेंट का उपयोग वायरस के क्षैतिज संचरण को कम करने के लिए किया जाता है। पूरक नियंत्रण उपायों में वनस्पति आधारित दवाओं जैसे- जीवन सुधा का प्रयोग शामिल है जो एक पर्यावरण मित्र और अवशेष मुक्त एंटीवायरल एजेंट है और रोग नियंत्रण में सहायक है। इसके अलावा अम्पीसीवी के कमज़ोर (अटेनुएटेड) प्रिपरेशन को लार्वा के भोजन में मिलाकर मौखिक इम्यूनोप्रोफिलैक्सिस का उपयोग भी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और लार्वा मृत्यु दर घटाने में प्रभावी पाया गया है। एकीकृत रोग प्रबंधन में साफ-सफाई का कड़ाई से पालन, संक्रमित लार्वा का त्वरित निकास और सुरक्षित निपटान तथा अनुकूल माइक्रोक्लाइमैटिक

परिस्थितियों का संरक्षण शामिल है ताकि वायरस के प्रसार को रोका जा सके। ये सभी उपाय मिलकर तसर रेशमकीटों में वायरस के प्रकोप को कम करने के लिए एक व्यापक रणनीति तैयार करते हैं।

सरकारी और संस्थागत भूमिका : तसर रेशमकीटों में वाइरोसिस से लड़ने और ग्रामीण एवं आदिवासी समुदायों के लिए रेशम पालन को एक स्थायी आजीविका के रूप में सुनिश्चित करने में सरकार और सम्बन्धित संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। केन्द्रीय रेशम बोर्ड और केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान कई महत्वपूर्ण कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। ये संस्थान बीमारी के प्रकोप की निगरानी, प्रमाणित रोगमुक्त अंडों (DFLs) का उत्पादन और वितरण, रोग नियंत्रण विधियों पर अनुसंधान एवं विकास और किसानों को सर्वोत्तम उपायों के बारे में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का कार्य करता है। इसके अलावा ये जिन किसानों के कीट रोगग्रस्त हो जाते हैं, को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं और बीमा योजनाओं को बढ़ावा देते हैं ताकि फसल हानि के प्रभावों को कम किया जा सके। स्थानीय स्तर पर राज्य रेशम पालन विभाग रोग नियंत्रण रणनीतियों के क्रियान्वयन में अहम् भूमिका निभाते हैं जिससे रोकथाम के उपाय किसानों तक समय पर पहुँच सकें और बड़े प्रकोपों के दौरान आपात राहत प्रदान कर आजीविका के नुकसान को कम किया जा सके। इसके साथ ही आदिवासी कल्याण कार्यक्रमों में वाइरोसिस प्रबंधन को उनके व्यापक आजीविका समर्थन योजनाओं में शामिल करना आवश्यक है क्योंकि तसर रेशम पालन आदिवासी अर्थव्यवस्थाओं में एक अहम् भूमिका निभाता है। केन्द्रीय संस्थानों, राज्य एजेंसियों और आदिवासी विकास कार्यक्रमों के बीच समन्वित कार्रवाई से ही एक मजबूत, रोग-प्रतिकूलता से युक्त और आर्थिक रूप से स्थायी तसर रेशम पालन क्षेत्र का निर्माण संभव है।

*परियोजना सहायक, के.त.अ. व प्र.सं., राँची।

ओक तसर रेशम उद्योग की समस्याएँ एवं समाधान के उपाय

ए.एस. वर्मा*, दिव्या सिंह एवं एन.बी. चौधरी

ओक तसर का प्रारम्भिक विवरण : भारत में ओक तसर महत्वपूर्ण है। इसकी शुरुआत के बाद पिछले कई वर्षों से अंतः प्रजनन के माध्यम से एकल प्रजाति को बनाए रखा जा रहा है। यह प्रजाति *एन्थीरिया प्रॉयली* जे विकसित हुए हैं। भारत में ओक तसर की शुरुआत से ही बीज एक बड़ी समस्या रही है। इस समस्या के समाधान के लिए अतिरिक्त बीज वाली फसलें, जैसे कि ऊँची-ऊँचाई वाली फसलों की बीज की आवश्यकता को पूरा करने के लिए फरवरी के अंतिम सप्ताह से अप्रैल के सप्ताह तक और अगेती फसल निम्न व मध्यम ऊँचाई पर ली जाने वाली अन्य फसलों के लिए बीज की पूर्ति के लिए शरद ऋतु की फसल (सितम्बर के प्रथम सप्ताह से अक्टूबर के मध्य तक) क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल के वैज्ञानिकों के प्रयासों से प्रस्तुत की गई। उपरोक्त के अलावा बीज की कमी की समस्या को दूर करने और पर्याप्त मात्रा में बीज का उत्पादन करने के लिए मौजूदा बीज कोसा संरक्षण और बीज उत्पादन प्रौद्योगिकियों में कुछ संशोधन विकसित किए गए जिससे न केवल मात्रा में बीज उत्पादन में मदद मिली बल्कि हैचबिलिटी के मामले में बीज की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ और अंततः उत्पादकता में भी वृद्धि हुई। प्रौद्योगिकियों में नवाचारों का वर्णन नीचे किया गया है। वर्ष 1969 में स्वदेशी ओक रेशमकीट *एन्थीरिया रॉयली* और इसके चीनी समकक्ष *एन्थीरिया पर्नी* के बीच एक व्यवहार्य अंतर-विशिष्ट संकर को संश्लेषित किया गया था और परिणामी *एन्थीरिया प्रॉयली* जे को देश के उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों के सम्पूर्ण उप-हिमालयी क्षेत्र में पेश किया गया था जो उत्तर-पश्चिम में जम्मू और कश्मीर से लेकर उत्तर-पूर्व में मणिपुर तक फैला हुआ था ताकि इन क्षेत्रों में उगने वाले ओक वनस्पतियों के विशाल प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर ओक तसर कीटपालन किया जा सके। हिमालय पर्वत माला जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तर पश्चिम में उत्तराखंड की कुमाऊं और गढ़वाल पहाड़ियों से लेकर उत्तर-पूर्व में मणिपुर तक फैली हुई है।

- ओक तसर मेहनत भरा कार्य है और प्रकृति की अनिश्चितताओं से जुड़ा है जिसके कारण फसल खराब हो जाती हैं।
- इस क्षेत्र में शामिल और लागू की गई तकनीकों ने उत्पादकता और उत्पादकों को आर्थिक लाभ में वृद्धि की है लेकिन फिर भी यह बहुत आकर्षक नहीं हो पाया है।
- किसानों के स्तर पर अंतिम उत्पाद "कोकून" के विपणन के साथ ऊँचे इलाकों में इसे लोकप्रिय बनाने में बहुत सारी समस्याएँ हैं।
- कोसा को रेशम में बदलने और कपड़े और परिधान तक इसके अंतिम सफर में बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है और विभिन्न चरणों में शामिल हितधारकों के लाभ के लिए इन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
- जानकारी के अनुसार उत्तर-पश्चिम भारत में कोसा के बाद के क्षेत्र के विस्तार की पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

जंगलो में प्राकृतिक रूप से उपलब्ध ओक वनस्पति

तालिका : 1 - ओक वनस्पतियों का राज्यवार वितरण

क्षेत्र	राज्य	ओक के अंतर्गत क्षेत्रफल (हेक्टेयर में)
उत्तर-पश्चिम	जम्मू और कश्मीर	40,9061
	हिमाचल प्रदेश	1,39,503
	उत्तराखंड	5,51,436
	उपयोग	11,00000
उत्तर-पूर्व	मणिपुर	40,000
	नागालैंड	20,000
	असम	25,000
	मेघालय	23,000
	मिजोरम	75,000
	अरुणाचल प्रदेश	1,22,5000
	उप-योग	14,08,000

वैज्ञानिकों द्वारा सार्थक प्रयास : केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा 1969 के दौरान *एन्थीरिया पर्नी* और *एन्थीरिया रॉयली* की मदद से *एन्थीरिया प्रॉयली* को संश्लेषित करने का प्रयास किया गया था ताकि उत्तर-पश्चिम में जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड के कुमाऊं और गढ़वाल पहाड़ियों से लेकर उत्तर-पूर्व में मणिपुर तक समुद्र तल से 3500-9000 फीट की ऊँचाई तक फैले उप-हिमालयी क्षेत्र के समशीतोष्ण क्षेत्र में वितरित 30 लाख हेक्टेयर से अधिक की विशाल वनस्पति का दोहन किया जा सके। उत्तराखंड एक पहाड़ी राज्य है। इसकी ऊँचाई बहुत विस्तृत है और यह 3500-9000 फीट AMSL के बीच है जिसमें ओक प्रजातियों की कई किस्में पाई जाती हैं : क्वेरकस ल्यूकोट्रीकोफोरा (इन्काना) बांज, क्वे. हिमालयना (तेलोंज) और क्वे. सेमीकार्पिफोलिया (खरसू) जो ओक तसर रेशमकीट के लिए भोजन का अच्छा स्रोत हैं। एक अनुमान के अनुसार कुमाऊं और गढ़वाल क्षेत्र में 13 जिले शामिल हैं जिनमें विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों में उपलब्ध विभिन्न किस्मों की प्राकृतिक ओक प्रजातियाँ लगभग 3 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हैं। स्थानीय रूप से उपलब्ध तीन ओक प्रजातियों के अलावा उत्तर-पूर्वी राज्य की एक बहुत तेजी से बढ़ने वाली ओक प्रजाति क्वे. सेरेटा को भी उत्तराखंड में कम ऊँचाई पर पेश किया गया है, जहाँ ओक तसर पालन के लिए केवल एक खाद्य पौधा क्वे. ल्यूकोट्रीकोफोरा उपलब्ध है। उपलब्ध रिपोर्ट के अनुसार सीडीपी परियोजना का क्रियान्वयन किया गया है। उत्तराखंड के विभिन्न भागों में लगभग 522 हेक्टेयर (13.04 लाख पौधे) क्वेरकस सेरेटा के पौधे रोपे गए हैं। कीटपालन के लिए रोपण का सर्वे किया जाना आवश्यक है। उत्तराखंड के उप-हिमालयी क्षेत्र में विशाल प्राकृतिक ओक वनस्पतियों की उपलब्धता को देखते हुए ओक तसर की शुरुआत की गई थी। भीमताल में केरेबो के वैज्ञानिकों द्वारा व्यापक प्रयोग और प्रयासों के माध्यम से ओक तसर रेशमकीट का पूर्ण पालतूकरण, उन्नत बीज तकनीक, किसी भी वांछित समय पर प्यूपल डिपॉज़ को तोड़ना, बीज कोसा और अंडों का संरक्षण, स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री की मदद से पालन तकनीक का नवाचार, कर्मचारियों और किसानों को विस्तार और प्रशिक्षण के माध्यम से जानकारी प्रदान करना जैसी अधिकांश समस्याओं का समाधान किया गया है।

क्वेरकस सेरेटा के वृक्षारोपण करने के लाभ : भारत में शीतोष्ण (ओक) तसर पालन गतिविधियों के लिए प्राकृतिक वनों में कई प्रकार के वाणिज्यिक ओक खाद्य पौधे उपलब्ध हैं जैसे-क्वेरकस सेरेटा, क्वेरकस सेमीकार्पिफोलिया, क्वेरकस डिल्डाटा, क्वेरकस फ्लोरिबंडा, क्वेरकस हिमालयाना, क्वेरकस ग्रिफिथि और क्वेरकस ल्यूकोट्रिकोफोरा आदि। इन खाद्य पौधों में क्वेरकस सेरेटा तेजी से बढ़ने वाली प्रजाति है और इसे ओक तसर गतिविधियों के लिए व्यावसायिक वृक्षा रोपण के लिए अनुशंसित किया गया है। ओक प्रजाति को प्राकृतिक रूप से विकसित होने में लगभग 15 वर्ष से अधिक का समय लगता है लेकिन क्वेरकस सेरेटा प्रजाति के पौधे 5-6 साल में ही लग जाते हैं। ओक तसर कीटपालन हेतु क्वेरकस सेरेटा प्रजाति का पौधा रोपण कर लाभ उठाया जा सकता है और निश्चित रूप से यह उत्तर-पूर्व क्वेरकस सेरेटा वृक्षारोपण और उत्तर-पश्चिम भारत में शीतोष्ण तसर गतिविधियों में वरदान साबित हो सकता है।

क्वे. सेरेटा वृक्षारोपण

ओक तसर संस्कृति एवं उत्पादन क्षमता : बागेश्वर, पिथौरागढ़, चमोली, रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी आदि जिलों के दूरस्थ क्षेत्रों के गरीब जनजातियों और पिछड़े लोगों में जहाँ आय का कोई अन्य साधन नहीं है, ओक तसर पालन के प्रति किसानों में उत्साह देखा जा रहा है, जो केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा राज्य के माध्यम से चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों (एस जी एस वाई, सी डी पी और आई वी एल पी) के तहत ओक तसर पालन के सफल प्रदर्शन का परिणाम है। इन क्षेत्रों के पालक ओक तसर संवर्धन से अपनी आर्थिकी को सहारा देने के लिए अच्छी आय अर्जित कर रहे हैं।

बीज संगठन की आवश्यकता : ओक तसर विकास में बीज संगठन और बीज उत्पादन मुख्य बाधाएं रही हैं। आवश्यक मात्रा और आवश्यक समय में गुणवत्ता वाले बीज की आपूर्ति ओक तसर के लोकप्रिय और निरंतर विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैसा कि कहा जाता है कि रेशम उत्पादन अनुशासित प्रबंधन का खेल है। ओक क्षेत्र में रेशम उद्योग के अन्य क्षेत्रों की तरह अभी तक कोई एकीकृत बीज उत्पादन और बीज आपूर्ति व्यवस्था स्थापित नहीं हो पाई है इसलिए बीज उत्पादन के बुनियादी ढाँचे की इस बुनियादी जरूरत पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है ताकि इसका अच्छा विकास सुनिश्चित किया जा सके। पालकों को बीज की आपूर्ति के लिए राज्य स्तर पर बुनियादी ढाँचे की कमी के कारण पालकों को समय पर गुणवत्ता वाले बीज मिल पाने का आश्वासन नहीं मिल पाता है। वर्तमान में केवल क्षे.रे.उ.अ.केन्द्र, भीमताल राज्य रेशम विभाग, निजी पालकों और स्वयं की बीज माँग को पूरा करने के लिए बीज भंडारण कार्य कर रहा है। सीमित स्रोतों के कारण इस केन्द्र को आबंटित अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति बाधित होती है।

के.रे.बो.-क्षे.रे.उ.अ. केन्द्र, भीमताल की भूमिका : क्षे.रे.उ.अ.केन्द्र, भीमताल अपनी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार प्रौद्योगिकी को परिष्कृत करने एवं ई.सी.पी कार्यक्रमों और अन्य माध्यमों से क्षेत्र में प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण कार्यक्रम आयोजित करता है। साथ ही प्रेरक कार्यक्रम एवं उद्योग के लिए उपयुक्त परियोजना कार्य करता है। भीमताल में पालन क्षमता लगभग 400 रो.मु.च. है। इस स्टेशन पर अलग से सीड भंडारण भवन की आवश्यकता है। साथ ही अनुसंधान कार्य के संचालन के लिए प्रयोगशाला की जरूरत है।

ओक तसर की समस्याएँ : उत्तराखंड में प्राकृतिक रूप से उगाई जाने वाली ओक प्रजातियाँ जैसे कि क्वेरकस ल्यूकोट्रिकोफोरा, क्वेरकस हिमालयाना और क्वेरकस सेमीकार्पिफोलिया, भौगोलिक, जलवायु और मिट्टी की दृष्टि से अत्यधिक विविधतापूर्ण हैं जिनमें पत्तियों के अंकुरण और परिपक्वता व्यवहार में जबर्दस्त अंतर और अंतर विशिष्ट परिवर्तन शीलता है। विशेष रूप से क्वेरकस ल्यूकोट्रिकोफोरा और क्वेरकस हिमालयाना में पत्तियों के तेजी से परिपक्व होने से अक्सर फसल खराब हो जाती है। इसके अलावा ये प्रजातियाँ बड़े पेड़ के रूप में होती हैं जिससे

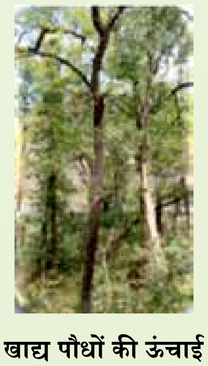

खाद्य पौधों की ऊंचाई

छँटाई, पोलार्डिंग और पत्तियों को गिराना मुश्किल हो जाता है और इसलिए ये रेशम उत्पादन के दृष्टिकोण से दुर्गम हैं।

- 55 वर्षों से अधिक से लगातार दोहन के कारण स्रोत सामग्री (ए. प्रॉयली के जैविक लक्षणों जैसे वोल्टिनिज्म, उद्भव पैटर्न, युग्मन योग्यता, प्रजनन क्षमता और हैचबिलिटी) में गिरावट आयी है।
- ओक खाद्य पौधों की दुर्गम ऊँचाई के कारण बाहरी पालन-पोषण प्रभावित होता है।
- क्वेरकस सेमीकार्पिफोलिया जैसे उच्च ऊँचाई वाले ओक के आस-पास निवासियों और इसलिए पालनकर्ताओं और स्थान की अनुपस्थिति।
- विशाल ओक वनस्पतियों की उपलब्धता के बावजूद रेशमकीट के अण्डों का निकलना, प्रकृतिक रूप से उपलब्ध ओक प्रजातियों के अंकुरण के साथ तालमेल नहीं बैठ पाता है। प्रजनन क्षमता (100-120) अण्डे और हैचिंग (50-55%) काफी खराब है। लार्वा अवधि लम्बी है और रो.मु.च. कोसा का अनुपात भी कम है।

उच्च-ऊँचाई पर कोसा संरक्षण

- ओक तसर रेशमकीट बीज का अपर्याप्त उत्पादन और गुणवत्ता युक्त बीज की समय पर आपूर्ति।
- बीज कोसा का लम्बे समय तक संरक्षण (वसंत से अगले वसंत तक) प्यूपा मृत्यु दर, अनियमित उद्भव, शलभों में विकृति और अंडा देने की क्षमता की समस्याएं उत्पन्न करता है जिससे रखरखाव, जीवित रहने, रोग मुक्त अंडे देने के अनुपात और कोसा रो.मु.च. के अनुपात के संदर्भ में इस संस्कृति में अनिश्चितताएं पैदा होती हैं।
- बीमारियों के कारण फसल की हानि होती है तथा पालन के लिए बदलते मौसम अनुपयुक्त हो जाता है। टाइगर बैंड रोग पर कोई नियंत्रण उपाय नहीं है।
- असंगठित क्षेत्र एवं ओक तसर क्षेत्र में न्यूक्लियस बीज आपूर्ति अवधारणा का अभाव।
- खराब जलवायु परिस्थितियों के कारण शरदकालीन फसलों की विफलता।
- पालन अवधि के दौरान दुर्गम क्षेत्रों में रहने के कारण व्यक्तिगत पालन केन्द्र।
- इन्स्टार और स्पीनिंग चरण में मैन पावर की अनुपलब्धता और स्थानीय कर्मचारियों को उच्च में यात्रा करने के लिए हिमालय की उन चोटियों पर जहाँ कीटपालन किया जा रहा है।
- तकनीकी कर्मचारियों के लिए रहने की उचित व्यवस्था न होना।

ओक तसर की आवश्यकताएँ :

- अनुसंधान एवं विकास घटक व अनुसंधान एजेंडा तय करना।
- कोसा उत्पादकता और खाद्य पौधों में सुधार के लिए आवश्यकता आधारित अनुसंधान कार्यक्रमों का निर्माण।
- ओक तसर संवर्धन की पृष्ठभूमि वाले वैज्ञानिकों से युक्त देखभाल समूह का गठन।
- भारत में ओक फीडिंग एन्थीरिया जीनोटाइप का अन्वेषण, मूल्यांकन, लक्षण वर्णन, दस्तावेजीकरण और रखरखाव।
- संरक्षण उपयोग के लिए सभी शीतोष्ण आर एस आर एस पर विभिन्न ओक आहारी एन्थीरिया प्रजातियों और उनके जीनोटाइप के जर्मप्लाज्म बैंक की आवश्यकता।

टाइगर बैंड रोग ग्रसित कीट

- संकरण, विभिन्न जीनोटाइप के बीच प्रजनन के लिए बैक क्रॉसिंग।
- विभिन्न शीतोष्ण के.रे.बो.-क्षे.रे.उ.अ.के. के बीच जर्म प्लाज्म का आदान-प्रदान।

आवश्यक रणनीतियाँ : ओक तसर में और सुधार के लिए निम्नलिखित रणनीतियों को अपनाने की आवश्यकता है -

1. ओक तसर खाद्य पौधों, विशेष कर मणिपुर से उत्तराखंड लाए गए क्वे. सेरेटा का वनीकरण प्राथमिकता पर किए जाने की आवश्यकता है।
2. राज्य की भौगोलिक स्थिति के अनुसार द्वितीय फसल के स्थिरीकरण के लिए प्रौद्योगिकियाँ एवं नवाचार।
3. विशेष रूप से उत्तर-पश्चिमी ओक तसर क्षेत्र के लिए बीज संगठन को सुदृढ़ बनाना।
4. संगठित विपणन प्रणाली तैयार करना।
5. ओक तसर की विकासात्मक प्रगति को वाटर शेड प्रबंधन, सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी और ग्रामीण विकास कार्यक्रम के माध्यम से वन रोपण के साथ जोड़ा जाना आवश्यक है।

सुधार हेतु उठाए गए उपचारात्मक उपाय :

- के.रे.बो.-क्षे.रे.उ.अ.के. और सभी इकाइयों द्वारा न्यूक्लियस बीज आपूर्ति की अवधारणा शुरू की गई।
- अच्छे बीज कोसा स्टॉक का निर्माण शुरू किया गया।
- रोग निगरानी शुरू की गई और उचित बेहतर उत्पादन के लिए बीज भंडार की जाँच के साथ पर्यवेक्षण किया गया।
- बीज कोसा संरक्षण एवं गैर-सरकारी संगठनों के साथ मिलकर मातृ शलभों की जाँच शुरू की गई।
- यह प्रयास ओक तसर उत्पादकता में वृद्धि की प्रवृत्ति को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।
- छोटे पैमाने पर चॉकी पालन की अवधारणा शुरू की गई और रो.मु.च. को चॉकी द्वारा पालकर आपूर्ति किया गया जिससे कोसा स्टॉक की स्थिति में सुधार हुआ।
- के.रे.बो.-क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल ने अपने बीज कोसा स्टॉक को बहुत उच्च वाणिज्यिक विशेषताओं के साथ विकसित किया है।
- राज्य में केन्द्रीय रेशम बोर्ड द्वारा लागू की गई ओक तसर विकास परियोजना के अन्तर्गत उच्च-ऊँचाई वाले क्षेत्रों में कीटपालन कक्ष, बीजागार भवन, सी आर सी निर्माण एवं क्वेरकस सेरेटा के आर्थिक पौधा रोपण से पालकों के स्तर पर पर्यवेक्षी कार्य में सुधार हुआ है जिसके परिणाम स्वरूप कोसा उत्पादन में वृद्धि एवं किसानों में ओक तसर के प्रति अभिरुचि देखने को मिल रही है।

विकसित प्रौद्योगिकियाँ :

- वायु कंडीशनर का उपयोग करके नियंत्रित स्थिति के तहत बीज कोसा का संरक्षण जिससे अनियमित उद्भव 40% से कम होकर 10-15% तक रह जाता है।
- बीजगार के समय उपयुक्त हाइग्रो-थर्मिक स्थिति प्रदान करने के लिए विद्युत उपकरणों का उपयोग।
- फोटो ग्रेनेज के दौरान हाइग्रो-थर्मिक उपचार अवधि को कम करने के लिए उद्भव और इष्टतम् ग्रेनेज पैरामीटर प्राप्त करने के लिए उपकरण।

हाइग्रो-थर्मिक उपचार अंडजनन

- नायलॉन बैग/ छलनी का उपयोग करके संशोधित अंडा देने वाले उपकरण।
- इलेक्ट्रिक का उपयोग करके इन्क्यूबेशन और चॉकी पालन तकनीक एवं आधारित उपकरणों से चॉकी अवधि को 8-10 दिन तक कम किया जा सकता है।
- नियंत्रित परिस्थितियों में केन्द्र में बीज तैयार करने के लिए गृह पालन का मानकीकरण जिसमें उन्नत वाणिज्यिक/आर्थिक कोसा गुण धर्मों के साथ कोसा का वजन, शैल का वजन, प्रजनन क्षमता, रेशम प्राप्ति आदि में वृद्धि की जाती है।
- प्रूनिंग और ब्रशिंग कार्यक्रम विकसित करके क्वेरकस सेरेटा पर मध्य ऊँचाई पर शरदकालीन फसल की शुरुआत।
- पॉली हाउस का उपयोग करके प्रारम्भिक प्रथम फसल में पत्ती अंकुरण में हेर-फेर करके शीघ्र ब्रशिंग की जा सकती है।
- क्वे. सेरेटा और क्वे. ल्यूकोट्राईकोफोरा दोनों में अलग-अलग सस्य विज्ञान पद्धतियों का उपयोग करके पत्ती अंकुरण में हेर-फेर किया जाता है ताकि पत्ती अंकुरण को अलग-अलग पालन कार्यक्रम के साथ समन्वयित किया जा सके।
- पत्तियों की गुणवत्ता और मात्रा प्राप्त करने के लिए वर्मी खाद, पत्तियों और कृषि अवशेषों का उपयोग करके मिट्टी को समृद्ध बनाना।

सुझाव :

- अधिक तापमान नियंत्रण की सुविधाओं के साथ की पालन केंद्र की स्थापना।
- ओक तसर इकाइयों में स्थानीय युवा कर्मचारियों को नियुक्त किया जा सकता है ताकि उच्च-ऊँचाई पर स्थित पालकों के स्थलों पर जाने की आवृत्ति हो सकती है।
- सभी किसानों का प्रशिक्षण/पालन-पोषण के पहलुओं में पालकों को शामिल किया जाना चाहिए।
- कौशल और जागरूकता बढ़ाने के लिए आर एस आर एस स्तर पर प्रशिक्षण दिया गया।
- आशंकित किसानों को व्यापक सहायता प्रदान की जा सकती है एवं उच्च-ऊँचाई पर पालन में शामिल जोखिम को कम करने के लिए बीमा कवर।

ओक तसर विकास के लिए प्रमुख आवश्यकताएँ :

- मिट्टी से रेशम और फिर कपड़े तक की रणनीतियों का एक मंच पर क्रियान्वयन।
- लोकप्रिय ब्रांड नाम के साथ ओक रेशम को लोकप्रिय बनाना।
- सीएसबी, डीओएस, एनजीओ और रेशम व्यापारियों का संयुक्त सहयोगी दृष्टिकोण पीसीटी पर ध्यान केंद्रित करता है।
- पहाड़ी क्षेत्र में ओक तसर उद्योग में शामिल लोगों के सम्बन्ध में चुनौतियों और उनके प्रबंधन पर विस्तार से चर्चा।
- राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उचित विपणन और इसके आगे के लोक प्रियकरण का प्रबंधन।
- चुनौतियों के आधार पर उपयुक्त उपचारात्मक उपायों की पहचान करना।
- प्रशिक्षण और उत्पाद विविधीकरण।
- ओक तसर केंद्रित रीलिंग मशीन, उप-उत्पाद उपयोग, पीसीटी की सिद्ध तकनीकों का लोकप्रिय बनाना।
- ओक तसर पीसीटी क्लस्टर विकास और पहाड़ी क्षेत्र में किसानों, बुनकरों और रीलरों का सर्वेक्षण।
- जूट और अन्य प्राकृतिक फाइबर के साथ ओक का सम्मिश्रण और ओक तसर एग्रो फॉरेस्टी मॉडल कार्यान्वयन।
- ओक सिल्क समावेशिता पर जोर।
- सीएसबी, डीओएस, एनजीओ और रेशम व्यापारियों के संयुक्त सहयोगी प्रयास उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में ओक तसर पीसीटी के लिए उपयोगी होंगे।
- मोटर चालित पोर्टेबल स्पीनिंग मशीनों का उपयोग करके किसानों के स्तर पर अभ्यास के साथ ओक तसर स्पन यार्न का उत्पादन किया जा रहा है।
- कच्चा माल भी केंद्र द्वारा नवीनतम् निर्धारित के.रे.बो. दरों पर उपलब्ध कराया जाता है।
- ओक तसर स्पन यार्न की नवीनतम् उच्चतम कीमत प्राप्त हुई।
- भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में पोस्ट कोकून तकनीक के विस्तार की पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

देव भूमि ऊखीमठ द्वारा की जा रही कोसोत्तर गतिविधियाँ

निष्कर्ष : उत्तर भारत हेतु रेशम उत्पादन तकनीक, यह जानकारी ओक रेशम उत्पादन के व्यापक क्षेत्रों विशेष कर उत्तराखंड में वैज्ञानिक तरीके से रेशम उत्पादन एवं तकनीकी वस्त्रों में नवीनतम् प्रगति को बढ़ावा देगा। वैश्विक रेशम बाजार के रुझान, रेशम के कपड़े की गुणवत्ता एवं उप-उत्पादों सहित रेशम उत्पादन श्रृंखला में नवाचारों की महती आवश्यकता है ताकि वैश्विक और स्थानीय स्तर पर रेशम उद्योग के सतत् और समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त करेगी। ओक तसर के सतत् नवाचारों के साथ यह जानकारी रेशम किसानों के लिए यह लेख बहुत प्रासंगिक हैं क्योंकि इसमें उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में रेशम के अनुप्रयोग एवं जानकारी शामिल हैं। अनुसंधान प्रयास, व्यापक कौशल विकास कार्यक्रम और प्रभावशाली सामुदायिक आउटरीच की पहल किसानों के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः ओक रेशम उत्पादक राज्यों में स्थायी आजीविका के अवसरों के लिए उद्यमिता को बढ़ावा देकर रेशम उत्पादन करने वालों को सशक्त बनाया जाना चाहिए। ओक रेशम कृषकों एवं शोधकर्ताओं को सम्यक एवं बेहतर उत्पादकता के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है।

*वैज्ञानिक-डी, क्षे.रे.उ.अ.के., भीमताल।

वाराणसी के बुनकरों द्वारा डुप्लीकेट साड़ियों की चुनौती का समाधान : सिल्क मार्क योजना की भूमिका और योगदान

संगीता देवी*, रामलखन राम, जितेन्द्र सिंह और सरदार सिंह

सारांश : अपनी उत्कृष्ट रेशमी साड़ियों और कपड़ों के लिए प्रसिद्ध वाराणसी, भारत में रेशम बुनाई का एक प्रमुख केन्द्र है। बनारस उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध शहर है और ऑरिजनल रेशमी साड़ियों के लिए लोकप्रिय है। यहाँ सालाना लगभग 3,500 से 4,000 मीट्रिक टन कच्चे रेशम की खपत होती है। बनारसी साड़ी जो अपने पारम्परिक जटिल डिज़ाइनों और ऑरिजनल ज़री के काम के लिए प्रसिद्ध है, भारतीय दुल्हनों द्वारा अत्यधिक पसंद की जाती है। वाराणसी ब्रोकेड बुनाई में माहिर है, जहाँ जांगला (भारी और अत्यधिक जटिल), तनचोई (साटन ब्रोकेड), वस्कट, कटवर्क, तिशु और बूटीदार जैसी साड़ियों की समृद्ध किस्में उत्पादित की जाती हैं। साड़ियाँ बनारस हथकरघा समूह का मुख्य उत्पाद हैं जो उत्पादन का लगभग 85-90% हिस्सा बनाती हैं जबकि अन्य वस्तुएँ जैसे पोशाक सामग्री, साज-सज्जा के कपड़े और फैशन के सामान (स्टोल और स्कार्फ) शेष 10-15% का उत्पादन करते हैं। वाराणसी समूह के लगभग 90% बुनकर अल्पसंख्यक समुदायों से सम्बन्धित हैं। हालाँकि वाराणसी के बुनकर समुदाय को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिसमें सबसे कठिन चुनौती - डुप्लीकेट साड़ियों का बाजार, जो सूरत से आने वाली डुप्लीकेट साड़ियाँ बनारसी साड़ी उद्योग को नुकसान पहुँचा रही हैं। वाराणसी के बुनकर समुदाय को अपनी कला और परम्परा को बनाए रखने के लिए समर्थन और प्रोत्साहन की आवश्यकता है। अत: केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित भारतीय रेशम मार्क संगठन ने इस समस्या को समाप्त करने के लिए सिल्क मार्क योजना की शुरुआत की है। सिल्क मार्क आई एस आई (ISI) मार्क, वूल मार्क एवं एग मार्क की तरह एक पंजीकृत ट्रेड मार्क है और केवल 100% ऑरिजनल रेशमी वस्त्रों पर ही लगाया जाता है। ऐसे उत्पाद जिनमें ताना-बाना ऑरिजनल रेशम का होता है व सजावट के लिए ज़री या अन्य धागे अतिरिक्त धागे के रूप मे प्रयोग होते हैं, सिल्क मार्क लगाया जा सकता है। भारतीय रेशम मार्क संगठन रेशम की प्रामाणिकता का दुनिया का पहला लेबल 'सिल्क मार्क लेबल', हैंगटैग और सिलाई-योग्य लेबल के रूप में पेश किया है। प्रत्येक लेबल पर एक होलोग्राम और एक विशिष्ट क्यू आर कोड छपा होता है जिससे उपभोक्ता को उत्पाद के अधिकृत उपयोगकर्ता तक पहुँचने में मदद मिलती है।

मुख्य शब्द : बुनकर, सिल्क मार्क, साड़ी, शुद्धता, गुणवत्ता, भारतीय रेशम मार्क संगठन आदि।

प्रस्तावना : रेशम भारत की परम्परा, कला और इतिहास से जुड़ा एक महत्वपूर्ण धागा है। वाराणसी की चमकीली साड़ियों से लेकर भागलपुर के तसर तक हर रेशमी साड़ी भारतीय शिल्पकला की पहचान है। ऑरिजनल रेशम से बनी इन साड़ियों की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए सिल्क मार्क प्रमाणीकरण चिह्न दिया जाता है जो प्राकृतिक और उच्च गुणवत्ता वाले रेशम की गारंटी देता है। यह उपभोक्ताओं को असली रेशम की पहचान करने में मदद करता है और उद्योग को प्रोत्साहन देता है। सिल्क मार्क संगठन बुनकरों को सहयोग प्रदान करते हुए सिल्क मार्क एक्सपो के माध्यम से रेशम उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक पहुँचाने में अहम् भूमिका निभाता है।

विकासशील भारत में रेशम की आर्थिक भूमिका : भारत रेशम का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक और दुनिया का सबसे बड़ा उपभोक्ता देश है। यहाँ शहतूत रेशम मुख्यतः कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, जम्मू-कश्मीर और पश्चिम बंगाल में उत्पादित होता है जबकि तसर (वन्या) रेशम झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा और उत्तर-पूर्वी राज्यों में बनाया जाता है। शहतूत रेशम मुलायम, चिकना और चमकदार होता है तथा देश के कुल रेशम उत्पादन का लगभग 92% हिस्सा बनाता है। वन्या रेशम प्राकृतिक, मजबूत और पर्यावरण के अनुकूल होता है। हालाँकि रेशम दुनिया के कुल कपड़ा उत्पादन का केवल 0.2% हिस्सा है, फिर भी यह एक उच्च मूल्य वाला उत्पाद है जो ग्रामीण रोजगार और विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत का रेशम बाजार अवलोकन :

- भारत के कच्चे रेशम उत्पादन में लगातार वृद्धि देखी गई है, जो वर्ष 2017-18 में 31,906 मीट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 38,913 मीट्रिक टन हो गया है।
- इस वृद्धि को शहतूत के बागानों के विस्तार से सहयोग मिला है जो वर्ष 2017-18 में 223,926 हेक्टेयर से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 263,352 हेक्टेयर हो गया है जिससे शहतूत रेशम उत्पादन वर्ष 2017-18 में 22,066 मीट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 29,892 मीट्रिक टन हो गया है।

- कुल कच्चे रेशम का उत्पादन वर्ष 2017-18 में 31,906 मीट्रिक टन से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 38,913 मीट्रिक टन हो गया।
- रेशम और रेशम वस्तुओं का निर्यात वर्ष 2017-18 में 1,649.48 करोड़ रुपये से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 2,027.56 करोड़ रुपए हो गया।
- वाणिज्यिक खुफिया और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएस) की रिपोर्ट के अनुसार देश ने वर्ष 2023-24 में 3348 मीट्रिक टन रेशम अपशिष्ट का निर्यात किया।

वाराणसी साड़ियों का इतिहास : बनारसी साड़ी जो अपने पारम्परिक जटिल डिज़ाइनों और ऑरिजनल ज़री के काम के लिए प्रसिद्ध है, भारतीय दुल्हनों द्वारा अत्यधिक पसंद की जाती है। वाराणसी ब्रोकेड बुनाई में माहिर है, जहाँ जांगला (भारी और अत्यधिक जटिल), तनचोई (साटन ब्रोकेड) , वस्कट, कटवर्क, तिशु और बूटीदार जैसी साड़ियों की समृद्ध किस्में उत्पादित की जाती हैं। साड़ियाँ बनारस हथकरघा समूह का मुख्य उत्पाद हैं जो उत्पादन का लगभग 85-90% हिस्सा बनाती हैं, जबकि अन्य वस्तुएँ जैसे पोशाक सामग्री, साज-सज्जा के कपड़े और फैशन के सामान (स्टोल और स्कार्फ) शेष 10-15% का उत्पादन करते हैं। बनारसी रेशमी साड़ियों पर आम तौर पर बूटी, बुट्टा, कलघा रूपांकन, तुरंज, बेल, ज्यामितीय डिज़ाइन, पुष्प और पशु रूपांकन, चारखाना, डोरिया, खंजरी, सालाईदार, मोथरा और जाला जैसे डिज़ाइन देखे जा सकते हैं।

बनारसी साड़ियाँ : बनारस उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध मंदिर शहर है और ऑरिजनल रेशमी साड़ियों के लिए भी उतना ही लोकप्रिय है। बनारस साड़ियों को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है -

बनारसी जांगला साड़ी

बनारसी तनचोई साड़ी

बनारसी कटवर्क साड़ी

बनारसी बूटीदार साड़ी

वाराणसी समूह के लगभग 90% बुनकर अल्पसंख्यक समुदायों से सम्बन्धित हैं। देश में रेशम उद्योग में 2024-25 में 9.7 मिलियन व्यक्तियों को रोज़गार मिला है जबकि 2023-24 में यह 9.5 मिलियन था, जो 2.11% की वृद्धि दर्शाता है। हालाँकि वाराणसी के बुनकर समुदाय को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जिसमें सबसे कठिन चुनौती –डुप्लीकेट साड़ियों का बाजार जो सूरत से आने वाली डुप्लीकेट साड़ियाँ बनारसी साड़ी उद्योग को नुकसान पहुँचा रही हैं। वाराणसी के बुनकर समुदाय को अपनी कला और परम्परा को बनाए रखने के लिए समर्थन और प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

भारत में डुप्लीकेट साड़ियों की चुनौती-

- **कृत्रिम धागों की उपलब्धता :** बाजार में सस्ता पॉलिएस्टर, आर्ट सिल्क, रेयॉन आदि आसानी से मिल जाते हैं। ये देखने में असली रेशम जैसे लगते हैं लेकिन कीमत बहुत कम होती है।
- **लाभ का लालच :** व्यापारी नकली सामग्री का उपयोग कर "रेशम" के नाम पर ऊँचे दाम वसूल लेते हैं।
- **ग्राहकों में जागरूकता की कमी :** आम खरीदार असली और नकली रेशम में फर्क नहीं कर पाते।
- **प्रमाणीकरण की कमी :** सभी क्षेत्रों में "सिल्क मार्क" या अन्य प्रमाणन लेबल का उपयोग नहीं हो रहा है।

डुप्लीकेट साड़ियों की चुनौती में सिल्क मार्क की भूमिका -

सिल्क मार्क : भारतीय रेशम उद्योग के लिए एक नई पहल – केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित भारतीय रेशम मार्क संगठन ने इस समस्या को समाप्त करने के लिए 17 जून, 2004 को सिल्क मार्क ऑर्गेनाइजेशन ऑफ़ इंडिया (SMOI) की स्थापना की गई। SMOI कर्नाटक सोसाइटी अधिनियम 1960 के तहत पंजीकृत एक संस्था है जिसका पंजीकरण संख्या 1054/2003-2004, दिनांक 19/01/2004 है। यह भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के अंतर्गत केन्द्रीय रेशम बोर्ड (CSB) की एक पहल है। सिल्क मार्क ISI मार्क, वूल मार्क एवं एग मार्क की तरह एक पंजीकृत ट्रेड मार्क है और केवल 100% प्योर रेशमी वस्त्रों पर ही लगाया जाता है। ऐसे उत्पाद जिनमें ताना-बाना शुद्ध रेशम का होता है व सजावट के लिए ज़री या अन्य धागे अतिरिक्त धागे के रूप मे प्रयोग होते हैं, सिल्क मार्क लगाया जा सकता है। सिल्क मार्क प्योर सिल्क की एक मात्र पहचान है। सिल्क मार्क एक प्रमाणीकरण चिह्न है जो भारतीय रेशम उत्पादों की गुणवत्ता और शुद्धता को दर्शाता है। यह चिह्न सुनिश्चित करता है कि उत्पाद में उपयोग किया गया रेशम प्राकृतिक और उच्च गुणवत्ता वाला है।

SILK MARK INDIA

Your Assurance of Pure Silk

SMOI, Central Silk Board
Ministry of Textiles
Govt. of India

G00000001

सिल्क मार्क का उद्देश्य : सिल्क मार्क संगठन उपभोक्ताओं को ऑरिजनल रेशम की पहचान करने और नकली उत्पादों से बचाने में मदद करता है। यह साड़ी उद्योग में एक अहम् भूमिका निभाता है जिससे निर्माताओं और ग्राहकों दोनों को लाभ होता है। संगठन रेशम उद्योग को बढ़ावा देने और भारतीय साड़ियों को वैश्विक बाजार तक पहुँचाने में भी सहायक है। सिल्क मार्क की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए देशभर में सिल्क मार्क एक्सपो आयोजित किए जाते हैं जो बुनकरों को आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते हैं। भारतीय रेशम मार्क संगठन ने रेशम की प्रामाणिकता का दुनिया का पहला लेबल- 'सिल्क मार्क लेबल' पेश किया है जो केवल अधिकृत उपयोगकर्ताओं द्वारा प्योर रेशम उत्पादों पर लगाया जाता है। प्रत्येक लेबल पर होलोग्राम और क्यूआर कोड होता है जिससे उपभोक्ता उत्पाद की सत्यता जाँच सकते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करना, प्रचार करना और भारतीय रेशम को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना है।

भारतीय रेशम मार्क संगठन की कार्य-प्रणाली :

प्रत्येक रेशम खुदरा विक्रेता, निर्माता, बुनकर और कारीगर को सिल्क मार्क अधिकृत उपयोगकर्ता बनाना	
सिल्क मार्क लेबल बिक्री	सेल्स मैन प्रशिक्षण
औचक लेबल निगरानी	उपभोक्ता जागरूकता
रेशम शुद्धता परीक्षण	ऑनलाइन अधिकृत दुकानों का पता लगाना
ऑनलाइन लेबल प्रमाणीकरण	सिल्क मार्क एक्स्पो

सेल्स मैन प्रशिक्षण-रेशम और अन्य रेशों का सेल्स मैन को परीक्षण और पहचान की जानकारी देना। 100% शुद्ध रेशम पर रेशम चिह्न लेबल लगाने की विधि बताना।

उपभोक्ता जागरूकता- शुद्ध रेशम खरीदते समय रेशम क्यूआर कोड को स्कैन करके प्रामाणिकता और शुद्धता की पुष्टि कर सकते हैं।

औचक लेबल निगरानी - अधिकृत उपयोगकर्ता परिसर और रेशम उत्पादों का सत्यापन।

वर्ष 2021-22 से 2024-25 के दौरान सिल्क मार्क योजना विवरण के अनुसार लक्ष्य की प्राप्ति की गयी हैं :

विवरण	2021-22		2022-23		2023-24		2024-25	
	लक्ष्य	उपलब्धियाँ	लक्ष्य	उपलब्धियाँ	लक्ष्य	उपलब्धियाँ	लक्ष्य	उपलब्धियाँ
नामांकित नये सदस्यों की कुल संख्या	200	360	275	399	350	436	400	515
बेचे गए सिल्क मार्क लेबलों की कुल संख्या (लाखों में)	20	30.42	27	40.27	34	35.93	45	43.45
जागरूकता कार्यक्रम प्रदर्शनी/मेले/कार्यशाला/रोड शो	300	497	600	808	700	838	850	750

स्रोत : (आँकड़ा सिल्क मार्क वैबसाइट) - सिल्क मार्क एक्स्पो-सिल्क मार्क को और अधिक विश्वसनीयता और लोकप्रियता मिले, देश भर में सिल्क मार्क अधिकृत उपयोगकर्ताओं के लिए विशेष रूप से निम्न चैप्टर द्वारा सिल्क मार्क एक्सपो का आयोजन के साथ ही रेशम की गुणवत्ता का परीक्षण किया जाता है।

हैदराबाद/ कोलकाता चैप्टर	बेंगलूर/चेन्नई चैप्टर
गुवाहाटी चैप्टर/कॉर्पोरेट कार्यालय	मुम्बई/ नई दिल्ली चैप्टर
पालक्काड़ / श्रीनगर चैप्टर	वाराणसी/बेंगलूर चैप्टर

वाराणसी चैप्टर का वर्षवार आँकड़ा 2020–2025

वर्ष	कुल ए उ	कुल लेबल	सेल्स पी ट्रेंड
2020-21	17	78700	35
2021-22	16	116500	47
2022-23	35	162800	113
2023-24	32	153100	103
2024-25	43	215000	232

सिल्क मार्क ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इंडिया (SMOI) की ब्रांड एम्बेसडर : विद्या बालन वर्ष 2017 से सिल्क मार्क ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इंडिया (SMOI) की ब्रांड एम्बेसडर हैं, भारतीय रेशम के महत्व को बढ़ावा देना, उपभोक्ताओं को सिल्क मार्क लेबल के बारे में शिक्षित करना तथा प्रामाणिक रेशम में विश्वास पैदा करना, खरीदारों को असली रेशम की पहचान करने, असली उत्पाद खरीदें, सिल्क मार्क चुनें।

निष्कर्ष : सिल्क मार्क योजना ने भारतीय रेशम उद्योग को विश्वसनीयता, पारदर्शिता और गुणवत्ता प्रदान की है। यह योजना नकली उत्पादों पर नियंत्रण रखते हुए उपभोक्ताओं और उत्पादकों दोनों के हितों की रक्षा करती है। इसका उद्देश्य ऑरिजनल रेशम का प्रचार करना, भारतीय रेशम को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ब्रांड पहचान दिलाना और रेशम मूल्य श्रृंखला से जुड़े सभी हितधारकों के हितों का संरक्षण करना है।

*उच्च श्रेणी लिपिक, अनुसंधान प्रसार केन्द्र, बस्ती, उत्तर प्रदेश।

रेशम की परम्परा : भारत में सिल्क रूट का गौरवशाली इतिहास

विभा कनन*

भूमिका : रेशम सौंदर्य और समृद्धि का प्रतीक वह वस्त्र है जो केवल वस्त्र नहीं बल्कि एक भावना है। जब कोई रेशमी कपड़ा त्वचा को छूता है तो उसके मुलायम स्पर्श में इतिहास, परम्परा, कला और मेहनत की कहानियाँ छिपी होती हैं। भारत में रेशम केवल कपड़ा नहीं रहा; यह राजसी ठाठ, धार्मिक आयोजनों, सांस्कृतिक परम्पराओं और आर्थिक समृद्धि का प्रतीक भी रहा है। कहते हैं जब कोई देश अपनी सांस्कृतिक धरोहर को सहेजता है, तभी वह सचमुच में प्रगति करता है। रेशम उत्पादन भारत की ऐसी ही एक धरोहर है जिसकी जड़ें 'सिल्क रूट' नामक ऐतिहासिक व्यापार मार्ग में गहराई से जुड़ी हैं।

भारत में रेशम का प्राचीन इतिहास : भारत में रेशम का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। पुरातत्वविदों ने सिंधु घाटी सभ्यता की खुदाई में ऐसे अवशेष पाए हैं जिनमें रेशमी धागों के चिह्न मिले हैं। महाभारत, रामायण और प्राचीन संस्कृत साहित्य में रेशम वस्त्रों का उल्लेख मिलता है। इन ग्रंथों में राजाओं, ऋषियों और देवी-देवताओं को रेशमी परिधान में चित्रित किया गया है। भारत में रेशम उत्पादन की शुरुआत कब और कैसे हुई, इस पर विद्वानों के मत अलग-अलग हैं लेकिन यह निश्चित है कि भारत इस कला में निपुण था और विश्व व्यापार का एक महत्वपूर्ण केन्द्र भी।

सिल्क रूट : भारत की वैश्विक व्यापारिक यात्रा 'सिल्क रूट' केवल एक व्यापार मार्ग नहीं था बल्कि संस्कृतियों और सभ्यताओं के बीच सेतु था। चीन से लेकर भारत, मध्य एशिया और फिर यूरोप तक फैले इस मार्ग ने रेशम को विश्व प्रसिद्धि दिलाई। भारत इस मार्ग का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था। चीन से मलबरी रेशम का कच्चा माल भारत पहुँचता और यहाँ पर विशेषज्ञ कारीगर उसे सुंदर वस्त्रों में बदल देते। साथ ही भारत का मूगा, तसर और एरी रेशम भी इस मार्ग से अन्य देशों तक पहुँचता है। भारतीय रेशम अपने विशिष्ट डिजाइनों, चमक और टिकाऊपन के लिए जाना जाता था। पश्चिमी देशों के राजा-महाराजा और धनी वर्ग भारतीय रेशम को बड़े ही उत्सुकता से खरीदते थे।

भारत में रेशम उत्पादन के प्रमुख क्षेत्र और उनकी विशिष्टताएँ -

कांचीपुरम, तमिलनाडु : यहाँ की रेशमी साड़ियाँ सोने की ज़री के काम के लिए प्रसिद्ध हैं। कांचीपुरम साड़ियों को 'क्वीन ऑफ सिल्क' भी कहा जाता है।

असम : मूगा रेशम का जन्म स्थल। मूगा रेशम की चमक पीढ़ियों तक बरकरार रहती है।

झारखण्ड और छत्तीसगढ़ : तसर रेशम के लिए विख्यात। यह रेशम थोड़ा मोटा होता है लेकिन इसकी बनावट और रंग प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर होते हैं।

कर्नाटक : भारत में मलबरी रेशम का सबसे बड़ा उत्पादक। कर्नाटक की रेशमी साड़ियों का बड़ा बाजार है।

रेशम उत्पादन की प्रक्रिया : प्रकृति और कारीगरी का संगम। रेशम बनाने की प्रक्रिया जितनी सुंदर होती है उतनी ही श्रमसाध्य भी।

1. रेशम कीटपालन (Sericulture) : रेशमकीट (Silkworm) को मलबरी पत्तों पर पाला जाता है।
2. कोसा (Cocoon) निर्माण : रेशमकीट अपने चारों ओर धागे से कोसा बनाता है।
3. धागा निकालना : कोसा से महीन रेशमी धागा निकाला जाता है।
4. धागा बुनना : करघे पर धागे को कपड़े में बदलते हैं।
5. रंगाई और सजावट : पारम्परिक डिजाइनों और रंगों के साथ कपड़े को सजाया जाता है। यह सब कार्य पूरी तरह हाथ से होता है जिससे हर कपड़ा अनूठा बनता है।

सांस्कृतिक महत्व : परम्परा से जुड़ा हुआ रेशम भारतीय समाज में रेशम केवल फैशन नहीं बल्कि परम्परा है।

विवाह : दक्षिण भारत में नवविवाहित जोड़े को कांचीपुरम साड़ी पहनाना परम्परा है।

त्योहार : दुर्गा पूजा, दीपावली, पोंगल जैसे त्योहारों पर रेशमी वस्त्र पहनना शुभ माना जाता है।

धार्मिक अनुष्ठान : देवी-देवताओं को चढ़ाए जाने वाले वस्त्र भी प्रायः रेशमी होते हैं।

रेशम उद्योग का आर्थिक पक्ष : भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा रेशम उत्पादक देश है। देश के लाखों किसान और कारीगर इस उद्योग से जुड़े हुए हैं। खास बात यह है कि रेशम उत्पादन मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में होता है जिससे ग्राम विकास को भी प्रोत्साहन मिलता है। सरकार ने भी इस उद्योग को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएं बनाई हैं : केंद्रीय रेशम बोर्ड (Central Silk Board) का गठन, क्लस्टर विकास योजना, कारीगर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

रेशम उद्योग के समक्ष चुनौतियाँ : यद्यपि भारत का रेशम उद्योग समृद्ध है फिर भी कई समस्याएँ सामने हैं - नकली रेशम का बढ़ता प्रचलन, सस्ते चीनी रेशम के कारण प्रतिस्पर्धा, युवा पीढ़ी का इस पेशे से विमुख होना, पर्यावरणीय चिंता। इन समस्याओं के समाधान के लिए तकनीक, विपणन और कारीगरों के सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

रेशम से जुड़े भविष्य की दिशा : रेशम केवल कपड़े का नाम नहीं बल्कि भारत की आत्मा का एक रूप है। यह परम्परा, कला, मेहनत और सौंदर्य का संगम है। यदि हम इसे सहेजना चाहते हैं तो हमें कारीगरों के अधिकारों की रक्षा करनी होगी। उनकी कला को विश्व पटल पर पहुँचाना होगा और साथ ही टिकाऊ एवं पर्यावरण के अनुकूल उत्पादन को बढ़ावा देना होगा। भारत के रेशम की चमक न केवल वस्त्रों में बल्कि उसके इतिहास, परम्परा और संस्कृति में भी दिखाई देती है। यही कारण है कि आज भी 'मेड इन इंडिया सिल्क' पूरी दुनिया में सम्मान और श्रद्धा के साथ देखा जाता है।

*मदुकरई, कोयम्बटूर, तमिलनाडु।

सफलता की कहानी

शीर्षक : रेशम से सशक्त : लक्ष्मण डांगिल की तसर यात्रा

किसान प्रोफ़ाइल : नाम : श्री लक्ष्मण डांगिल, गाँव और जिला : भदिमारा, सुंदरगढ़, ओडिशा, सम्पर्क : +91-7848076031

पारिवारिक पृष्ठभूमि : एक आदिवासी परिवार जो जीविका के लिए पारम्परिक कृषि और वन-आधारित आजीविका पर निर्भर था।

सार : लक्ष्मण डांगिल, भदिमारा के एक युवा आदिवासी तसर किसान हैं जिन्होंने अपने गाँव और आस-पास के गाँवों के अन्य किसानों के लिए नवीन पालन-पोषण के माध्यम से समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया। कई चुनौतियों का सामना किया और अपने समुदाय के लिए एक आदर्श के रूप में उभरे तथा कई तसर किसानों को प्रेरित किया।

पृष्ठभूमि (स्थिति) : लक्ष्मण शुरुआत में अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह से कृषि पर निर्भर थे जिससे उन्हें न्यूनतम् वित्तीय सुरक्षा मिलती थी। बढ़ते कर्ज और सीमित आय से जूझते हुए उन्होंने आजीविका के एक अधिक स्थिर और टिकाऊ स्रोत की तलाश शुरू की। तसर रेशम उत्पादन से उनका परिचय स्थानीय पहलों और सरसारा टीएमसीएस के सहयोग से हुआ जिसने उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन और प्रारम्भिक सहायता प्रदान की।

प्रेरक (मोड़) : लक्ष्मण की यात्रा में रेशम समग्र-II के सहयोग से एक परिवर्तनकारी बदलाव आया जो एक केंद्र प्रायोजित पहल है एवं जिसका उद्देश्य क्षमता निर्माण और बुनियादी ढाँचे के विकास के माध्यम से रेशम क्षेत्र को मजबूत करना है। इस कार्यक्रम के तहत उन्होंने गुणवत्तापूर्ण कोसा उत्पादन, बीजागार विकसित करने, कीटपालन तकनीकों में सुधार, कीटों के प्रबंधन और तसर खेती से जुड़ी पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान करने का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। उन्हें 700 रोग मुक्त अंडे (डीएफएल) प्राप्त हुए और उन्होंने मनरेगा योजना और प्राकृतिक वृक्षारोपण के तहत स्थापित भोज्य वृक्षों के बागानों में रेशम के कीड़ों का पालन शुरू किया। शुरुआती असफलताओं के बावजूद निरंतर तकनीकी सहायता से समर्थित लक्ष्मण के दृढ़-संकल्प ने उन्हें अपनी रोजगार को निखारने और अपनी उपज में लगातार सुधार करने में सक्षम बनाया। तब से तसर की खेती उनके लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन गई है जिससे उनके परिवार को अपने जीवन स्तर को बेहतर बनाने और आर्थिक रूप से संपन्न होने में मदद मिली है।

परिवर्तन और प्रभाव :

कोसा उपज : रीलेबल : 26,300 कोसा (K-16-8-15), रीलेबल नहीं : 7,140 कोसा (K-4-9-5), कुल : 33,440 कोसा (K-20-17-0), प्रति फसल आय : ₹1,84,234, शुद्ध लाभ : ₹1,73,034 (₹11,200 निवेश के बाद)

वार्षिक आय क्षमता : बार-बार चक्र के साथ उल्लेखनीय वृद्धि।

सामाजिक प्रभाव : आस-पास के गाँवों के अन्य किसानों को रेशम उत्पादन के लिए प्रेरित किया, रेशम उत्पादन में स्थानीय रुचि को मजबूत किया।

सम्मान : वर्ष 2024-25 के लिए सरसारा टीएमसीएस में सर्वश्रेष्ठ तसर किसान के रूप में उभरना।

किसान की आवाज़ : रेशम उत्पादन अपनाने के बाद मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढ़ी। आज मुझे दूसरे किसानों को सफलता दिलाने में मदद करने पर गर्व है।

मुख्य बातें : रेशम उत्पादन से स्थायी आय सुनिश्चित हुई, जीवन स्तर में सुधार और सामाजिक प्रतिष्ठा, अन्य ग्रामीण किसानों के लिए एक अनुकरणीय मॉडल।

शीर्षक : चाडा मुंडारी : तसर रेशम उत्पादन के माध्यम से परिवर्तन की कहानी

किसान प्रोफ़ाइल : नाम : श्री चाडा मुंडारी, गाँव और जिला : तालगिनिया, सुंदरगढ़, ओडिशा, संपर्क : +91-8280533842

पारिवारिक पृष्ठभूमि : आदिवासी किसान जिनका निर्वाह कृषि का इतिहास रहा है।

सार : ओडिशा के सुदूर आदिवासी क्षेत्र में श्री चाडा मुंडारी मृदु भाषी और परिवर्तन के एक ज्वलंत उदाहरण हैं। एक साधारण पृष्ठभूमि से आने के कारण उन्होंने एक समय सीमित संसाधनों और आजीविका के कुछ ही विकल्पों के साथ गुज़ारा करना मुश्किल समझा। हालाँकि गरीबी के चक्र को तोड़ने के उनके दृढ़-संकल्प ने उन्हें तसर रेशम उत्पादन की ओर प्रेरित किया जो उनके गाँव के कई लोगों के लिए एक अलग उद्यम था। समर्पण और धैर्य के साथ उन्होंने भोज्य पौधों की खेती, रेशम के कीड़ों का पालन और धीरे-धीरे इस शिल्प के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाना शुरू किया। अप्रत्याशित मौसम और शुरुआती तकनीकी सहायता की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करने के बावजूद चाडा डटे रहे। समय के साथ उनकी कड़ी मेहनत ने फल देना शुरू कर दिया और उन्हें रेशम उत्पादन से निश्चित आय अर्जित होना शुरू हो गया। आज वे न केवल अपने परिवार का भरण-पोषण आराम से कर रहे हैं बल्कि अपने अनुभव साझा करके रेशम उत्पादन में नए और लोगों का मार्गदर्शन करके समुदाय के अन्य लोगों का भी समर्थन करते हैं। उनकी इस यात्रा ने उन्हें एक स्थानीय आदर्श व्यक्ति बना दिया है इससे यह स्पष्ट है कि कैसे पारम्परिक ज्ञान, आधुनिक प्रशिक्षण और व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के साथ मिलकर स्थायी आर्थिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

पृष्ठभूमि (परिस्थिति) : चाडा मुंडारी ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले के एक सुदूर गाँव तलगिनिया के एक आदिवासी किसान हैं। आर्थिक तंगी और सीमित आजीविका के विकल्पों से जूझते हुए चाडा ने खेती के ज़रिए अपने परिवार

का भरण-पोषण करने के लिए संघर्ष किया। आय अनिश्चित थी और भविष्य अंधकारमय लग रहा था।

प्रेरक (मोड़) : चाडा मुंडारी की तसर रेशम उत्पादन की यात्रा खुंटागांव टीएमसीएस लिमिटेड और सुंदरगढ़ के रेशम उत्पादन के सहायक निदेशक के महत्वपूर्ण सहयोग से शुरू हुई। जिन्होंने उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान की। सीमित संसाधनों लेकिन दृढ़-संकल्प के साथ शुरुआत करते हुए उन्होंने तसर खेती की कीट समस्याओं और जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए प्रशिक्षण लिया। हालाँकि शुरुआत में उन्हें शिकारियों और बीमारियों के कारण असफलताओं का सामना करना पड़ा लेकिन विशेषज्ञ तकनीकी सहायता से समर्थित चाडा की दृढ़ता ने उन्हें अपने कौशल को लगातार बढ़ाने, उत्पादकता बढ़ाने और एक निश्चित आय प्राप्त करने में सक्षम बनाया। उनकी कहानी कठिनाई से आत्मनिर्भरता की ओर एक प्रेरक परिवर्तन को दर्शाती है।

परिवर्तन और प्रभाव :

कोसा उपज : रीलेबल : 17,120 कोसा (K 10-14-00), गैर-रीलेबल : 2,560 कोसा (K 01-12-00), कुल : 19,680 कोसा (K 12-06-00), प्रति फसल आय : ₹1,16,300, शुद्ध लाभ : ₹1,09,900 (₹ 6,400 निवेश के बाद)।

वार्षिक आय क्षमता : बार-बार चक्रों के साथ उल्लेखनीय वृद्धि।

सामाजिक प्रभाव : तालगिनिया और आस-पास के गाँवों में साथी किसानों का मार्गदर्शन किया, तसर खेती को एक व्यवहार्य आजीविका के रूप में बढ़ावा दिया, रेशम उत्पादन में सामुदायिक रुचि को बढ़ाया।

सम्मान : खुंटागाँव (सुंदरगढ़) में एक होनहार तसर किसान के रूप में उभरना।

किसानों की आवाज़ : "तसर रेशम उत्पादन ने मेरी ज़िंदगी बदल दी। पहले मुझे अपने परिवार का पेट पालने के लिए संघर्ष करना पड़ता था लेकिन अब मैं एक निश्चित आय अर्जित करता हूँ और दूसरों को भी ऐसा करने में मदद करता हूँ। यह सिर्फ़ खेती नहीं बल्कि सशक्तिकरण है।"

मुख्य बातें : तसर रेशम उत्पादन आदिवासी और ग्रामीण उत्थान के लिए एक अनुकरणीय मॉडल प्रस्तुत करता है, उचित प्रशिक्षण और सहायता से न्यूनतम् निवेश से उच्च लाभ प्राप्त किया जा सकता है, सामुदायिक मार्गदर्शन अपनाने और सफलता को गति देता है एवं चाडा की यात्रा मृदु भाषी, नवाचार और नेतृत्व का उदाहरण है।

शीर्षक : कताई की सफलता : तसर रेशम उत्पादन के माध्यम से देबा मुंडारी का परिवर्तन

किसान प्रोफ़ाइल : नाम : श्री देबा मुंडारी, पिता का नाम : बुधु मुंडारी, गाँव और जिला : तालगिनिया, सुंदरगढ़, ओडिशा।

पारिवारिक पृष्ठभूमि : एक साधारण आदिवासी किसान परिवार जो वन-आधारित आजीविका और पारम्परिक कृषि पर आधारित है।

सार : ओडिशा के आदिवासी बहुल तालगिनिया में देबा मुंडारी ने तसर रेशम उत्पादन के माध्यम से विपरीत परिस्थितियों को अवसर में बदल दिया। दृढ़-संकल्प और मार्गदर्शन के साथ उन्होंने रेशम उत्पादन की कला में महारत हासिल की और उल्लेखनीय उपज और वित्तीय सफलता प्राप्त की। उनकी यात्रा स्थायी आजीविका की तलाश कर रहे ग्रामीण किसानों के लिए आशा की किरण है।

पृष्ठभूमि (स्थिति) : देबा एक आदिवासी कृषक परिवार के सदस्य, पारम्परिक कृषि पर निर्भर थे जिससे उन्हें न्यूनतम् और अनिश्चित लाभ मिलता था। एक निश्चित आय के विश्वसनीय स्रोत की तलाश में, स्थानीय पहलों और खुंटागांव टीएमसीएस लिमिटेड के सहयोग से उन्हें तसर रेशम उत्पादन से परिचित कराया गया जिससे उन्हें आजीविका में सुधार के नए अवसर मिले।

प्रेरक (मोड़) : कौशल विकास और क्षमता निर्माण के माध्यम से रेशम क्षेत्र को मज़बूत बनाने पर केन्द्रित केन्द्र प्रायोजित योजना, रेशम समग्र-II के हस्तक्षेप से देबा की राह में महत्वपूर्ण बदलाव आया। उन्हें 500 रोग-मुक्त अंडे (डीएफएल) मिले और उन्होंने मनरेगा योजना के तहत स्थापित भोज्य वृक्षों के बागान में रेशम के कीड़ों का पालन शुरू किया। व्यवस्थित प्रशिक्षण के माध्यम से उन्होंने कीट प्रबंधन, रेशमकीट देखभाल और कोसा संग्रहण में आवश्यक कौशल सीखे। निरंतर तकनीकी मार्गदर्शन और अपने समुदाय के मज़बूत समर्थन से देबा ने शुरुआती चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया और अपनी कार्य-प्रणाली में लगातार सुधार करते हुए एक अधिक सुरक्षित और टिकाऊ आजीविका की शुरुआत की।

परिवर्तन और प्रभाव :

कोसा उपज : रीलेबल : 17,120 कोसा (K 10-14-00), गैर-रीलेबल : 12,320 कोसा (K 07-14-00), कुल : 29,440 कोसा (K 18-08-00), प्रति फसल आय : ₹1,27,220, शुद्ध लाभ : ₹1,19,220 (₹8,000 निवेश के बाद)।

वार्षिक आय क्षमता : बार-बार चक्रों के साथ उल्लेखनीय वृद्धि।

सामाजिक प्रभाव : पड़ोसी किसानों को रेशम उत्पादन के लिए प्रेरित किया, स्थायी रेशम उत्पादन में स्थानीय रुचि को मजबूत किया।

सम्मान : "2024-25 के लिए खुंटागांव टीएमसीएस लिमिटेड के सर्वश्रेष्ठ तसर किसान" के रूप में सम्मानित किया गया।

किसानों की आवाज़ : तसर की खेती ने मुझे आय से कहीं ज़्यादा दिया, इसने मुझे आत्मविश्वास दिलाया। अब मैं एक ऐसा भविष्य देख रहा हूँ जहाँ मेरा परिवार फले-फूले और मेरा गाँव मज़बूत हो।

मुख्य बातें : तसर रेशम उत्पादन आदिवासी किसानों के लिए आर्थिक आय को मजबूत करने का एक कारगर रास्ता है, उचित प्रशिक्षण और सहयोग से छोटे किसान भी प्रभावशाली लाभ कमा सकते हैं। देबा की सफलता दृढ़ता और समुदाय-संचालित विकास की शक्ति को उजागर करती है।

शीर्षक : सफलता का रेशम : गुनाराम मुंडारी की रेशम उत्पादन की कहानी

किसान प्रोफ़ाइल : नाम : श्री गुनाराम मुंडारी, पिता का नाम : सुकुरा मुंडारी, गाँव और जिला : तालगिनिया, सुंदरगढ़, ओडिशा, सम्पर्क : 7655092182

पारिवारिक पृष्ठभूमि : एक आदिवासी किसान परिवार जो जीविका के लिए पारम्परिक कृषि और वन-आधारित आजीविका पर निर्भर था।

सारांश : तालगिनिया के एक आदिवासी किसान गुनाराम मुंडारी ने गरीबी से मुक्ति के लिए तसर रेशम उत्पादन को अपनाया। केवल 250 डीएफएल और सीखने के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता के साथ उन्होंने शुरुआती चुनौतियों का सामना किया और एक सफल रेशम किसान के रूप में उभरे। उनकी यात्रा मृदु भाषी, नवाचार और स्थायी आजीविका की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है।

पृष्ठभूमि (स्थिति) : गुनाराम एक ऐसे परिवार से थे जो पारम्परिक खेती पर निर्भर थे जिससे उन्हें सीमित वित्तीय स्थिरता मिलती थी। प्रत्याशित आय और सीमित संसाधनों के साथ उन्होंने आजीविका के अधिक विश्वसनीय साधनों की तलाश शुरू कर दी। तसर रेशम उत्पादन से उनका परिचय खुंटागांव टीएमसीएस लिमिटेड द्वारा समर्थित स्थानीय पहलों के माध्यम से हुआ जिसने उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण और स्टार्टअप संसाधन प्रदान किए।

प्रेरक (मोड़) : सिल्क समग्र-II के सहयोग से गुनाराम की यात्रा में एक बड़ा बदलाव आया जो एक केन्द्र प्रायोजित योजना है एवं जो क्षमता निर्माण के माध्यम से रेशम क्षेत्र को मजबूत करने पर केन्द्रित है। उन्हें 250 रोग-मुक्त चकत्ते (डीएफएल) प्राप्त हुए और उन्होंने मनरेगा के तहत विकसित एक भोज्य वृक्षा रोपण में रेशम के कीड़ों का पालन शुरू किया। व्यापक प्रशिक्षण के माध्यम से उन्होंने रेशमकीट देखभाल, कीट प्रबंधन और कोसा कटाई में कौशल हासिल किया। हालाँकि उन्हें शुरुआती चुनौतियों का सामना करना पड़ा लेकिन गुनाराम के दृढ़-संकल्प और निरंतर तकनीकी मार्गदर्शन ने उन्हें अपने कार्यों में सुधार और उत्पादन में लगातार वृद्धि करने में सक्षम बनाया जिससे अधिक सुरक्षित और अच्छे आजीविका का मार्ग प्रशस्त हुआ।

परिवर्तन और प्रभाव :

कोसा उपज : रीलेबल : 13,960 कोसा (K 08-14-10), गैर-रीलेबल : 4,800 कोसा (K 03-00-00), कुल : 18,760 कोसा (K 11-14-10), प्रति फसल आय : ₹98,005, शुद्ध लाभ : ₹94,005 (₹4,000 निवेश के बाद)।

वार्षिक आय क्षमता : बार-बार चक्रों के साथ उल्लेखनीय वृद्धि ।

सामाजिक प्रभाव : तालगिनिया के अन्य किसानों को रेशम उत्पादन के लिए प्रेरित किया, रेशम उत्पादन में स्थानीय रुचि को मजबूत किया।

मान्यता : क्षेत्र में एक उभरते हुए तसर किसान के रूप में ध्यान आकर्षित किया।

किसानों की आवाज़ : तसर उत्पादन ने मुझे एक नई शुरुआत दी। मैं अनिश्चितता से स्थिरता की ओर बढ़ा हूँ और अब मैं दूसरों को भी यही संभावना देखने में मदद करता हूँ।

मुख्य बातें : तसर रेशम उत्पादन मामूली निवेश के साथ भी उच्च लाभ प्रदान करता है, प्रशिक्षण और सामुदायिक समर्थन सफलता के लिए महत्वपूर्ण हैं, गुनाराम की कहानी साबित करती है कि दृढ़-संकल्प और अवसर जीवन को नया रूप दे सकते हैं।

स्रोत : डॉ.कर्मवीर जेना, वैज्ञानिक-डी, के.त.अ. व प्र.सं., राँची एवं किरणमय प्रधान, सहायक निदेशक (रेशम), सुंदरगढ़, ओडिशा।

विविधा

जानवरों के प्रति संवेदना जगाएँ

डॉ. कविता विकास*

मूक पशुओं को पालतू बनाकर रखने की परम्परा यूँ तो पुरानी है लेकिन किसी भी नज़रिए से इसे न्याय संगत नहीं कहा जा सकता है। कहते हैं पेट्स अकेलेपन के सबसे अच्छे साथी हैं। तो क्या अकेले रहने वाले प्रकृति के समीप नहीं रह सकते ? किसी बेज़ुबान को घर की चारदीवारी या पिंजरे में रखकर उनकी आज़ादी छीन कर ही अपना अकेलापन मिटाया जाना कितना सही है ? फ्लैट में रहने वाले कुत्तों द्वारा काटे जाने की शिकायत इन दिनों ख़ूब कर रहे हैं। यानी उन्हें पालतू बनाने वाले भी उनकी परवरिश नहीं कर पा रहे हैं। परवरिश यानी उनके रखरखाव, खान-पान और हल्के-फुल्के शिष्टाचार सिखाने की सही ट्रेनिंग। इनमें कोई भी एक चीज़ की कमी होगी तो कुत्ते-बिल्ली अपने हद तोड़ सकते हैं, फिर वे दूसरे के लिए सुरक्षित नहीं होते। किसी नवजात तोते को पिंजरे में बंद कर के रखने वाले उसे भले ही अपनी बोली सिखा कर वाह-वाही लूट लें लेकिन एक उम्र के बाद पिंजरा खोल कर देखिए, वह उड़ नहीं पाएगा क्योंकि उसने अपना आसमान पिंजरे में ही पाया है। पंख खोलना सीखा नहीं। उड़ने की स्वाभाविक प्रक्रिया से दूर रहने के कारण वह तोते की जाति से बाहर हो जाता है। यह उदाहरण मानवता पर बड़ा सवाल खड़ा करता है। मनुष्य अपनी परतंत्रता का विरोध तो खुलकर करता है लेकिन किसी अन्य जीव की स्वतंत्रता का ध्यान नहीं करता। पशुओं को जैविक उद्यान या जंगलों के प्राकृतिक वातावरण में विचरने की सुविधा दी जानी चाहिए। दूध देने वाले पशुओं के लिए एक सुरक्षित बाड़ा जितना ज़रूरी है, उतना ही उनके साथ प्रेम भाव दर्शाना भी। प्रेमचंद की "दो बैलों की कथा" में देखा ही होगा आपने कि दोनों बैल किस प्रकार अपने मालिक के प्यार के सामने अपनी हर गुलामी की ज़ंजीर को जान पर खेलकर तोड़ देते हैं और वापस भाग आते हैं। यह संवेदना उनकी सजगता का प्रमाण है। उनमें भी पीड़ा, कष्ट और वेदना के भाव पनपते हैं। वे भी तड़पते हैं। गोशाला में आदमी देखते ही गाएँ अपने बाड़े के पास आ जाती हैं। उनकी भी

इच्छा होती है कोई उन्हें सहलाए, प्यार करे। जानवरों को उनके नैसर्गिक वातावरण में पनपने देना चाहिए अगर वे कहीं से भी आदमी के लिए आफ़त न बन गए हों। सबसे दयनीय स्थिति तो सर्कस, मेला और पर्यटकों को लुभाए जाने वाले जानवरों की होती है। हाल ही में एक लेखक ने हाथी को ग़ुलाम बनाए जाने वाली उस दर्दनाक प्रक्रिया का ख़ुलासा किया था जिसे पढ़कर आँसू निकल आएँगे। उन्होंने कहा था कि नवजात हाथी को माँ से अलग कर ऐसी-ऐसी यातनाएँ दी जाती हैं कि कई बार वह अपनी सूँड़ पर पैर रखकर खड़ा हो जाता है ताकि दम घुटने से मर जाए। वस्तुतः कोई भी जानवर अपनी भूख से परेशान होकर ही अपने मालिक की हर बात मानता है। मालिक भी उसके शरीर के सबसे नरम और संवेदनशील हिस्से को जानता है जहाँ पर वार करके उन्हें कंट्रोल करता है। हाथी को ग़ुलाम बनाए जाने के पहले उसकी आत्मा को मारी जाती है। यह प्रक्रिया फ़ैजान कहलाता है। कुछ समय पूर्व केरल में एक गर्भवती हथिनी की हत्या वन्य जीवों की प्रति हमारी बर्बरता को दिखाता है। प्राणी जगत के लिए यह एक शर्मसार घटना है। हमें आदमी होने का परिचय देना चाहिए और सभी प्राणवान के साथ हमदर्दी दिखानी चाहिए, ठीक वैसे ही जैसे मूक-बधिर मनुष्यों के प्रति हम अति संवेदनशील होते हैं। जिस तरह घरेलू और पालतू पशुओं के साथ लोग प्यार दिखाते हैं, उनकी सुख-सुविधाओं का पूरा ख़याल रखते हैं, उसी तरह बड़े और जंगली जीवों के साथ भी आत्मीयता दिखानी चाहिए। आत्मीयता मतलब उन्हें गले लगाना नहीं बल्कि उन्हें सताने और कष्ट देने से बाज आने को कहा गया है। कुछ दिनों पहले एक ख़बर आयी थी कि एक महिला ने शेर पाल रखा है और पालतू कुत्तों की तरह उन्हें घुमाती-फिराती हैं। यह उनके जानवर प्रेम का परिचायक हो सकता है लेकिन शेरों की हिंसक प्रवृत्ति का क्या ठिकाना, कब जागृत हो जाए। दूसरा जंगल के प्राणी को मनुष्य के माहौल में ढालने के लिए कुछ तो कड़े क़दम उठाए ही गए होंगे जो अपराध की श्रेणी में आता है। अत्याचार का वीभत्स उदाहरण तो उनका शिकार करना है। हिरन, हाथी, बाघ, गैंडा, शेर या तेंदुआ के विभिन्न अंगों को ऊँचे दामों में बेचना, लाभ कमाना या घर पर छालों को सजाना आदि ऐसे लालच हैं जो लोगों को उनके शिकार के लिए उन्मुख करते हैं। आसाम के काज़ीरंगा नेशनल पार्क में एक सींग के दुर्लभ गैंडे के शिकार की अनेक घटनाएँ ख़बर में आ चुकी हैं। खेती, उद्योग व आवास के लिए ज़मीन मुहैया कराने के लिए वनों का क्षरण तेज़ी से हो रहा है। तब जानवर अपने प्राकृतिक वास को छोड़कर कभी-कभार शहरों की ओर आ जाते हैं। उत्तराखंड में एक गाँव के लोग एक तेंदुए से बहुत परेशान रहे। वे उसे मारने के लिए तुल गए थे लेकिन यह समाधान नहीं है। वन अधिकारियों के ऐसे समय सक्रिय होने की आवश्यकता है। कई बार वन्य जीवों के ख़िलाफ़ होने वाले षड्यंत्र में वन अधिकारियों की भी मिलीभगत होती है। पशुओं के लिए आरक्षित संरक्षित क्षेत्र को लेकर भी विवाद होते रहते हैं। गाँव वाले पालतू पशुओं को चराने के लिए संरक्षित क्षेत्र में घुस आते हैं और किसी दुर्घटना के शिकार होने पर उचित मुआवज़ा माँगते हैं। संरक्षित क्षेत्रों के बीच से सड़क या रेल लाइन का गुज़रना भी व्यवधान पैदा करता है। अनेक पहाड़ी स्थल जो सैर-सपाटे का मुख्य केंद्र होते हैं, वहाँ यात्रियों द्वारा खाने-पीने की वस्तुओं को छोड़ देना, न केवल गंदगी फैलाते हैं बल्कि जीव-जंतुओं को भी आकर्षित करते हैं। इससे जंगलों का प्राकृतिक रूप नष्ट होता है तथा जानवरों का रिहायसी इलाक़ों की ओर उग्र रूप में घुस आना भी सम्भव हो जाता है। दरअसल हमने जानवरों को कभी प्राणी जगत का हिस्सा नहीं माना। उनके उत्पाद को इस्तेमाल करने के बाद भी यह नहीं सोचा कि दूध के अतिरिक्त जितने भी पशु उत्पादों का हम प्रयोग करते हैं, वे सब नष्ट हो जाएँगे अगर पशु संरक्षण नहीं किए जाएँगे। वन्य जीव अपराध पर नकेल कसने के अनेक क़ानून हैं। मुआवजे, फ़ाइन, सज़ा, कारावास आदि रहते हुए भी पशु अत्याचार होते ही रहते हैं। कुछ समय पहले केंद्रीय मंत्रिमंडल ने दक्षिण एशिया वन्य जीव प्रवर्तन नेटवर्क व्यवस्था अपनाने के लिए सहमति दी है। दूसरे देशों द्वारा भी सीमावर्ती क्षेत्र में होने वाले अपराध पर यह समिति नियंत्रण करती है। वन्य जीव को बचाना, पेड़ बचाने और प्रकृति को बचाने से जुड़ा हुआ है। एक साथ अनेक समस्याओं के समाधान की यह पहल है। इसलिए देश की अर्थव्यवस्था के लिए बनने वाली नीतियों का इसे हिस्सा बनाना चाहिए। आम लोगों में भी पशुओं को सुरक्षित वातावरण देने की जागरूकता होनी चाहिए। आदिवासी समुदाय अब भी वनों को बचाए रखने की कोशिश करते हैं। जल, जंगल, ज़मीन से जुड़ाव उनकी जीवन शैली का अभिन्न अंग है। विकास के साथ-साथ शहरों की ओर उन्मुख होते आदिवासी समुदाय में भी अब अपनी संस्कृति को बचाए रखने के प्रति उदासीनता दिख रही है। यह प्रवृति जितनी जल्दी समाप्त हो जाए, अच्छा है। समस्त देशवासियों में वन, वन्य जीवों और वन्य उत्पाद के प्रति चेतना व जागरूकता लाने की कोशिश की जा रही है। हमें ग्रासरूट लेवल से इसे अपनाना होगा। विद्यालयों में बच्चों को दी जाने वाली परियोजनाओं में प्राणी जगत के प्रति संवेदना जागृत किया जाना एक अच्छी शुरुआत है।

*नोएडा, उत्तर प्रदेश।

दैनिक जीवन में कितना घातक है निराशावादी होना

डॉ. विभा खरे*

यह एक विचित्र तथ्य है कि बहुत से महान व्यक्तियों में भी निराशा के भाव विद्यमान थे और इसी निराशा की काली रेखा के कारण उनमें से अनेक मानसिक रोगों के शिकार बने और उनकी महान सफलताओं में बाधा पहुँची। मन में निरन्तर निराशा के विचार आने से निरुत्साह से व्यक्ति की आकांक्षाएँ ही नहीं कुचली जातीं बल्कि कार्य के लिए जागृति भी मन्द पड़ती है। आदर्श स्पष्ट नहीं रहते वरन् धुंधले पड़ने लगते हैं और मानसिक शक्ति भी प्रायः नष्ट हो जाती है। जितनी बार भी आप निराशा के आगे घुटने टेकते हैं, जितनी बार निरुत्साहित होते हैं, उतनी ही बार आप अपनी उन आशाओं के महल को ध्वस्त करते हैं जिन्हें आपने बड़े श्रम से बनाया था। जितनी बार आप की आशाएं-आकांक्षाएं धराशायी होती हैं उतनी ही बार आपकी मानसिक शक्तियाँ कार्य के अयोग्य और निकम्मा बनाते हैं। जो मन निरुत्साहित है वह किसी भी प्रकार का निर्माण-कार्य कैसे करेगा ? वह तो रचनात्मक रह ही नहीं सकता क्योंकि वह तो नष्ट करने में लगा हुआ है, ध्वंस करने में लगा हुआ है। इसका अर्थ यही है कि यदि आप अपने मन में निराशा के भाव आने देते हैं तो निश्चित जानिए कि आप अपने हाथों अपना विनाश कर रहे हैं। आपको ज्ञात नहीं कि सम्भवतः दस मिनट की निराशा और अनुत्साह आपके कई दिन के प्रयत्नपूर्वक बनाये गये कार्यों को पल भर में समाप्त कर देती है, नष्ट कर देती है। मानसिक रूप से नीचे गिरना आसान है अथवा ध्वंसात्मक होना बहुत सरल है जिस प्रकार मकान को गिराना बहुत सरल काम है परन्तु उसका त्वरित निर्माण बहुत कठिन और श्रमसाध्य है। पर्वत की चोटी के नीचे उतरना सरल है लेकिन चढ़ना बहुत दुःसाध्य और कठिन होता है। जब हम स्वयं अपने को निरुत्साहित होने देते हैं तो हमें यह पता ही नहीं चलता कि हम क्या कर रहे हैं। वास्तव में हम उस समय अपने शरीर और भविष्य के

साथ खिलवाड़ कर रहे होते हैं। उस समय निराशा की अन्धकारपूर्ण काली छाया हमारी चेतना पर अत्यन्त गहरी छाप छोड़ती है, उसे भयंकर रूप से कुंठित करती है। वस्तुतः हमारे शत्रु भी यही काम करते हैं। निराशा हमारी इसी प्रकार की भयंकर शत्रु है। जब भी हम पर निराशा का आक्रमण होता है अथवा भय हमें निरुत्साहित करता है तो यह प्रत्यक्ष रूप से अपने प्रति किया गया हमारा अपराध ही होता है। प्रायः ऐसा माना जाता है कि युवक और युवतियाँ अधिक आशावान होते हैं और भविष्य के प्रति सचेत होते हैं लेकिन सूक्ष्म विश्लेषण किया जाए तो पता चलेगा कि युवावस्था में ही निराशा अधिक घेरती है। कई बार सुनने में आता है कि फलां युवक अथवा युवती ने निराशा से तंग आकर आत्महत्या कर ली अथवा बेकारी से ऊबकर या परीक्षा में असफल होने के कारण अपने जीवन का अन्त कर लिया। यदि उन युवक अथवा युवतियों को अपने भावी जीवन की सफलताओं या सफलता की संभावनाओं में विश्वास होता तो वे कभी भी अपने इस अमूल्य जीवन को इस प्रकार नष्ट न कर देते। सम्भवतः हम नहीं जानते कि यदि हम अपनी मनोवृत्तियों, मनोदशा अथवा मनःस्थिति को ठीक रख सकें तो हम क्या चमत्कार कर सकते हैं। यदि हम सर्वोच्च आकांक्षा के स्तर पर अपनी भावनाओं को स्थिर रख सकें तो हमें सभी प्राकृतिक पदार्थों से प्रसन्नता प्राप्त होगी। ऐसा प्रतीत होगा कि प्रकृति हम पर एक अद्‌भुत चमत्कार प्रकट कर रही है क्योंकि हम जानते हैं कि प्रकृति हमसे जो कुछ प्राप्त करती है, वही बदले में देती भी है। यदि मन सर्वोच्च स्थिति या स्वाभाविक स्थिति में रहता है तो हमें अपार हर्ष और आनन्द प्राप्त होता है पर कठिनाई यही है कि हमें यह ज्ञात ही नहीं कि संसार हमें अपनी मानसिक स्थिति के अनुरूप ही दिखायी देता है। यदि हमारी मानसिक स्थिति रंगीन है तो यह संसार हमें रंगीन ही दिखायी देगा। यदि हमने मन पर निराशा का काला लबादा डाल रखा है तो संसार भी हमें निराशा से घिरा हुआ ही दिखायी देगा। यह कैसे हो सकता है कि अपनी आँखों पर तो हमने काला चश्मा लगा रखा हो और हमें सफेद दिखाई दे। बहुत से लोगों का विचार है कि मानसिक स्थिति पर अपना अधिकार नहीं होता अर्थात् मनोदशा हमारी अपनी इच्छा के अनुरूप नहीं हो सकती। वह व्यक्ति के अन्दर प्राकृतिक रूप से घर कर जाती है। अतः हम इसमें परिवर्तन कैसे कर सकते हैं, पर वास्तव में ऐसा सोचना हमारी भूल है, ऐसा करना गलत है। हम अपनी मानसिक स्थिति को बदल सकते हैं, अपनी मनोदशा में ठीक उसी प्रकार आमूल-चूल परिवर्तन कर सकते हैं जिस प्रकार हम अपने वस्त्रों को, अपनी पोशाक को, अपनी वेशभूषा को बदल सकते हैं। आप-अपने प्रयत्नों से मन में व्याप्त घोर से घोर निराशा की भावना को भी दूर कर सकते हैं और निष्क्रियता को तिलांजलि दे सकते हैं बशर्ते कि आप अपने अन्दर निराशा के विरोधी भावों उत्साह और आदि को जगाएं और अपने जीवन में रचनात्मकता को प्राथमिकता दें। जब कभी निराशा आप पर आक्रमण करे, आप को अभिभूत करना चाहे तो आप अपने मन को दृढ़ रखिए, निराशा के आगे उसे झुकने मत दीजिए अपनी इच्छाशक्ति को प्रबल कीजिए, अपने आदर्शों को सदा सर्वोच्च रखिए। निराशा की भावना को, निरुत्साहपूर्ण विचारों को मन में आने से पूर्व कुचल डालें तो फिर उन्हें टिकने के लिए स्थान ही प्राप्त नहीं होगा। जब भी आपके मन में निराशाजनक भाव आयें तो फौरन भांप जाइए कि यह ध्वंसात्मक भावना है, अनिष्ट करने वाली भावना है। उसी समय अपने मन में रचनात्मक विचार लाइए। अपने विचारों में परिवर्तन लाना असमभव कार्य नहीं है। इसमें सीखने जैसी कोई बात नहीं हैं। हमारी मानसिक स्थिति हमारी इच्छाशक्ति के वश में होती है और हम अपनी मानसिक स्थिति को जैसा चाहें वैसा बना सकते हैं। जो मनुष्य प्रेमी है, प्रेम करना जिसका स्वभाव है, वह सब कुछ प्रेममय देखता है, उसके लिए संसार का स्वरूप ही बदल जाता है। उसके लिए सभी पदार्थ सुन्दर बन जाते हैं, गौरवमय हो जाते हैं क्योंकि उसकी मानसिक स्थिति वैसी है। यह कहना सर्वथा गलत है कि निराशा की भावना हमें विरासत में मिली है। वास्तव में हम अपने द्वारा अपने समाज का ढाँचा खड़ा करते हैं, अपने संसार की रचना करते हैं और हमसे संसार भी बनता है। कुल मिलाकर भावों का चुनाव हमारे अपने वश की बात है, उसके लिए हम स्वतंत्र हैं। जिस प्रकार एक क्षार दूसरे क्षार को निष्क्रिय कर देता है तथा जिस तरह सूर्य की किरणें धुन्ध को नष्ट कर देती है उसी प्रकार आशा और उत्साह के स्पर्श मात्र से निराशा और निष्क्रियता से भरी मनःस्थिति में परिवर्तन आ जाता है।

*जी-9, सूर्यपुरम्, नन्दनपुरा, झाँसी।

गिद्धों की आबादी को बचाने की बड़ी चुनौती

अली खान*

आज यह चिंताजनक बात है कि वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए जरूरी समझे जाने वाले गिद्धों की प्रजातियाँ बड़ी तेजी के साथ खत्म हो रही हैं। गिद्धों के गायब होने के कारण पर्यावरण में रोगाणु अपने पाँव पसार रहे हैं। जो इंसानों में घातक संक्रमण के साथ-ही-साथ जानलेवा भी साबित हो रहे हैं। दरअसल स्वच्छ वातावरण के साथ इंसानों की जान को महफूज रखने के लिए गिद्धों की उपस्थिति को नितांत आवश्यक माना जाता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक 1990 में गिद्धों की आबादी 4 करोड़ थी जो अब मात्र 60 हजार रह गई है। गौरतलब है कि संकट में आए गिद्ध की प्रजातियाँ को 2022 में आईयूसीएन की रेड लिस्ट में डाल दिया गया। एक अन्य रिपोर्ट के मुताबिक 2000 से 2005 के बीच 5 लाख से अधिक लोगों की मौत ऐसे रोगाणुओं से हुई, जो मरे हुए पशुओं के शव से निकलकर संक्रमण फैलाने की वजह बने। जब इसके बारे में गहन शोध किया गया तो मालूम चला कि इसके पीछे की बड़ी वजह गिद्धों का गायब होना रहा। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि गिद्ध मुफ़्त पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएँ प्रदान करते हैं जो पारिस्थितिकी तंत्र या वन्य जीवों द्वारा मानव कल्याण में किए जाने वाला योगदान हैं। मालूम हो गिद्ध अनिवार्य मैला ढोने वाले होते हैं जो पोषक तत्वों के पुनर्चक्रण, मिट्टी और पानी के दूषित पदार्थों को हटाने और बीमारियों के प्रसार को नियंत्रित करने जैसी पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के तौर पर ग्रिफ़ॉन गिद्ध जानवरों के शवों से प्राप्त बड़ी मात्रा में सड़ा हुआ मांस खाते हैं जिससे खाद्य जाल के माध्यम से ऊर्जा का हस्तांतरण होता है। इनकी उपस्थिति जंगली कुत्तों जैसे अन्य वैकल्पिक मैला ढोने वालों की आबादी को नियंत्रित करके बीमारियों के संचरण को सीमित करने में मदद कर सकती है। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि गिद्ध हमारे पर्यावरण को स्वच्छ और सुरक्षित बनाए रखने में सहायक है। हमें यह भी समझने की नितांत आवश्यकता है कि गिद्धों की आबादी और प्रजाति पर विद्यमान संकट कहीं-न-कहीं पारिस्थितिकी से जुड़ा संकट है। यदि समय रहते गिद्धों के संरक्षण के लिए प्रयास नहीं किए गए तो भविष्य में गिद्ध प्रजाति की शुमारी विलुप्त प्रजाति में होगी जो स्वाभाविक रूप से हमारी चिंताओं में इजाफा करेगी। लिहाजा गिद्धों के संरक्षण के लिए तत्काल कदम उठाए जाने की आवश्यकता है जिससे गिद्धों की आबादी को बचाया जा सके। दरअसल गिद्ध पक्षी से

आम-आदमी परिचित है। इन्हें मुर्दाखोर पक्षी के नाम से भी जाना जाता है। इनकी सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि ये भोजन की तलाश करते समय लम्बी दूरी तय करने की अपनी अविश्वसनीय क्षमता के लिए जाने जाते हैं। ये बड़े अपमार्जक पक्षियों की 22 प्रजातियों में से एक हैं, जो मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रहते हैं। ये प्रकृति के अपशिष्ट संग्रहकर्त्ता के रूप में एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं और पर्यावरण को अपशिष्ट से मुक्त रखने में सहायता करते हैं। भारत में गिद्धों की 9 प्रजातियों जैसे ओरिएंटल व्हाइट-बैक्ड, लॉन्ग-बिल्ड, स्लेंडर-बिल्ड, हिमालयन, रेड-हेडेड, इज़िप्शियन, बियर्डेड, सिनेरियस और यूरेशियन ग्रिफॉन का निवास स्थान है। हालाँकि दक्षिण एशियाई देशों विशेषकर भारत, पाकिस्तान और नेपाल में गिद्धों की आबादी में उल्लेखनीय कमी देखी गई है। इनकी संख्या में कमी का मुख्य कारण 1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में पशुओं के उपचार में दर्द निवारक दवा डाईक्लोफेनाक का व्यापक उपयोग था। इसके परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में आबादी में 97% से अधिक की कमी देखी गई जिससे पारिस्थितिक संकट उत्पन्न हुआ। इस बीच आम आदमी के मस्तिष्क में इस सवाल का कौंधना स्वाभाविक है कि आखिर दर्द निवारक दवा ने किस तरह गिद्धों की सेहत के साथ खिलवाड़ करते हुए इनकी आबादी को संकट में डाला ? बता दें कि आमतौर पर पशुओं में दर्द और सूजन का इलाज करने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली यह दवा गिद्धों के लिए बेहद विषैली होती हैं। मृत जानवरों के शवों को खाने के बाद गिद्धों की सेहत पर डाइक्लोफेनाक दवा बहुत घातक प्रभाव छोड़ती है। विशेष रूप से डाइक्लोफेनाक गिद्धों में घातक गुर्दे की विफलता का कारण बनता है इससे गिद्धों की मौत हो जाती है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि गिद्ध एक कुशल, लागत प्रभावी और पर्यावरण के लिए लाभकारी शव निपटान सेवा प्रदान करते हैं जिसे पशुपालक मूल्यवान मानते हैं। पशुओं के शवों को तेज़ी से खाने की उनकी क्षमता ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन और वाहनों द्वारा शवों के संग्रह और प्रसंस्करण संयंत्रों तक परिवहन से उत्पन्न होने वाली आर्थिक लागतों को काफी कम कर सकती है। गिद्ध हजारों साल पुरानी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सेवाएं भी प्रदान करते हैं। साथ ही इकोटूरिज्म के रूप में मनोरंजक सेवाएं भी प्रदान करते हैं, खास तौर पर पक्षी-दर्शकों और फोटोग्राफरों के लिए। गिद्धों को उनके प्राकृतिक आवास में देखना महत्वपूर्ण संभावित मूल्य है और गिद्धों के प्रजनन क्षेत्रों और भोजन स्थलों के आस-पास इकोटूरिज्म स्थानीय आय के महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान कर सकता है। हमें यह समझने की निहायत आवश्यकता है कि ये गिद्ध कितने मूल्यवान हैं और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इन्हें बचाने के लिए कदम उठाने चाहिए जिससे हमारे पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने में मदद मिलेगी।

***जैसलमेर, राजस्थान।**

कहानी

झंझावात

मनीषा मंजरी*

टिक टिक करती वो नीले रंग की दीवार घड़ी बता रही थी अभी शाम के चार बजने वाले थे। ये छोटा-सा कमरा जो सफ़ेद मटमैले रंग में रंगा था इसमें बड़ी-बड़ी दो खिड़कियाँ थी, एक बालकनी और दो दरवाजे। एक दरवाजा जो घर के दूसरे भागों से इसे जोड़ता था और दूसरा जो बालकनी में खुलता था। सुहाना अपनी आराम कुर्सी पर बैठकर छत से लगे पंखे को निहार रही थी। गर्मियाँ अपनी चरम पर थी और पंखे से आती हवा बस खानापूर्ति सा व्यवहार कर रही थी। अपने सर से टपकते पसीने की बूंदों की अपने ही दुपट्टे से पोंछती हुई सुहाना ने एक लम्बी सांस ली और आँखें बंद करने की कोशिश की। पर अभी कुछ पल ही बीते थे की झटके से उसकी आँखें खुली और वो चौंककर कुर्सी से उठी। सामने किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी थी, उसने कुछ पल इंतज़ार किया कि कहीं उसे नींद में भ्रम तो नहीं हुआ, पर एकबार और दस्तक की आवाज आयी तो वो लपक कर गयी और दरवाजा खोला। सामने माँ खड़ी थी, हाथों में चाय की ट्रे लिए और होठों पर मुस्कान। दरवाजा खुलते ही माँ ने अंदर कदम बढ़ाये और ट्रे को मेज पर रखते हुए कहा "सारा दिन बस काम-काम और बस काम। मुझे तो कभी-कभी लगता है कि इस बड़े से घर में बस मैं ही अकेले रहती हूँ।" सुहाना माँ के सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए बोली "आपकी भी शिकायतें ना माँ कभी ख़त्म ही नहीं होती। पहले जब बाबा थे तो उनसे शिकायतें, फिर जब मैं ऑफिस से काम करती थी तो उसकी शिकायतें और अब इस नए वर्क फ्रॉम होम के दौड़ में काम की शिकायतें।" माँ ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा "हम बस शिकायतें ही तो करते रहते हैं, कभी किसी ने उन्हें दूर करने की कोशिश ही कहाँ की।" सुहाना ने माँ की कही हुई बातों को अनसुना कर बालकनी की तरफ नज़र डाली तो होठों पर एक मुस्कान उभर आयी। उसने माँ को बाहर की तरफ इशारे से दिखाया और कहा, "ओह फाइनली ! इतने दिन की गर्मी के बाद आज बादल भर आये हैं, शायद बारिश होगी।" माँ ने भी उमड़ते बादलों को देखा और कहा, "हाँ, आज सुबह ही तो न्यूज़ में बोल रहे थे कि मॉनसून की दस्तक के साथ बारिश के आसार हैं। चलो इस चिलचिलाती गर्मी से थोड़ी तो राहत होगी।" सुहाना ने चाय खत्म की और माँ का हाथ पकड़ कर बालकनी में जा खड़ी हो गयी। बादल धीरे-धीरे गहरा रहे थे और हवाओं में गति और ठंडक दोनों शुमार हो रहे थे। हवाओं के थपेड़े जो चेहरे से टकरा रहे थे तो एक अलग ही सुकून मन को छू रहा था। तभी बारिश की पहली बूँद ने उनके चेहरे को छूआ और दोनों के चेहरों की मुस्कान बड़ी हो गयी। जल्द ही नीचे से मिट्टी की सोंधी खुशबू आयी और माँ ने एक गहरी सांस लेकर उसे अपनी रूह तक पहुँचाने की कोशिश की। माँ के मुँह से अनायास ही निकल पड़ा, "ये बरसात मुझे बहुत पसंद है।" सुहाना ने माँ की तरफ थोड़ा चकित होते हुए देखा और कहा, "पर आप तो अक्सर कहती थी कि आपको बारिश पसंद नहीं।" माँ ने सुहाना की तरफ देखा और धीमे स्वर में कहा, "हाँ, अब पसंद नहीं। पर कभी बहुत पसंद थी।" इससे पहले की सुहाना अपना अगला प्रश्न माँ के सामने रखती, माँ तेज़ी से उसके सामने से निकली और चाय की खाली प्यालियाँ ट्रे में रखकर कमरे से बाहर चली गयी। माँ अपने कमरे की खिड़की से बूंदों को टकराते देख रही थी, नज़रें तो उन बूँदों पर थी पर ज़हन जाने कहाँ गोते खा रहा था। उन्होंने खिड़की से नज़र फेरी और अपनी ही लम्बाई के आईने पर नज़र डाली। अपने खुद के प्रतिबिम्ब का मूल्यांकन उनके खुद के चेहरे पर एक कटु हँसी बनकर उभरा। उन्होंने अपने चेहरे को और सफ़ेद होते बालों पर हाथ फेरा तो सालों पुरानी खुद की छवि उनके आँखों के सामने नाच गयी। गेंहुए रंग और काले बालों के साथ सामान्य आँखों वाली और सामान्य कद-काठी वाली समृद्धि। आँखों में नयी उम्र का जोश और होठों पर मुस्कान भी उसकी एक योग्यता ही हुआ करती थी। उस दिन भी मॉनसून की पहली बारिश ने कोलकाता की सड़कों को छुआ था और हर तरफ़ बारिश की बूँदें संगीत बन बिखर रही थीं। समृद्धि उस दिन अपने आर्ट कॉलेज से निकल कर बिना छत वाली बस स्टॉप पर पहुँची ही थी कि

बारिश ने उसे घेर लिया। एक तरफ तो पसीने वाली उमस के बाद पड़ती ठंडी बूँदें सुकून दे रही थीं वहीं अपने कपड़ों का गीला होकर पारदर्शी होना उसके चेहरे पर शिकन ला रहा था। वो अपनी चुन्नी को खोलकर खुद को उसमें छिपाने की कोशिश कर ही रही थी कि किसी ने उसके ऊपर एक नीला छाता लगा दिया। समृद्धि ने चौकते हुए उस शख़्श पर निगाह डाली तो उसे एक हम उम्र युवक दिखा, जो उसे कुछ जाना-पहचाना तो लगा पर वो पूरी तरह से उस युवक से अवगत नहीं थी। इससे पहले की समृद्धि कुछ कहती उस युवक ने समृद्धि को छाता थमाते हुए कहा, "बारिश बहुत तेज़ है, छाता ले लीजिये नहीं तो बीमार हो जाएंगी।" समृद्धि ने हिचकिचाते हुए उससे कहा, "क्या मैं आपको जानती हूँ ?" उस युवक ने मुस्कुराते हुए अपनी शर्ट की स्लीव्स मोड़ते हुए कहा "मैं अमन हूँ। आप मुझे नहीं जानती पर मैं आपको जानता हूँ। वो मैंने अभी-अभी कॉलेज ज्वाइन किया है और मैं आपकी सिंगिंग का फैन हूँ। मेरी फैकल्टी अलग है, पर मैंने आपको कई बार सिंगिंग क्लास में सुना है।" समृद्धि ने मुस्कुराकर कहा "ओह, आई एम सॉरी। मैंने कभी ध्यान नहीं दिया।" "मुझमे ध्यान देने जैसा कुछ है ही नहीं तो आप ध्यान क्यों देंगी ?" समृद्धि को अमन की सरलता भा गयी और उसने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, अमन का व्यक्तित्व, शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों में आकर्षक था। उसकी आँखों में एक दयालुता भरी चमक थी और एक ईमानदार सी मुस्कान जो उसके व्यक्तित्व को और भी आकर्षक बना रही थी। समृद्धि ने उससे उसके बारे में सब कुछ जानने की कोशिश की और उसे पता चला कि अमन उसी के मुहल्ले में सिफ्ट हुआ है। उसके पापा का अभी हाल ही में कोलकाता स्थानांतरण हुआ है और वो अपने परिवार के साथ यहाँ आ बसे हैं। दोनों ने साथ-साथ सफर शुरू किया और ऐसे ही कॉलेज के दिन लड़कपन में निकलते चले गए। साथ आते-जाते दोनों को एहसास भी नहीं हुआ कि कब उन्हें एक-दूसरे की आदत लगी और अंतर्मन से दोनों ने एक-दूसरे के साथ जीवन बिताने का फैसला कर लिया। ऐसे ही एक बरसाती साँझ में हुगली के किनारे घूमते हुए अमन ने एक लाल गुलाब और एक चिठ्ठी समृद्धि के प्रिये लेखक रवींद्र नाथ टैगोर की किताब चित्रांग्दा में रखकर उसकी तरफ बढ़ा दी। समृद्धि के लिए ये चकित होने वाले बात नहीं थी, बस उसे ये शिकायत थी कि उसने इतनी देर क्यों कर दी। बहरहाल एक मुस्कान के साथ दोनों ने मित्रता से आगे की सीढ़ी चढ़ी और प्रेम के नए रंगों ने उनके आसमान को और भी नीला कर दिया। खुले विचारों के परिवार का होना भी जीवन में किसी वरदान से कम नहीं होता और समृद्धि भी खुद को भाग्यशाली मानती थी क्योंकि वो अपने बाबा और माँ से अपने दिल की हर बात खुलकर कर सकती थी। जैसे ही अमन को अपनी नौकरी का पहला बुलावा आया, उसने अपने घर में भी समृद्धि की बात कर डाली और दोनों परिवारों ने सहमति और खुशी-खुशी दोनों बच्चों की मर्जी को अहमियत देते हुए उनके रिश्ते के लिए हामी भर दी। दरवाजे पर हुई जोर की दस्तक ने समृद्धि को अतीत से खींचा और वो वर्तमान की धरा पर गिरी। सुहाना दरवाजे पर खड़ी थी और उसने पूछा, "माँ, रात के खाने के लिए क्या बना रही हो ? मेरे कुछ दोस्त आने वाले हैं, या तो कुछ बना दो या मैं कुछ ऑर्डर कर लेती हूँ।" समृद्धि ने कुछ पल के लिए सुहाना को देखा, देखने में वो बिल्कुल उसी के जैसी थी पर युवा समृद्धि उसके आस-पास कहीं भी नहीं थी। शायद ये आधुनिकता का असर था कि सुहाना में समृद्धि को ढूंढ़ना नामुमकिन सा लगता था। समृद्धि ने एक गहरी सांस ली और कहा, "तुम्हें तो हमेशा बाहर का खाने का कोई-ना-कोई बस बहाना चाहिए होता है। मुझे बस बता दो कितने लोग आ रहे हैं। मैं घर पर ही सबके लिए कुछ बना देती हूँ। "सुहाना ने मुँह बनाते हुए कहा, "मैं तो बस आपकी परेशानी कम करना चाहती थी पर आपको तो मज़ा आता है ना गर्मी में भी किचन की गैस स्टोव के आगे, तो बनाओ। खैर आपको जो अच्छा लगे बना दो। मुझे और आपको लेकर कुल पाँच लोग हुए।" समृद्धि ने हामी भरी और किचन की तरफ बढ़ गयी। अगले तीन घंटे समृद्धि किचन में लगातार काम करती रही और जब अंततः उसने डाइनिंग टेबल पर खाना लगा दिया तब जाकर उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव आये। समृद्धि अपने कमरे में वापस गयी और खिड़कियाँ खोलकर ठंडी हवा को खुद से टकराने दिया। हवा के झोंके ने उसे राहत पहुँचाई और उसने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद की। फिर जाने उसे क्या याद आया कि उसने अपनी पुरानी अलमारी खोली और कुछ ढूँढने लगी। धूल और सीलन की महक ने उसे खाँसने पर विवश कर दिया। उसने अपनी साड़ी के पल्लू से अपनी नाक को ढँका और फिर अलमारी के निचले भाग में हाथ डालकर कुछ ढूँढने लगी। जब उसने हाथ बाहर निकाला तो सफ़ेद कपड़े में बँधी एक चौड़ी सी पोटली निकली। समृद्धि ने बहुत ही संभाल कर उस पोटली को खोला तो उसमें एक दो पुराने कपड़े दिखे, कुछ स्टाम्प वाले कागज़ और सबसे नीचे दिखी रविंद्र नाथ टैगोर की किताब चित्रांग्दा। समृद्धि ने उस किताब को उठाकर अलग रखा और बाकी सारा का सारा सामान ज्यों-का-त्यों संभाल कर रख दिया। खिड़की से लगी मेज और कुर्सी पर बैठकर समृद्धि ने उस किताब को जाने कितनी देर तक निहारा और फिर काँपते हाथों से उसने उसके पन्नों को पलटा। वो सीधे उसी पन्ने तक पहुँची जहाँ उसने इतने साल तक अमन का खत और उस सूखे गुलाब को रखा था। हल्के हाथों से उसने उस गुलाब और पीले पड़ चुके उस खत को सहलाया, अनायास ही उसके आँखों में बाहर होती बारिश का पानी दिखने लगा और उसकी एक बूँद उस किताब पर जा कर गिरी। यादों का कारवां एकबार फिर अतीत के गलियारों में जा पहुँचा और उसने खुद को अमन की आँखों में मुस्कुराता हुआ देखा। दोनों कोलकाता की लोकल बस में बैठे थे और अमन उसे मुस्कुराते हुए एक टक देखे जा रहा था। अगले कुछ दिनों में ही उनकी शादी थी और परिवार की तरफ से अब ना मिलने की बात को अनसुना कर दोनों सबसे छिपकर मिलने आये थे। दोनों अपनी-अपनी बातें कर ही रहे थे कि आसमान में भरे बादलों ने उनका ध्यान खींचा और समृद्धि ने कहा, "चलो अब मैं जाती हूँ नहीं तो बारिश में फँस जाउंगी।" अमन ने सीट से उठती समृद्धि का हाथ पकड़ा और कहा "तो बारिश तो तुम्हें बहुत पसंद है ना। थोड़ा भींगने से क्या परहेज। ऐसे भी मैं तो साथ ही हूँ और ये बारिश तो हमारी सारथी समान है, हमारे प्रेम की शाश्वत गवाह।" समृद्धि अपनी जगह पर दुबारा से बैठती हुई बोली, "हाँ मुझे बारिश बहुत पसंद है और तुम साथ हो तो फिर डर कैसा, पर शायद तुम ये भूल रहे हो कि हमारे घरवालों को पता चला कि हमने उनकी बात काटी है तो वो फिर बात का बतंगड़ बनाएंगे और हर तरफ से मुझे ही सबकी बातें सुननी होंगी। तो अब ये हमारी ऐसे आखरी मुलाक़ात है।" अमन ने मुँह बनाते हुए कहा, "आखरी ?" मेरा मतलब ऐसे अब हम शादी के बाद ही फिर से घुमेंगे, समझे।" अमन ने समृद्धि का हाथ थाम कर उसकी आँखों में देखते हुए कहा "ठीक है मैडम। मैं सब समझ गया।" घर की चौक के पास दोनों अलग हुए और अमन ने मुस्कुराते हुए उसे अलविदा कहा। समृद्धि ने उसे इशारे से कहा की अब जाओ, पर अमन काफी देर तक उसे देखता रहा। बारिश अब अपनी रफ़्तार में थी और अंततः अमन जाने को मुड़ा। उसे मुड़ता देख समृद्धि भी पलट कर जाने लगी कि तभी एक शोर ने उसके पाँव जमा दिए। समृद्धि ने पलट कर देखा तो उसकी साँसे रुक गयी। एक डबल-डेकर बस सड़क के बीच रुकी थी और कई सारे लोगों ने उसे घेर रखा था। सड़क पर भीड़ बढ़ने लगी और समृद्धि अमन को ढूँढने लगी कि अभी-अभी तो वो यहीं था। उसने भी शोर सुना होगा वो भी परेशान होगा। समृद्धि भागकर उस ठहरी सड़क पर गयी और अमन को हर तरफ तलाशने लगी। तभी उसकी नज़र उस भीड़ के बीच से आते दृश्य पर पड़ी। वहाँ कोई अचेत पड़ा था, उसने उसी रंग की पैंट पहन रखी थी जो अमन ने पहनी थी। समृद्धि लोगों की भीड़ से टकराती हुई उस जगह पहुँची तो उसके चेहरे का रंग उड़ गया। अमन उस डबल-डेकर बस के आगे अचेत पड़ा था, उसकी आँखें आधी खुली थी और चेहरा और शरीर खून से लथपथ थे। समृद्धि भागकर उसके पास पहुँची और मदद के लिए चीखने लगी। कुछ लोग आगे

आये, यहाँ तक की पास से गुजरते एक डॉक्टर ने जल्दी-जल्दी आकर उसकी नब्ज देखी और फिर समृद्धि की तरफ देखकर 'ना' में सर हिला दिया। एक तरफ तो बारिश के पानी के साथ अमन का खून मिलकर बह रहा था, वहीं दूसरी तरफ समृद्धि के आँसू। जाने कितने दिनों तक समृद्धि उस पल की यातनाओं में कैद होकर रह गयी। उधर अमन दूसरे क्षितिज का यात्री बन चुका था। बस ड्राइवर ने अमन के ऊपर लापरवाही और तेज़ी से होती बारिश को ही उसकी मौत की वजह बताई और **बस चाँद सालों** की सजा का हक़दार बना। और इधर समृद्धि जीवन भर यादों की सजा से मुक्त नहीं हो पायी। हर पल वो उस एक पल को उस एक दिन को मिटाने की सोचती और हर दिन, हर पल में खुद को हारा हुआ पाती। जीवन किसी के लिए नहीं रुकता और समृद्धि ने भी अंततः माँ और बाबा की परेशानी और खुशियों की दुहाई के सामने सर झुकाकर कार्तिक से शादी कर ली। यूँ तो कार्तिक बहुत ही सुलझा हुआ और सामान्य सा इंसान था पर शायद इतना भी नहीं कि समृद्धि के अतीत को स्वीकार कर सके तो समृद्धि ने अमन को बस अपने तक रखकर अपने जीवन को आगे बढ़ा लिया। कार्तिक ने अभी दो साल पहले अपनी आखरी सांस ली, उसे दिल की बिमारी थी और हृदयाघात उसके जाने का कारण बना। अब समृद्धि के जीवन में वो और उसकी बेटी सुहाना थी। समृद्धि अपनी यादों को काफी पीछे छोड़ चुकी थी पर आज भी जब बारिश आती तो उसे अमन से हुई उस पहली मुलाकात और अमन के उस अंतिम दिन तक खींचकर ले जाती। एक तरफ तो आँखों में खुशी के लहर जागती वहीं दूसरी तरफ आँसुओं का सैलाब उसे डूबा ले जाता। समृद्धि अभी भी उन्हीं यादों की जद्दोजहद में बेचैन थी कि सुहाना की आवाज ने उसे यथार्थ के पास पहुँचाया। "माँ खाना निकाल दो।" समृद्धि ने 'चित्रांग्दा' को अपने तकिये के नीचे रखा और डाइनिंग टेबल की दिशा में बढ़ गयी। बाहर बारिश अपनी गति से धरती को सराबोर किये जा रही थी, अभी भी जाने कहाँ-कहाँ कितनी ही मीठी यादें और कितने ही आँसू उसके झंझावात के गवाह बन रहे थे।

*युसुफगंज, दरभंगा, बिहार।

खाली प्लॉट

डॉ. रंजना जायसवाल*

जानकीपुरम ! शहर के एक कोने में बसी एक कॉलोनी जो बड़े शहर में रोजी-रोटी की तलाश में, एक बड़े शहर में रहने की लालसा लेकर आए लोगों को छत देने के कारण बसाई गई थी। ऊँची-ऊँची गगनचुम्बी इमारतें, चौड़ी काली सड़कें, मॉल, भीड़ से भरे बाजार, बेबाक स्वछंद माहौल और शहरियत की गन्ध से गमकता नवाबों का यह शहर चुम्बक की तरह अपनी ओर खींचता। मालती जी पति के रिटायरमेंट के बाद यहीं बस गई थी। जब पहली बार वह अपने पति के साथ जमीन को देखने आईं थी तो उनकी आँखें छलछला गई थी। "इस पानी के टंकी के आस-पास यहीं-कहीं है।" "यहीं-कहीं !" पति की बात सुन वह आवाक रह गई थी। दूर-दूर तक खेत-ही- खेत और उन खेतों के बीच में पानी की विशाल टंकी जो उस कॉलोनी के शीघ्र बसने की उम्मीद जगा रही थी, चुपचाप खड़ी थी। पानी की वह विशाल टंकी मूकदर्शक बनी पति-पत्नी के वार्तालाप को सुन उन्हें चुपचाप ताक रही थी। शायद उसका इंसान नामक जीव से कभी-कभार ही वास्ता पड़ता था। सरकारी तंत्र अपनी रफ्तार से काम कर रहा था। विकास का दूर-दूर तक पता नहीं था। थोड़ी-थोड़ी दूर पर एक-एक हाथ के पत्थर लगे हुए थे जिन पर पेंट से कुछ नम्बर गुदे हुए थे। धान की जड़ें स्पष्ट देखी और महसूस की जा सकती थी। लोगों के इस बड़े शहर में बसने के सपनों को पूरा करने के लिए उन्हें आशियाना देने के लिए न जाने कितनों की रोजी-रोटी छीन कर इस शहर में इस तरह की न जाने कितनी कॉलोनियाँ बसाई गई थी। सुना था+ जब यह कॉलोनी बसाई गई थी तब दूर-दूर तक सन्नाटा पसरा रहता था। लोग दिन में भी इधर की ओर आने में घबराते थे। रिक्शे वाले भी इधर आने के नाम पर हाथ खड़े कर देते थे पर वक्त बदला और वक्त के साथ कॉलोनी की किस्मत भी... धीरे-धीरे कॉलोनी बसने लगी पर फिर भी बहुत सारे प्लॉट खाली पड़े थे। मालती जी ने जब इस कॉलोनी में घर बनाना शुरू किया तब गिनती के ही घर थे। मजदूरों के परिवारों ने खाली पड़े प्लॉटों में अपना बसेरा डाल रखा था। घर के मर्द और औरतें निर्माणाधीन घरों में मजदूरी करते और बच्चे अपने छोटे भाई-बहनों को संभालने और कॉलोनी में रहने वाले बाशिन्दों के घर जूठन माँजने और झाड़ू-पोछा लगाने का काम करते। सुनीता पन्द्रह साल से मालती जी के यहाँ काम कर रही थी। साँवला रंग, मजबूत कद-काठी, पैरों में चाँदी की पायल, हाथों में काँच की चूड़ियाँ, मांग में पाव भर सिंदूर...उसकी यात्रा सुबह साढ़े छः से शुरू होती। सुनीता आठ घरों में झाड़ू-पोछे और बर्तन धोने का काम करती थी। मालती जी का उससे कुछ खास लगाव था। "तू जब तक बर्तन धो रही है मैं चाय चढ़ा देती हूँ।" और मालती जी चाय बनाने में जुट जाती। "आंटी जी आपके हाथ की चाय पीकर आत्मा तृप्त हो जाती है। सुबह-सुबह अच्छी चाय मिल जाए तो दिन अच्छा बीतता है।" "बातें बनाना तो कोई तुमसे सीखे।" मालती जी झूठी झिड़की देते हुए कहती। पता नहीं क्या सोच कर सुनीता का चेहरे पर तनाव की लकीरें खींच आती। "सच कह रही हूँ आंटी जी, लोगों के यहाँ तो जुठे चाय के बर्तन में दुनिया भर का पानी और दो चम्मच दूध डालकर चाय खौला देते हैं। उबला मटमैला पानी भर ही लगता है। ना पीते बनता है और ना ही उगलते ! पता नहीं एक कप चाय में भी कितना पैसा बचा लेते हैं लोग ?" मालती जी उस पर अपनी जान लुटाए रहती थी। कॉफ़ी के पैकेट के साथ मिले एक बड़े से कप में वह नाक तक चाय भर कर देती और सुनीता दो बिस्कुट के सहारे वह चाय गटक जाती। "अरे जरा आराम से पी, मुँह जल जाएगा।" मालती जी उसे रोज टोकती। "तेरा बस चले तो चूल्हे पर बैठे-बैठे ही चाय पी ले। कप में नहीं, तेरे तो मुँह में चाय छाननी चाहिए। कितनी गर्म चाय पीती है कलेजा जल जाएगा। आराम से पीया कर..." सुनीता मुस्कुरा कर रह जाती। "आराम ! आराम हमारे जैसे लोगों की किस्मत में नहीं आंटी जी ...यहाँ तो घाट जाने से पहले भी काम करके जाना पड़ेगा। आठ घरों में काम करना है, फुर्सत कहाँ है आराम करने की।" उसकी बात सुन मालती जी का मन अजीब सा हो जाता। गलत तो नहीं कहा था उसने...गाँव से न जाने कितने सपनें लेकर वह शहर आई थी। बच्चों का अच्छे स्कूल में एडमिशन कराएगी और उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करेगी। उसका पति उसे कितना प्यार करता था। एक दिन उसी के कहने पर वह सब छोड़-छाड़ कर लखनऊ जैसे शहर में बच्चों के साथ चली आई थी पर बच्चों को लेकर जाती कहाँ ? गाँव से लाई हुई पूंजी धीरे-धीरे खत्म होने लगी थी। रामदीन ने शादी-ब्याह में लाइट उठाने का काम पकड़ लिया पर कब तक ? यह काम भी पक्का कहाँ था। लगन के समय ही यह काम हो पाता था और बाकी दिन ? पेट तो नहीं मानेगा ना... शहर की दुनिया गाँव की दुनिया से बिल्कुल अलग थी। गाँव में तो फिर भी ठीक था थोड़ा-बहुत अनाज भी पैदा हो जाता था पर शहर में तो नमक से लेकर आटा तक मोल लेना पड़ता था। बच्चों के खिले-खिले से रहने वाले चेहरे मुरझाने लगे थे। सुनीता का कलेजा उन चेहरों को देख मुँह को आ जाता। एक दिन उसने बड़े

ही दबे स्वर में अपने पति से कहा "मैं दिन भर घर में बैठे-बैठे उकता जाती हूँ। यहाँ तो कोई जान-पहचान का भी नहीं है जिससे दो बोल बोल लूँ। सोचती हूँ कुछ घरों में झाड़ू-पोछा का काम कर लूँ।" "चुपचाप घर में पड़ी रहो, तुम भी घर से निकल गई तो घर और बच्चों को कौन देखेगा।" सुनीता ने एक नज़र घर पर डाली। घर ! आस-पास के निर्माणाधीन मकानों से चुराई गई ईंटों से दीवारें और टीन से छवाई गई झोपड़ी में कुल अदद पाँच लोग रहते थे। सुनीता ने पुरानी साड़ी से ओट के लिए एक पर्दा लगा दिया था। गिनती के चार बर्तन और टिन का बक्सा, बस इतनी सी ही तो थी उसकी गृहस्थी, चोरी होने जैसा आखिर था ही क्या...सुनीता चुपचाप लेटी रही। जेठ की दुपहरी में तपती टिन से शायद उसका माथा भी गर्म हो गया था। वो गुस्से से बिफर पड़ी। "मनोज के बापू तुम्हारे काम का कोई भरोसा तो है नहीं, आज है कल नहीं। पेट तो यह नहीं समझता!" रामदीन के पास उसके सवालों का कोई जवाब नहीं था। सुनीता के सवालों के आगे उसने हथियार डाल दिए। कहता भी तो क्या सच तो यही था। सुनीता ने कॉलोनी के घरों में झाड़ू-पोछा, बर्तन का काम पकड़ने का मन पक्का कर लिया पर शायद किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। सुनीता कहाँ जानती थी कि उसका घर से निकाला हुआ कदम उसे हमेशा के लिए जिम्मेदारियों की गिरहों में जकड़ लेगा। रामदीन का काम वैसे भी कोई पक्का नहीं था। सुनीता के काम पर निकलने से उसने आपको कछुवे की तरह अपनी खोल में समेट लिया। सुनीता के लाए पैसों से वह मन भर शराब पीता और रोकने पर उसे मन भर पीटता। सुनीता चारों तरफ़ से घिर चुकी थी। बच्चों के भविष्य के लिए देखे सुनहरे सपने एक-एक कर टूट रहे थे। गाँव वापस लौटने के सारे रास्ते बंद हो चुके थे। महंगाई चरम पर थी, वह समझ नहीं पाती कि कहाँ और कैसे पैसे बचाएं ? बच्चों की पढ़ाई भी उसे डाहे पड़ी थी। जरूरतों के साथ उसके घर काम पकड़ने की रफ्तार भी बढ़ती जा रही थी। एक घर से पकड़ा हुआ काम अब आठ घरों तक पहुँच चुका था। मालती जी के यहाँ काम करते-करते पन्द्रह साल बीत गए थे। एक अजीब सा नाता बन गया था उन दोनों के बीच...घर में कुछ भी खाना बचता मालती जी कटोरा लेकर उसे देने पहुँच जाती। मालती जी दिन की बची हुई सब्जी को लेकर सुनीता की झोपड़ी पहुँच गई। कितनी सुंदर झोपड़ी थी उसकी... प्यार से बुहारी और संवारी हुई। झोपड़ी में टिम-टिम चमकती दीपक की लौ से पूरी झोपड़ी गुलज़ार थी। सुनीता लकड़ी के मंदिर में रखे अपने ईश के आगे हाथ जोड़े खड़ी थी और अपनी ख्वाहिशों का बोझ अपने ईश पर तेजी से लादती जा रही थी। बेचारी करती भी तो क्या जब सब तरफ से दरवाज़े बंद हो जाए तब एक ही दरवाज़ा दिखाई देता है। वैसे भी सपनें और आगे बढ़ने का अधिकार तो सभी को है। मालती जी को यूँ अचानक आया देख सुनीता चौक गई। "अरे आंटी जी आप ?" "तेरा मंदिर तो बहुत सुंदर है ?" "गुप्ताइन आंटी जी नया मंदिर ले आई थी। ये पुराना वाला ऐसे ही पड़ा था, हम उनसे मांग लिए..." उसकी पूरी गृहस्थी कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा जैसी ही थी। लोगों के घरों के कबाड़ और फालतू के सामान को झाड़-पोंछ कर और उन्हें जोड़-जोड़ कर उसने पूरी गृहस्थी बसा ली थी। तीन टांग वाले तख्त में ईंटों को जोड़ उसे एक नई टांग और तख्त को नया जीवन दे दिया था। घी, अचार और रसगुल्ले के खाली डिब्बों में नमक और मसाले भरकर जीवन में मिठास भरने की कोशिश की थी। सुनीता और सुनीता जैसी न जाने कितनी औरतों की जिंदगी ऐसे ही जोड़-तोड़ से कट जाती है और वह उफ्फ भी नहीं करती। बरसात के दिनों में गड्ढे में बसी उसकी गृहस्थी घुटने तक पानी में डूब जाती। न जाने कितनी ही बरसाती रातों में चूते छप्पर को सहजने में उसके पूरे परिवार की पूरी रात भूखे ही कट जाती थी। मालती जी को जब यह पता चली तब से वह हर बारिश में चौकन्नी रहती। "सुनीता तू घर संभाल, खाने की चिंता मत कर, तेरा खाना मैं पहुँचा दूँगी।" बारिश हर साल आती और मालती जी की रसोई सुनीता के लिए हमेशा तैयार रहती। यह सिलसिला वर्षों से चला आ रहा था। मालती जी कभी भगोना भर तहरी तो कभी मसाले वाली बाटी बनाकर उस तक पहुँचा देती। इस बीच उसने कॉलोनी में ना जाने कितने घर बदल डाले थे। हर दूसरे-तीसरे साल घर के पते बदल जाते हैं। कॉलोनी तेजी से बसती जा रही थी। खाली प्लॉट कम ही रह गए थे। बंजारों की तरह जीवन जीते मजदूर दूसरों के घर बनाते-बनाते खुद बेघर होते जा रहे थे। सुनीता के लिए समस्या बढ़ती जा रही थी। इस कॉलोनी से एक अजीब सा नाता जुड़ गया था। यहाँ से उजड़े तो फिर नई जगह पर बसना कोई आसान तो नहीं था ? पौधे हो या इंसान एकबार उखाड़ कर दोबारा कहाँ पनप पाते हैं। इस कॉलोनी में अब तक वह पाँच घर बदल चुकी थी। घर... चलते-फिरते घर...जिनके पते वक्त के साथ बदल जाते थे। मालती जी कहती तो कुछ नहीं थी पर वह भी डर रही थी कॉलोनी के सारे प्लॉट जब बन जाएंगे तो सुनीता कहाँ रहेगी। सबके अपने-अपने स्वार्थ थे। स्वार्थ ही तो थे ! नई कामवाली को लगाने में दुनिया भर की किच-किच थी। सुनीता को तो देखा समझा हुआ था। वक्त के साथ मालती जी सुनीता की नस-नस पहचानने लगी थी। उसके तेवर से भी वाकिफ हो गई थी। वैसे भी ताली एक हाथ से कहाँ बजती है। सुनीता जिस प्लॉट पर घर बनाकर रहती थी उसके मालिक ने उसे प्लॉट छोड़ने का अल्टीमेटम दे दिया था। सुनीता समझ नहीं पा रही थी कि वह प्लॉट छोड़कर कहाँ जाए क्योंकि प्लॉट छोड़ने से सिर्फ घर ही नहीं छूटेगा उसका काम भी छूट जाएगा। तभी एक अच्छी खबर सुनने को मिली मालती जी की पड़ोसन शर्मा जी की बेटी का प्लॉट खाली पड़ा था। शर्मा जी की बेटी की सिर्फ दो बेटियाँ ही थी जो विदेशों में बस गई। उन्होंने इन्वेस्टमेंट के नाम पर उस प्लॉट को छोड़ रखा था। मिट्टी के भाव से ली गई जमीन की कीमत अब आसमान को छू रही थी। सुनीता ने मालती जी से आग्रह किया कि वह शर्माइन से बात करें। शर्माइन मतलब शर्मा भाई साहब की पत्नी... सुनीता और उसके जैसे न जाने कितने कामवाली मकान मालिकों को ऐसे ही नाम से पुकारते थे और उनकी इस खास भाषा को सब समझ भी लेते थे। पीछे वाली गली में रहने वाले डॉक्टर अजय की पत्नी बिना डिग्री के डॉक्टराइन बन चुकी थी। गुप्ता जी की पत्नी गुप्ताइन और पांडे जी की पत्नी पंडिताइन...मालती जी ने सुनीता की गरीबी का वास्ता दे उस खाली प्लॉट पर सुनीता के रहने देने के लिए शर्माइन से आग्रह किया। शर्माइन ने दरियादिली दिखाते हुए सुनीता को उस प्लॉट पर रहने की इज़ाजत दे दी। सुनीता ने अपना डेरा-डंडा उठाया और उस प्लॉट में शिफ्ट हो गई। सुनीता का नया ठिकाना पुराने प्लॉट से ज्यादा दूर नहीं था। मालती जी को सुनीता के जाने का बेहद अफसोस था। उन्हें अफसोस इस बात का नहीं कि वह नजरों से दूर हो गई थी। अफसोस इस बात का कि वह आँख के सामने रहती थी। दिन भर कभी भी कोई काम पड़ता तो मालती जी उसके बच्चों को दौड़ा देती थी। मालती जी भी क्या करती ? बहू-बेटे के रहते भी वह कितनी अकेली थी ? सबके अपने-अपने दुख और दर्द थे। पर हर चीज की अपनी एक कीमत होती है। सुनीता को शर्माइन के घर में झाड़ू-पोछे काम करने का फरमान जारी कर दिया गया। तनख्वाह के नाम पर उसके हाथ पर एक रुपए भी नहीं रखे जाते थे। आखिर उसे प्लॉट पर रहने की कुछ तो कीमत चुकानी ही थी। सुनीता ने एक दिन बड़े ही दबे और दुखी स्वर में यह बात मालती जी को बताई। मालती जी ने जब यह बात सुनी तो उन्हें बेहद दुख हुआ। एक गरीब का हक मार कर कोई भला कैसे रह सकता है पर वह शर्माइन से भी कुछ नहीं कह सकती थी। उन्होंने सुनीता को समझाते हुए कहा "कोई मकान किराए पर लेकर रहती तो पैसे देती ना और बड़े शहरों में तो वैसे भी किराए के मकान बहुत महंगे हैं। दो हज़ार में सौदा बुरा नहीं है।" सुनीता जीवन की सच्चाई जानती थी कभी-कभी आश्वासन के फाहे भी जख्मों को भर नहीं पाते पर मजबूरी जो ना कराए। प्लॉट काफी गड्ढे में था। बरसों-बरस उसने न जाने कितने मौसम देखे थे। मिट्टी सूख कर सख्त हो चुकी थी। कॉलोनी की सड़क जितनी बार बनती प्लॉट दिन पर दिन गहरे गड्ढे में जाता जा रहा था। दिक्कतें बहुत थी पर एक गरीब आदमी के

सर छुपाने के लिए काफी जगह थी। दो हज़ार स्क्वायर फीट की जमीन कोई छोटी जमीन नहीं थी। बच्चे बड़े हो चुके थे, अब एक झोपड़ी में रहना संभव नहीं था। सुनीता के बढ़ते बच्चों के साथ उनकी जरूरतें बढ़ती जा रही थी। देर रात पढ़ाई करने के लिए उन्हें एकांत की जरूरत थी। सुनीता भी कहाँ हारने वाली थी। देखते ही देखते उसने दो झोपड़े और खड़े कर दिए। बच्चों के चेहरे की खुशी और बढ़ गई। आज सुबह से ही सुनीता का मन किसी काम में नहीं लग रहा था। मन कुछ उखड़ा-उखड़ा सा लग रहा था। मालती जी ने चोर निगाहों से उसकी ओर देखा। कुछ तो था जिसे सुनीता को बेचैन कर दिया था। "क्या हुआ सुनीता तबियत ठीक तो है?" प्यार के दो शब्द सुन सुनीता भर-भरा कर रो पड़ी। मानो किसी सूखे प्रदेश में बारिश की चंद बूंदे पड़ गई हो। मालती जी किसी अनहोनी की आशंका से डर गई। अभी कुछ दिनों पहले ही तो उसका बेटा कमाने के लिए बाहर गया था। कहीं उसके साथ कुछ या फिर हमेशा की तरह रामदीन से कहा-सुनी तो नही हो गई। कितनी बार शराब के नशे में उसने सुनीता को पीटा था। मालती जी ने कितनी बार बेटे-बहू से छिपाकर उसे कभी हल्दी-दूध तो कभी नीले निशानों के लिए मलहम दिया था। साड़ी के छोर को मुँह में दबाकर उसने अपनी रुलाई को रोकने का प्रयास किया पर दिल के भाव सारे बंधन को तोड़ झर-झरा कर आँखों से बह निकले। सुनीता को इस तरह रोते देख मालती जी वही उसके पास जमीन पर बैठ गई। "क्या हुआ सब ठीक तो है ना?" "आंटी जी मनोज, मनोज की बहुत याद आ रही है।" "तू भी ना बिल्कुल पागल है। मैं तो डर ही गई थी। तुम्हारा बेटा बहुत समझदार है। अपनी माँ का दुख दूर करने के लिए बाहर कमाने के लिए गया है। तुम ऐसे रोओगी तो बेटा कैसे रह पाएगा।" "बात तो आप सही कह रही है आंटी जी पर माँ के दिल को कैसे समझाऊँ? आंटी जी मनोज ने मोबाइल पर ये स्टेटस लगाया है।" उसने अपने स्मार्ट फोन को मेरे आगे सरका दिया। स्याह रात में चमकते चाँद की तस्वीर और नीचे कुछ शब्द झिलमिला रहे थे। "घर बहुत याद आ रहा है।" मालती जी का मन का एक कोना दरक सा गया। स्वभाविक ही था वह सोच रही थी हम स्त्रियों की किस्मत में घर कहाँ लिखे होते हैं। लिखे होते हैं तो सिर्फ मायका और ससुराल... उन चारदीवारियों में अपने हिस्से का कोना भी कहाँ मयस्सर होता है पर प्लॉट से चुराई गई ईंट, गारा, सीमेंट और टिन की पुरानी चादर से बनाएं उस आशियाने के प्रति ऐसा मोह सोच कर उनकी आँखें भर आई। घर सिर्फ ईंट और गारे से कहाँ बनता है? आज यह बात बेहतर ढंग से समझ में आ रही थी। सुनीता और सुनीता जैसे ना जाने कितनों की किस्मत में ऐसे घर हिस्से में आते हैं जिसमें ना जमीन उनकी होती है और ना आसमान, उनका होता है पर घर और घर से जुड़ी हुई यादों का मोह तो होता ही है। हर उखड़ते घर और फिर से बनाए गए घरों में एक कोना हमेशा खाली रहता है क्योंकि उन्हें भरना होता है नए संघर्षों से, नई उपलब्धियों से और नई-पुरानी यादों से...मनोज को सिर्फ घर याद नहीं आ रहा था बल्कि उस घर से जुड़ी यादें उसे बेचैन कर रही थी। आज उसके इस नए ठिकाने पर उसकी राह तकने वाला कोई नहीं था। हर आहट के साथ दरवाजे पर इंतजार करती माँ की वह दो जोड़ी आँखें नहीं थी जो एक घर की कल्पना को साकार करने के लिए पर्याप्त थी। सुनीता के मुँह से कितनी बार सुना था। जब वह गुप्ता जी के प्लॉट पर रहती थी तब छोटा वाला बच्चा पैदा हुआ था। श्रीवास्तव जी के प्लॉट पर रहते वक्त उसके पति का पैर टूटा था। कितनी सारी अच्छी-बुरी यादें थी उसकी उन खाली पड़े जमीनों के साथ जो कभी उसकी अपनी ना थी। उन झोपड़ियों में कोई दरवाजे नहीं थे, थे तो एक झीना सा पर्दा जिसके आर-पार दुनिया को देखा जा सकता था। ठीक भी था वैसे भी किसी ने कहा है, "दरवाजे खुला रखो वे लौट सकते हैं। उम्मीद मत रखो बस उन्हें खुला छोड़ दो। दरवाजों का खुला होना खुद एक उम्मीद है। शायद सुनीता को भी उम्मीद थी इस झोपड़ी के भाग्य बदलने की और एक बेहतर भविष्य की। घर में अपना घर ढूंढने वाला मालती जी का मन सुनीता के दर्द को महसूस कर आज उन्हें अपना दर्द कुछ कम महसूस कर रहा था।

*लाल बाग कॉलोनी, छोटी बसही, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश।

मानवता का रिश्ता

पुष्पेश कुमार पुष्प*

काफी अंतराल के बाद घर आने का मौका मिला था। इतने वर्षों में हमारा शहर काफी बदल गया था। सब कुछ बदला बदला सा लग रहा था। यहाँ आते ही पुरानी यादें भी ताजा हो गयी। अपने मित्रों और सहकर्मी से मिलने की भी इच्छा जागी। कई लोगों को तो मैं अब पहचान भी नहीं पाऊंगा और कई लोग तो इस शहर से चले भी गये होंगे लेकिन एकबार अपने लोगों से मिलने की इच्छा को मैं रोक नहीं पाया। कुछ लोगों से मुलाकात हो गयी और जो इस शहर में नहीं थे उनसे मिल न सका। एक दिन अपने बचपन के एक मित्र से मिलकर आ रहा था कि अचानक शहर के चौराहे पर स्थित एक मंदिर के चबूतरे पर बैठे एक व्यक्ति को देखकर रुक गया। चेहरा जाना-पहचाना प्रतीत हो रहा था लेकिन उस व्यक्ति के रहन-सहन को देखकर नहीं लग रहा था कि जो मैं समझ रहा हूँ, यह वही व्यक्ति है या कोई और। यही सोचकर मैं उसे गौर से देखने लगा। उसके धँसे हुए गाल और धँसी आँखों के ऊपर मोटे लेंस का चश्मा। "नहीं, नहीं! यह विजय बाबू नहीं हो सकते। उनकी हालत इतनी बुरी कैसे हो सकती है? जरूर यह कोई और होगा। यह जरूरी थोड़े ही है कि यह विजय बाबू हों। उनसे मिलते-जुलते चेहरे का और आदमी नहीं हो सकता क्या? जरूर यह मेरा भ्रम है।" मैं खड़ा सोचने लगा। विजय बाबू मेरे साथ ही बैंक में नौकरी करते थे। बहुत ईमानदार और मजाकिया स्वभाव के व्यक्ति थे। उनकी ईमानदारी की लोग मिसाल दिया करते थे। उनके चेहरे पर कभी उदासी नहीं रहती थी। सदैव हँसते-मुस्कुराते रहते थे। उनके साथ काम करने में बड़ा मजा आता था। काफी समय तक साथ काम करते रहे। फिर अचानक मेरा तबादला गुवाहाटी हो गया। काम की अधिकता के कारण न मैं बाढ़ आ पाता और न अपने लोगों से मिल पाता। इस प्रकार मैं अपने शहर के लोगों से कटता चला गया। लेकिन आज उस व्यक्ति को देखते ही विजय बाबू की याद आ गयी। मैं दुविधा में पड़ गया और उस व्यक्ति के करीब जाकर खड़ा हो गया। वह व्यक्ति भी मुझे गौर से देखने लगा और बोला - "सुधीर!" उनके मुँह से अपना नाम सुनकर मैं अवाक रह गया। अब मुझे विश्वास हो गया कि मेरा अनुमान सही था। यह विजय बाबू ही हैं। "विजय बाबू! ये क्या हाल बना रखा है?" मैं उन्हें गौर से निहारते हुए बोला। "आ मेरे करीब बैठ। सब खड़े-खड़े ही पूछ लेगा।" विजय बाबू अपने करीब बैठने का इशारा किया। मैं उनके करीब जाकर चबूतरे पर बैठ गया। वे बोले - "तू एकदम नहीं बदला। बड़े लम्बे अंतराल के बाद मिला है। अभी कहाँ है?" "अभी गुवाहाटी में ही हूँ। लगता है वहीं से रिटायर करूँगा। घर आने का समय नहीं मिलता। काफी प्रयास के बाद घर आने की छुट्टी मिली है। मैं आपसे मिलने ही वाला था कि मुलाकात हो गयी।" मैं बोला। "चल जहाँ भी रह, सुखी जीवन बिता। यही मेरी ईश्वर

से कामना है।" विजय बाबू बोले। "पर आपकी ये हालत कैसे हो गयी ?" मैं उन्हें घूरते हुए बोला। मेरे प्रश्न सुनकर उन्होंने मौन धारण कर लिया। "आपके बच्चे क्या कर रहे हैं ?" मैंने प्रश्न किया। "बड़ा लड़का रेलवे में जूनियर इंजीनियर है।" वे बोले। "तब तो आपके पास पैसों की कोई कमी नहीं है। आपकी पेंशन तो बैंक में धरी-की-धरी रह जाती होगी। फिर आप ऐसी बदतर जिंदगी क्यों जी रहे हैं ? क्या सारे रुपए ऊपर साथ लेकर जायेंगे।" मैं बोला। मेरी बातें सुनकर वे मुस्कुराकर रह गये। "चलिये ! आज आपके घर चलता हूँ। वहीं चाय-नाश्ता करूँगा।" मैं उत्साहित स्वर में बोला। "सुधीर ! सब कुछ खत्म हो गया। घर के नाम पर एक छोटी-सी झोपड़ी है गाँव में। चाय पीना तो दूर तू वहाँ बैठ भी न पाएगा।" वे उदास स्वर में बोले। "आप भी अच्छा मजाक कर लेते हैं। मजाक करने की आपकी आदत गयी नहीं।" मैं मुस्कुराते हुए बोला। "सच कह रहा हूँ, अब सब कुछ खत्म हो गया। तेरी भाभी और एक छोटी लड़की के साथ किसी प्रकार जीवन बिता रहा हूँ। गाँव में ही एक छोटी-सी पारचून की दुकान खोल रखी है। उसी कमाई से गुजर- बसर होती है।" वे बोले। यह सुनकर मैं चौंका। बोला- "आपकी पेंशन और बाकी रुपए कहाँ गये ?" मेरे प्रश्न सुनकर वे उदास हो गये और बोले - "जिसके लिए अपने ईमान को बेच डाला। आज उसे ही हमें देखने की फुरसत नहीं है।" "मैं आपके कहने का मतलब समझ नहीं पाया ? फिर जब आप गाँव में रहते हैं, तो यहाँ शहर में क्या कर रहे हैं ?" मैं उन्हें अजीब निगाहों से देखते हुए बोला। "शहर से कुछ सामान की खरीददारी करने आया था लेकिन दुकानदार ने उधार देने से मना कर दिया। जेब में फूटी कौड़ी भी नहीं है। कुछ देर आराम करने के बाद पैदल ही अपने गाँव चला जाऊँगा। बाकी बातें सुनकर क्या करेगा ? बीती बातों को याद करने से दर्द के अलावा मिलता ही क्या ?" इतना कहते-कहते उनकी आँखें डबडबा गयी। मानो मैंने उनकी दुखित रग पर हाथ रख दिया हो। "आप मुझे पराया समझ रहे हैं। मैं आपका अपना ही हूँ। मुझसे कुछ न छिपाइये। आखिर मेरे जाने के बाद आपके साथ क्या हुआ ? मुझे विस्तार से बताइये। अपने छोटे भाई से कुछ न छिपाइये।" मैं उनके कंधे पर हाथ रखते हुए बोला। वे अंतहीन उदासी में खोकर बोले - "तेरे जाने के बाद सब कुछ ठीक ही चल रहा था। बेटा इंजीनियर बनना चाहता था लेकिन बैंक का एक छोटा-सा क्लर्क बेटे को इंजीनियर बनाने के लिए कहाँ से लाखों रुपए लाता ? मैंने अपने बेटे को समझाया था कि इंजीनियर के अलावा कुछ और बन जा किन्तु उसने तो इंजीनियर बनने का निश्चय कर लिया था। उसकी जिद के आगे मैं विवश हो गया। बैंक का कैशियर होने के नाते रुपए का स्टॉक मेरे ही हवाले था। मैंने अपने बेटे की जिद को पूरा करने के लिए बैंक के रुपए का गबन कर लिया। नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। जेल भी जाना पड़ा। पेंशन आदि भी मिलने से रहा। घर कोर्ट-कचहरी में बिक गया। बेटा इंजीनियर बन गया। सोचा था कि जेल से छूटने के बाद अपने दिन भी सुख से बीतेंगे।" "फिर क्या हुआ ?" मैंने प्रश्न किया। "होना क्या था ? जो मेरी किस्मत में लिखा था, वही हुआ।" वे बोले। "मैं कुछ समझा नहीं।" मैं उनकी ओर देखते हुए बोला। "इंजीनियर बनते ही उसके पर लग गये। वह अपनी पसंद की लड़की से विवाह कर लिया और अपने परिवार को कभी देखने तक भी नहीं आया। जिसका भविष्य बनाने के लिए अपने ईमान- धर्म को बेच दिया, वही बेगाना हो गया। जिंदगी गुजारने के लिए कुछ तो करना पड़ता, सो गाँव में बची एक छोटी-सी जमीन पर झोपड़ी बनाकर अपना बसेरा बना लिया। उसी में एक छोटी-सी दुकान से घर का खर्चा चलता है।" वे निराश स्वर में बोले। "यह तो आपके साथ बहुत बुरा हुआ। आप उसके पास जाते हैं कि नहीं।" मैं बोला। "जाता ही रहता हूँ उसके पास लेकिन उसे मुझसे मिलने की फुर्सत कहाँ है ? भिखारी की तरह बहू के आगे सहायता के लिए हाथ आगे बढ़ा देता हूँ। वह मुझे देखते ही भड़क जाती है। वह बड़ी बेशर्मी से कहती है कि चले आते हैं मुँह उठाकर भीख माँगने। यह कोई धर्मशाला है जो बार-बार यहाँ चले आते हैं। बेटे की प्रतिष्ठा का भी तो ख्याल कीजिए। उसके यहाँ जाने का तो मन नहीं करता लेकिन मजबूरी है ? बेटी का विवाह जो करना है। मेरे पास अब बचा ही क्या है ?" वे बोले। "तो आप बेटे से उम्मीद करते हैं कि शादी के नाम पर वह आपकी मदद करेगा।" मैंने प्रश्न किया। क्या करूँ ? बेटी तीस साल की हो गयी है। उससे आरजू-मिन्नत करता हूँ कि शायद बहन की शादी के नाम पर पिघल जाए लेकिन वह तो बहू के इशारों पर नाचता है। माँ-बाप तो दूर उसे अपनी जवान बहन भी दिखाई नहीं देती। अब उससे किसी प्रकार की सहायता की उम्मीद करना ही छोड़ दिया है। न चाहते हुए भी मुझे गलत करना पड़ा और मुझे इसकी सजा भी मिल गयी लेकिन अब मेरी मासूम-सी बच्ची का भविष्य क्या होगा ? यह सोचकर मैं कांप जाता हूँ। क्या करूँ कुछ समझ में नहीं आता ? लगता है रेल की पटरी पर सो जाऊँ। जवान बेटी को देखकर मन किसी अनहोनी की आशंका से उठता है।" सुधीर बाबू की बातें सुनकर मेरा रोम- रोम कांप गया। सुधीर बाबू के जीवन की नैय्या बीच भँवर में फँसी थी। उसे किनारे पर लाने वाले ने ही अपना मुँह फेर लिया था। सुधीर बाबू ने जिस पेड़ को सींचने के लिए अपने ईमान को बेच दिया, वही पेड़ उन्हें छाया देने से इंकार कर दिया। बीच भँवर में फँसी उनके जीवन की नैय्या को कौन पार लगाएगा ? यह सोचकर मैं परेशान हो गया। "नहीं, नहीं ! मैं बीच भँवर में फँसी उनके जीवन की नैय्या को डूबने नहीं दूँगा। मैं उनकी नैय्या को किनारे पर लाऊँगा। खून का रिश्ता न सही लेकिन मानवता के नाते उनकी मदद कर ही सकता हूँ।" और मैंने मन-ही-मन निश्चय कर लिया कि सुधीर बाबू को टूटकर बिखरने नहीं दूँगा। "सुधीर बाबू ! आपका बेटा न सही, मैं आपकी सहायता करूँगा। मैं आपकी बेटी की शादी का पूरा खर्च वहन करूँगा। आप चिंता करना छोड़ दीजिए। आप बस शादी की तैयारी कीजिए। आपका छोटा भाई आपके साथ है।" मैं उत्साहित स्वर में बोला। वे मुझे अजीब निगाहों से देखते हुए बोले - "नहीं, नहीं ! मैं तुम्हारी सहायता नहीं ले सकता। मैंने तुम्हारे लिए क्या किया, जो तुम पर अपनी बेटी की शादी का बोझ डालूँ। जिसके लिए अपना सब कुछ खोया, वही अपना खून पराया हो गया। नहीं चाहिए मुझे तुम्हारी मदद। मुझे शर्मिंदा न करो।" सुधीर बाबू एक अंतहीन उदासी में बोले। "नहीं, आप मुझे यह सब करने से रोक नहीं सकते। केवल एक कोख से जन्म लेने से ही अपनापन का रिश्ता कायम नहीं होता बल्कि रिश्ता तो किसी के साथ भी बनाया जा सकता है। वह रिश्ता है मानवता का। मानवता का रिश्ता खून के रिश्ते से भी अटूट होता है। आप कुछ न कहेंगे। इसी बहाने एक पुण्य का काम कर लेने दीजिए। लीजिए मेरा फोन नम्बर और शादी की तारीख तय होते ही मुझे फोन कर दीजिएगा। अपने छोटे भाई को निराश मत कीजिए।" मैं उन्हें प्रेम भरी निगाहों से देखते हुए बोला। मेरी बातों को सुनकर उनकी आँखों से आँसुओं की बूंदें टपकने लगी। मैं उनके आँसुओं को पोंछते हुए बोला- "यह क्या ? आपकी आँखों में आँसू।" वे मुस्कुराते हुए बोले - सुधीर मेरे भाई ! ये खुशी के आँसू हैं। इन्हें बहने दो। मैं तुम्हारा एहसान कैसे चुकाऊँगा ? " "इसमें एहसान की क्या बात है ? आपकी बेटी भी तो मेरी बच्ची के समान है। फिर इस अपनापन के रिश्ते में एहसान कहाँ से आ गया ? आइये आपको आपके गाँव जाने वाली बस में बैठा देता हूँ। आप पैदल नहीं जायेंगे। ये कुछ रुपए रख लीजिए, आपके काम आयेंगे।" और मैंने रुपए उनकी जेब में डाल दिया। उनकी आँखों में अपनापन का भाव साफ झलक रहा था, तो मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो अपने जीवन में पहली बार कोई बड़ा काम करने जा रहा हूँ, जो अभी तक नहीं कर पाया था। मैं अपनी इस खुशी से फूला नहीं समा रहा था। बस आ गयी थी। उन्हें बस में बिठा दिया। बस में बैठते ही वे अपलक नेत्रों से मुझे देखते अपने गाँव की ओर चले जा रहे थे और मैं उन्हें एकटक देखता रह गया।

*विनीता भवन, निकट बैंक ऑफ इंडिया,
काजीचक, सवेरा सिनेमा चौक, बाढ़ (बिहार)।

संस्थान की गतिविधियाँ

हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमती सुमन पाठक, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, खादी बोर्ड, राँची का स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी । साथ में हैं कार्यक्रम के अतिथि श्री केशव भगत, वरिष्ठ पत्रकार, नगड़ी, राँची ।

दीप प्रज्वलित कर हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह कार्यक्रम का उद्घाटन करतीं मुख्य अतिथि श्रीमती सुमन पाठक, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, खादी बोर्ड, राँची, संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं कार्यक्रम के अतिथि श्री केशव भगत, वरिष्ठ पत्रकार, नगड़ी, राँची ।

संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अनुभागों में से अधिक पत्राचार करने वाले सम्वर्ग में सीम अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते मुख्य अतिथि श्रीमती सुमन पाठक, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, खादी बोर्ड, राँची, संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं कार्यक्रम के अतिथि श्री केशव भगत, वरिष्ठ पत्रकार, नगड़ी, राँची ।

संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अनुभागों में से कम पत्राचार करने वाले सम्वर्ग में पीसीटी अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते मुख्य अतिथि श्रीमती सुमन पाठक, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, खादी बोर्ड, राँची, संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं कार्यक्रम के अतिथि श्री केशव भगत, वरिष्ठ पत्रकार, नगड़ी, राँची ।

संस्थान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह में राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अनुभागों में से वैज्ञानिक अनुभागों में कीट विज्ञान अनुभाग को राजभाषा चलशील्ड प्रदान करते मुख्य अतिथि श्रीमती सुमन पाठक, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, खादी बोर्ड, राँची । साथ में हैं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी एवं कार्यक्रम के अतिथि श्री केशव भगत, वरिष्ठ पत्रकार नगड़ी, राँची ।

हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य समारोह में उपस्थित वैज्ञानिकों / अधिकारियों / कर्मचारियों का एक दृश्य ।

संस्थान की गतिविधियाँ

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के स्थापना दिवस में उप निदेशक (रा.भा.)/सहायक निदेशक (रा.भा.) वाले कार्यालय में इस संस्थान द्वारा राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु श्रीमती पद्मिनी सिंगला, भा.प्र.से. , संयुक्त सचिव, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार से के.रे.बो.राजभाषा शील्ड प्राप्त करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी ।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के स्थापना दिवस में हिन्दी कर्मचारी रहित वाले कार्यालय में इस संस्थान के अधीनस्थ कार्यालय, चाईबासा द्वारा राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु श्रीमती पद्मिनी सिंगला, भा.प्र.से. , संयुक्त सचिव, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार से के.रे.बो. राजभाषा शील्ड प्राप्त करते कच्चा माल बैंक, चाईबासा के सहायक सचिव (तक.) श्री राममोहन प्रामाणिक ।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के स्थापना दिवस में श्रीमती पद्मिनी सिंगला, भा.प्र.से., संयुक्त सचिव, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार से के.रे.बो. सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक का पुरस्कार प्राप्त करते इस संस्थान के वैज्ञानिक-डी डॉ.कर्मवीर जेना ।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के स्थापना दिवस में श्रीमती पद्मिनी सिंगला, भा.प्र.से. , संयुक्त सचिव, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार से 'मेरा रेशम मेरा अभिमान' कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने हेतु एम.आर.एम.ए. पुरस्कार प्राप्त करते इस संस्थान के वैज्ञानिक-बी श्री हरगोपाल दत्ता ।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के स्थापना दिवस में श्रीमती पद्मिनी सिंगला, भा.प्र.से. , संयुक्त सचिव, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार से के.रे.बो. सर्वश्रेष्ठ प्रशासनिक कर्मचारी का पुरस्कार प्राप्त करते इस संस्थान के अधीक्षक (प्रशा.) श्री सुहैल अख्तर ।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर के स्थापना दिवस में श्रीमती पद्मिनी सिंगला, भा.प्र.से., संयुक्त सचिव, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार से के.रे.बो. सर्वश्रेष्ठ तकनीकी कर्मचारी का पुरस्कार प्राप्त करते इस संस्थान के वरिष्ठ तकनीकी सहायक श्री विष्णु दयाल महतो ।

संस्थान की गतिविधियाँ

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में योगाभ्यास करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी तथा वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारी ।

इस संस्थान में संस्थापित इंक्यूबेशन सेन्टर में कार्य करने हेतु संस्थान एवं संथालपरगना ग्राम रचना संस्थान, गोड्डा के साथ एम.ए.यू. का एक दृश्य ।

मेरा रेशम मेरा अभिमान' कार्यक्रम के दौरान इस संस्थान द्वारा ओटार, चक्रधरपुर (झारखण्ड) में महिलाओं के लिए आयोजित समर्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम का अवलोकन करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी । साथ में हैं इस संस्थान के वैज्ञानिक-बी श्री आशु कुमार ।

संस्थान के प्रक्षेत्र में पायलट स्टडी एग्रो फॉरेस्टी के तहत गेंदा फूल के लगभग 1000 एवं ग्लेडियोलस के लगभग 600 पौधों का रोपण किया गया । इसी प्रक्षेत्र में कीटपालन किए जा रहे पाँचवें स्टेज के तसर रेशमकीट को दिखाते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी ।

इस संस्थान द्वारा मचकोट, बस्तर, छत्तीसगढ़ में आयोजित 'मेरा रेशम मेरा अभिमान' कार्यक्रम में श्री अक्षय कश्यप, फोरेस्ट रेंजर को पुष्प गुच्छ से स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी । साथ में हैं इस संस्थान के वैज्ञानिक-डी डॉ.विशाल मित्तल ।

'मेरा तिरंगा मेरा अभिमान' कार्यक्रम के तहत इस संस्थान द्वारा आयोजित रोड शो का एक दृश्य ।

मीडिया सुर्खियाँ

व्यंग्य

बाबू – हास्य व्यंग्य

विनोद कुमार विक्की*

पृथ्वी पर जब मेरा पदार्पण हुआ तो हमारे माता-पिता रिश्तेदारों ने हमें पालने से पहले मुगालता पाल लिया। माँ को लगा मेरा बेटा डॉक्टर बनेगा, तो पूज्य पिताश्री मुझमें अभियंता का भविष्य तलाशने लगे। बड़ी बहन आईएएस का तो बुआ वर्दी धारी बनने की गैर-आधिकारिक घोषणा तक कर बैठी। सभी को हमारे गीले नैपकिन और कच्छा की बजाय सूखे कैरियर की चिंता ज्यादा थी। नामकरण षष्ठी पूजा के दौरान पंडित जी को ना जाने प्रभु श्रीकृष्ण की तरह हमारे मुखमंडल में कौन-सा ब्रह्माण्ड दिख गया कि उन्होंने तत्क्षण ही मुझे 'भविष्य में बड़ा आदमी' बनने की घोषणा कर डाली। कितना बड़ा आदमी बनूँगा शायद इसका पैमाना ना तो पुरोहित जी के पास था और ना हमारे घर वाले इसका मूल्यांकन कर हमारी गरिमामयी कैरियर का सीमांकन करना चाह रहे थे। बहरहाल उम्र बढ़ने के साथ-साथ मेरे मन-मस्तिष्क में जीवन का लक्ष्य गिरगिट और दल-बदलू नेता की तरह समय और परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तन शील रहा। बाल्यावस्था में पिताजी की दुकान देखकर साहुकार बनने की, तो स्कूली जीवन के दौरान शिक्षकों का रुतबा देख शिक्षक बनने की, हिन्दी फीचर फिल्म देखने के बाद कभी स्टाइलिश हीरो बनने आदि की इच्छाएं समय-समय पर बलवती हुई किन्तु अक्ल वाली दाँत उत्पन्न होने के बाद वैज्ञानिक डॉक्टर, इंजीनियर, आइएएस, नेता अधिकारी और कर्मचारी आदि समस्त पदधारियों में मुझे सबसे ज्यादा किसी ने प्रभावित किया तो वो था सरकारी बाबू ! फिर क्या किशोरावस्था में ही हमने सरकारी बाबू बनने की कसम खा ली। सरकारी बाबू पद के प्रति मोह के संदर्भ में घटना कुछ इस तरह की है। हुआ यूँ कि एकबार पिताजी के बाट-तराजू के लाईसेंस में आंशिक त्रुटि सुधार हेतु मुझे पिताजी के साथ सरकारी कार्यालय जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहली बार मुझे साक्षात बड़े बाबू के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पान की गिलौरी या गुटखा से भरा हुआ ओजपूर्ण मुस्कुराता हुआ उनका चेहरा, गोलाकार आयतन में फैला हुआ उदर, वाणी की बजाय गर्दन अथवा सांकेतिक इशारों से समझा सकने में कुशल तथा अतिरिक्त आय में घोर आस्था रखने वाला अद्भुत सरकारी इंसान। चहुओर 'बड़ा बाबू, बड़ा

बाबू' की त्राहिमाम मध्यम ध्वनि के साथ दर्जनों आगंतुकों की भीड़ के बीच लकड़ी की कुर्सी पर विराजमान सरकारी महामानव। वो बोलते कम और थूकते ज्यादा थे। उनके दाएं-बाएं अधीनस्थ कर्मचारी बड़े बाबू का यशोगान कर रहे थे "अरे बाबू ने कह दिया तो हंड्रेड वन परसेंट काम हो जाएगा... अफसर का क्या, उनको तो सिर्फ़ हस्ताक्षर करना होता है बाकी लिखा-पढ़ी तो बाबू ही करते हैं। बाबू ने जो फाइल पर लिख दिया आज तक कभी किसी अधिकारियों ने नहीं काटा है...बाबू ये है तो बाबू वो है..." गुलाबी खिल्ली पान से फुले हुए मुखमंडल में अवस्थित एक जोड़ी आँखों को फैला चश्मा के नीचे से झाँकते हुए पिताजी की ओर देखा। मामला को समझा तत्पश्चात् उस सरकारी पुरुष ने इस सुधार कार्य को जटिल और असाध्य बताया किन्तु थोड़ी देर बाद पिताजी द्वारा चाय-पानी के विनम्र अनुरोध पर उस असाध्य कार्य को साधने के लिए तैयार हो गया। बाबू ने पिताजी की तरह कई अन्य समस्याग्रस्त लोगों की समस्या का समाधान चाय-पानी की क्षमता के अनुसार चुटकियों में कर डाला। बाबू कितनी महँगी चाय पीते हैं और कितना चाय पीते हैं यह उसी दिन पता चला। खाने-पीने की क्षमता देख मैं इतना समझ गया कि बाबू का उदर, लम्बोदर से भी ज्यादा बड़ा और गहरा होता है। बाबू ने चाय पानी की सेवा ना दे सकने वाले असमर्थ पीड़ितों के लिए दूसरे सप्ताह या अगले माह दर्शन देने का प्रावधान तय कर रखा था। देख मैंने यूपीएससी, बैंकिंग, रेलवे की बजाय राज्य कर्मचारी चयन आयोग के एलडीसी/यूडीसी पद की वैकेंसी पर बगुला की तरह निगाहें टिका दी। बड़े बाबू का काम निष्पादित करने की जो गति होती है मैंने प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी भी उसी रफ़्तार से जारी रखा किन्तु हमारी किस्मत भी विजय माल्या की तरह धोखेबाज निकली। पेपर अच्छा नहीं जा सकने के कारण दर्जनों बार पीटी तक पास नहीं कर पाया और जब कभी पेपर अच्छा जाता तो पता चलता कि परीक्षा पूर्व ही प्रश्न पत्र व्हाट्सएप के माध्यम मार्केट में उपलब्ध हो जाया करती थी किंतु मैंने ना तो हिम्मत हारी और ना ही दूसरी परीक्षा का फार्म भरा। आखिरकार उम्र के अंतिम पड़ाव और लास्ट चांस में स्टेट यूडीसी प्रारम्भिक परीक्षा पास कर ली। पीटी पास होने पर ऐसा लग रहा था कि मैं हाफ बाबू बन चुका हूँ। मित्र और साथी बड़ा बाबू के रूप में सम्बोधित भी करने लगे थे। मुख्य परीक्षा भी उम्मीद से ज्यादा अच्छी गई। परीक्षा देने के बाद मैंने परीक्षा कक्ष से ही ईश्वर, अल्लाह, गॉड, वाहेगुरु आदि को संयुक्त रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया। बस इधर रिजल्ट निकलता और उधर मैं बाबू बनता! परीक्षोपरांत अति उत्साह में दिवाली और होली एक साथ सेलिब्रेट करते हुए पटाखे फोड़े और मोहल्ले में मिठाइयाँ तक बँटवा डाली। सभी जान गए कि मोहल्ले में एक सरकारी बाबू का उत्पादन होने वाला है! दो महीने बाद एक दिन पिताजी हाथों में अखबार लेकर हड़बड़ाते हुए मेरे पास पहुँचे। उनके हाथों में अखबार देख मैं समझ गया कि रिजल्ट घोषित हो गई है। मैंने झट से पिताजी का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेना चाहा। अरे पहले यह खबर तो पढ़ो... पिताजी ने आशीर्वाद की बजाए ज्ञान दिया। मैंने मुस्कुराते हुए पेपर हाथ में लिया। जैसे ही मैंने खबर पढ़ी, पैरों तले जमीन खिसक गई। राज्य सरकार ने वित्तीय संसाधन की अनुपलब्धता के कारण उच्च वर्गीय लिपिक पद को विलोपित करते हुए पुरानी वैकेंसी और ली गई परीक्षा को रद्द कर दिया था। खबर पढ़ते ही बाबू बनने का अरमान नीरव मोदी की तरह फुर्र हो चुका था। ओम शांति ओम के शाहरुख खान की तरह मुझे यह जग सूना-सूना लगने लगा। अंततः सरकारी कार्यालय चलाने की तमन्ना रखने वाले को खानदानी परचून की दुकान चलानी पड़ी किन्तु असफलता के दशकों बाद भी हताश और निराश होने की बजाय मैं खुशहाल जीवन जी रहा हूँ क्योंकि दुकानदार होने के बावजूद इस चराचर में दो शख्स ऐसे हैं जो आज भी मुझे बाबू पुकारते हैं। उन दोनों द्वारा उच्चारित बाबू शब्द के कर्णप्रिय श्रवण से मेरी अंतरात्मा तृप्त हो जाती है और मुझे परम आनंद की प्राप्ति होती है। मैं खुश और आश्वस्त हूँ कि "बाबू कुछ पैसा दे दो ..." का उद्घोष करने वाले भिखारी और 'शोना-बाबू' का सम्बोधन करने वाली इकलौती बीवी के लिए कल भी मैं बाबू था, आज भी बाबू हूँ और मरते दम तक बाबू ही रहूँगा।

***पो-महेशखूंट बाजार, जिला-खगड़िया (बिहार)।**

नमक का दारोगा गायब है

महेश कुमार केशरी*

अब नौकर अपना हित साधने में लगे हैं। उनकी नजर आपकी तिजोरी पर हमेशा रहती है। दो चार साल काम करने के बाद वो आपके गर्दन पर चाकू फेरने से बाज नहीं आते। वो आपके घर से गहना जेवर और नकदी साफ करके अपने घर की राह लेते हैं। जो समय पड़ने पर आपके नाम की सुपारी भी दे सकते हैं। या आपसे अगर विचार ना मिले तो आपकी हत्या तक कर सकते हैं। ये कलयुग है। यहाँ सेवक सेवा करने के लिए नहीं बल्कि मेवा खाने के लिए पैदा हुए हैं। मेवा खाने का उनका ये अधिकार दुनिया के मजदूरों एक हों यानी कार्ल मार्क्स के विचारों से और पुष्ट हुआ है। आज हर मालिक नौकर के आँखों का काँटा बना हुआ है। मालिक अब नौकरों को फूटी आँखों नहीं सुहाते। अब यहाँ सब तैश में हैं। पहले के समय में नौकर आज्ञाकारी और मालिक के सेवक होते थे जो नमक का हक अदा करना जानते थे। जो मरते दम तक मालिक का साथ ना छोड़ते थे। मालिक के आगे-पीछे डोलते रहते थे। जिनकी वफादारी की मिसाल पूरा जमाना देता था। मालिक ने अगर दो बात कह भी दिया तो गम खाकर रह जाते थे और हँसकर टाल देते थे। नमक का दारोगा का नया लड़का याद आता है। जो नौकरी को ईश्वर का आदेश मानता है। आज के बाबूओं की तरह नहीं जो दबा-दबाकर खाते हैं। जो मोटी पगार पाते हैं लेकिन इतने से इनका पेट नहीं भरता। इनको पचाने के लिए हाजमोला वाली गोली चाहिए। जो ये समय-समय पर लेते रहते हैं और आम जनता की मेहरबानी से रँगे हाथ पकड़े भी जाते हैं। एक बाबू तो घर की मामूली जरूरत यानी की दो हजार रुपए रिश्वत लेते धर लिए गए। तो बात नमक के दारोगा की हो रही थी जो अपनी प्रतिज्ञा से लेशमात्र भी नहीं हटता। बैलगाड़ियों में लदे नमक को जब्त कर लेता है। सेठ रुपयों का लालच देता है। बड़ा पद देने की बात कहता है। सरकार में सेठ की चलती है। वो कहता है तुमको सरकार से सिफारिश करवाकर दारोगा से ब्रिटिश गर्वमेन्ट में कोई ऊँची पोस्ट दिलवा दूँगा लेकिन वो दारोगा की सैलरी में ही खुश है। सेठ खुश हो जाता है ऐसा सेवक पाकर। नमक के दारोगा के इस बात से कि आपकी बैलगाड़ियों पर लदे नमक का चालान करके ही दम लूँगा। आजकल असहनशीलता बढ़ी है। आपके सेवक को आपसे सारी सुविधाएँ चाहिए लेकिन आप उसको कुछ कह-सुन नहीं सकते। डाँटने-डपटने का अधिकार आपको नहीं है। कहाँ गए पुराने जमाने के वैसे लोग जो मालिक को देखते ही सलाम बजाते थे। मालिक के पीछे-पीछे दौड़ते अघाते

नहीं थे। जो मालिक के पीछे हाथ बाँधकर चलते थे। जो मालिक के हित-अहित का ध्यान रखते थे। उनके भरोसे पर पूरी की पूरी खेती किसानी चलती थी। मालिक घर में रहें या न रहें। मालिका को उनका घर वैसा ही मिलता जैसा कि वो छोड़कर गये थे। जब मालिक लौटते तो घर चकाचक साफ-सुथरा मिलता। आज नौकर पर घर छोड़िए तो आपके घर का भेद वो चोरों को बता देता है। आपके लिए षड्यंत्र करता है। आज जब दौर बदला है तो नौकर की हेकड़ी मालिक से बहुत ज्यादा हो गई है। नौकर मालिक की हत्या कर दे रहा है।

*मेघदूत मार्केट, फुसरो, बोकारो, झारखंड।

कविता

कुछ तो पीछे छूट गया है

डॉ. विनोद सिंह*

माता-पिता के सपनों को पूरा कर दिया है मैंने
आज बड़ा अधिकारी बन गया हूँ मैं
बड़ा ऑफिस है मेरा, नौकर-चाकर हैं, बड़ी गाड़ी हैं, बड़ा बंगला है
सबकी जरूरतों के लिए पैसा है
लेकिन कुछ तो पीछे छूट गया है।
मेरे गाँव के कुछ बड़े लोगों में मेरा नाम है
अपने समाज में इज्जत और सम्मान है
बड़े शहर में अपना मकान है
लेकिन कुछ तो पीछे छूट गया है।
अपने बच्चों की स्कूल का वीआईपी गेस्ट हूँ
अपनी पत्नी के लिए मंदिरों में दर्शन का वीआईपी कार्ड हूँ
अपने माता-पिता की बीमारियों का CGHS कार्ड हूँ
लेकिन कुछ तो पीछे छूट गया है।
बहुत समय निकल गया है
मुझे याद नहीं आखिरी बार मैंने रक्षा बंधन कब मनाया था
मुझे याद नहीं आखिरी बार दिवाली और दशहरा पर घर में कब था
मुझे याद नहीं मेरे माता-पिता ने आखिरी बार मेरा जन्मदिन कब मनाया था
परिवार के साथ बैठकर मैं कब हँसा था।
घर के लोग गाँव के लोग भूल गए हैं मुझे
बस उन्हें याद है मेरा नाम और कुछ नहीं
अब समय निकल चुका है खुद में वो पुराना इंसान ढूँढने का
अब लग रहा है कुछ नहीं बहुत कुछ पीछे छूट गया है।

*वैज्ञानिक-डी,बु.बी.प्र. व प्र.के., पाली, जिला - कोरबा (छ. ग.)।

दिल चाहे आसमान में उड़ना

रवीन्द्र कुमार शर्मा*

मिल जाती है जब किसी को बहुत खुशी
उम्र बीत गई थी जिसको रहता था दुखी
दिल चाहे उड़ना आसमान में उसका
भावनाएँ आ जाती हैं बाहर जो दिल में थी छुपी।
अचानक से कोई मिल जाये अपना
लगता है जैसे देख रहे कोई सपना
जिसकी कृपा से वह आ गया सामने
नाम उसका चाहता है मन श्रद्धा से जपना।
वर्षों बाद किसी की हो जाये पूरी मुराद
हो गया था जिसका जीवन में सब बर्बाद
जी रहा था करके अच्छे दिनों की याद
मुक्ति मिली चिंता से अब हुआ आज़ाद
गले लगाता घूम-घूम कर सबको
कहता है सब को ही अपना
पूरी हुई जो आस अब मेरी
हकीकत है या कोई सपना।

*घुमारवीं, जिला-बिलासपुर (हि.प्र.)

संघर्ष

शिवम कुमार*

पाँव तो फिसलते रहते हैं,
क्योंकि ज़िंदगी बहुत बड़ी होती है।
पाँव उसी के जमते हैं,
जिसकी मंज़िल को पाने की इच्छा दृढ़ होती है।
मंज़िल को पाने की इच्छा, चाहत तो सबों में होती है,
परंतु मिलती उसी को है,
जिसमें चुनौतियों से लड़ने की ताक़त होती है।
वक़्त थमता नहीं, घड़ियाँ रुकती नहीं,
आपके निराश हो जाने से।
लेकिन सब कुछ मुमकिन हो जाता है,
सिर्फ एक संघर्ष की चेतना को जगाने से।
आशा-निराशा जीवन की निरंतर प्रक्रिया है,
इसे तो आनी ही होती है।
क्योंकि ज़िंदगी बहुत बड़ी होती है,
और सफलता सभी को पानी ही होती है।
सरलता, सफलता की कहानी होती है,
विनम्रता भरोसे की जुबानी होती है।
इंसान तो बस एक मूरत है,
व्यवहार उसकी परछाई होती है।
व्यावहारिकता, सभी को लानी ही होती है,
क्योंकि ज़िंदगी बहुत बड़ी होती है।
और सफलता सभी को पानी ही होती है,
परिश्रम, सफलता की कुंजी होती है।
सफलता जीवन की पूंजी होती है,
जो तभी मिलती है, जब आपके विश्वास की आवाज
आपके कानों में गूंजती होती है।
संघर्ष से ही मंज़िल को जाने की राह मिलती है,
मंज़िल को पाने से ही आपके जीवन को वाह मिलती है।
खुशियों से भरी ज़िंदगी पाना आसान नहीं होता,
क्योंकि सफलता के रास्ते, झाड़ियों सी डाल मिलती है।

*उच्च श्रेणी लिपिक, क्षे.रे.उ.अ.के., दुमका

खूँटे से बँधी गाय

मोनिका राज*

गाएं पैदा नहीं होती, बनायी जाती हैं
कुदरत ने पक्षपात नहीं किया
उनके निर्माण में
उनकी नज़र में तो
गाय और बैल दोनों एक समान हैं
दोनों को वक़्त के साथ-साथ
शक्ति प्रदान की आत्मनिर्भर बनने की
पर, धरती पर निजी स्वार्थ के लिए
मनुष्यों ने गाय को गाय बनाकर
छीन लिया उनसे
आत्मनिर्भर होने का अधिकार
उनके उगते सीगों को दाग़ दिया
ताकि कल को मनमानी करने पर
वो सींग मारकर प्रतीकार न कर सके
ताकि भविष्य में आत्मरक्षा के लिए
वो कभी सर न उठा सके
डाल दी गई उनके नाक में नकेल
और गले में एक रस्सी का फंदा
ताकि उन्हें कोई और निर्देशित कर सके
बाँध दिया गया उन्हें एक खूंटे से
ताकि वो स्वच्छन्द विचर न सके
बाँध दिए गए उनके पिछले दोनों पैर
ताकि उन्हें दुहा जा सके आसानी से
सुनो लड़कियों ,
कभी जब उपमा दी जाए तुम्हें
गाय-सी सीधी का तो
तुम खुश मत होना
मुस्कुरा कर शर्माना मत
क्योंकि इस उपमा के पीछे साजिश है
तुम्हें आत्मनिर्भर न बनने देने की
तुम्हें बेबस, लाचार कर देने की
उड़ान भरने से पहले ही
तुम्हारे पर काट दिए जाने की
ताकि कल को कुछ गलत होने पर
कोई प्रतीकार न कर सको तुम
इसलिए सबल बनो, प्रतिवाद करो
बतलाओ दुनिया को कि
तुम निर्बल नहीं, सबल हो
तुम्हें स्वीकार नहीं बन जाना
एक खूंटे से बंधी गाय
तुम्हारा भी स्वतंत्र अस्तित्व है
तुम अपनी आत्मरक्षा करने में सक्षम हो
तुम अपना कल लिखने के क़ाबिल हो
और तुम अपना यह हक़
किसी को भी छीनने न दोगी।

*नव नालंदा महाविहार, नालंदा, बिहार

एक कहानी हो तुम....

मधुबाला शांडिल्या*

मेरी जिंदगी की एक अधुरी-सी कहानी हो तुम,
कभी ना मिटने वाली मेरी साँसों की रवानी हो तुम,
कभी गोते लगाते हो तुम मेरी यादों के भंवर में,
कभी नीर बन बह जाते हो मेरी आँखों से निकल कर,
नासमझी से खेले हुए खेल की नादानी हो तुम,
ना जाने कितने दर्द को संजोए एक कहानी हो तुम...
बेरंग रंगों से रंगी एक खुबसूरत सी तस्वीर हो तुम,
सुलझती जिंदगी को उलझाती एक फकीर हो तुम,
बीते पलों की खामोशियाँ जो तेरे अधरों पर आ ठहरे,
अश्क बन कभी जो तेरे नयनों से जा बरसे,
अनसुलझी सी पहेली को सुलझाने की लाख कोशिशें,
ना जाने कितने शब्दों में पिरोये मेरी तासीर हो तुम....
कभी किसी सुखे तलाब की एक कमल हो तुम,
किसी बंजर उपवन में खिले भंवर की आश हो तुम,
जिन्हें संजोकर रखने की चाहतें किसी मुखबिर की,
अपने फटे आँचल में समेटती किसी तकदीर सी,
ना चाहते हुए भी चले जाने को बेवश वक्त हो तुम,
फिर से बदलकर लौट आने की एक चाहत हो तुम...
ताउम्र पढ़ी जाने वाली जिंदगी की एक कहानी हो तुम,
कभी ना भुला पाने वाली बीते रिश्ते की रवानी हो तुम,
मेरे चंद शब्दों में गढ़े अनमोल रत्न जो फिजा बन बैठे,
तेरे नाम से लिखे शब्द जो आज सजा बन बैठे,
आसमानी रंग से रंगी चाहतों की एक तस्वीर हो तुम,
फिर ना लौटकर आने वाले अंतहीन सबब हो तुम....

*At+po–Danre, Dist–Godda, State-Jharkhand

तुम्हारे होने मात्र से

डॉ. नीलोत्पल रमेश*

हमारे जीवन में
रक्त का संचार
तुम्हारे ही कारण
होता रहता है
तुम हो
तो मेरा अस्तित्व है
तुम्हारे होने मात्र से ही
हमारी क्रियात्मक
गतिविधियां कायम हैं
नदी !
तुम्हारी अहमियत
युगों-युगों से कायम है
और आगे भी रहेगी
तुम्हारे होने मात्र से
एहसास होता है
कि अभी जीवन
जिया जा सकता है
कि कुछ काम करना बाकी है
तुम हो
तो यह जीवन है
जीवन में खुशियां हैं
तुम्हारे होने मात्र से ही
मैं हूँ
और मैं चाहता हूँ
कि तुम रहो
अहर्निश गतिमान, गतिशील !

*पुराना शिव मंदिर, बुध बाजार, गिद्दी-ए, हजारीबाग, झारखण्ड।

मेरी प्यारी माँ

डॉ. दिनेश लाल शर्मा*

मेरी प्यारी माँ ने मुझे जन्म दिया, पाला-पोसा धीरे-धीरे बड़ा किया।
घुटनों पर रेंगते-रेंगते, कब पैरों पर खड़ा किया।
तेरी ममता की छाँव में, न जाने कब मैं बड़ा हुआ।
काला टीका, दूध मलाई, आज भी सब कुछ याद है मुझे,
मैं ही मैं हूँ हर जगह, प्यार ये तेरा कैसा है।
मेरी प्यारी माँ तूने मुझे जन्म दिया, पाला-पोसा बड़ा किया।
सीधा-साधा भोला-भला, मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा, माँ मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।
मेरी प्यारी माँ तूने मुझे जन्म दिया........
माँ ने मुझे पढ़ा-लिखा कर, बड़ा आदमी बनाया।
उनके लिए मैं वही छोटा बच्चा पप्पू हूँ।
आज भी मेरी माँ जोरू से बढ़कर प्यारी है।
मेरी माँ तूने मुझे जन्म दिया, पाला -पोसा बड़ा किया।

*सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, के.रे.उ.अ. व प्र.सं., मैसूर।

किसकी बोली

वैष्णवी गुप्ता*

मुर्गा बोला कुकड़ू-कूँ
उठकर बैठो, सोये क्यूँ ?
कुत्ता बोला - भौं - भौं - भौं
बन्दर करता खों - खों - खों।
बिल्ली बोली – म्याऊं-म्याऊं
दूध नहीं तो मैं क्या खाऊं ?
मक्खी कहती - भिन - भिन - भिन
रहू कहाँ कूड़े के बिन ?
चुहिया करती - कूट - कूट - कूट
मैं तो कहूँगी बिस्कुट।
चिड़िया गाती - चीं - चीं - चीं
मेरा घर है यहीं कहीं।
बोली गाय - बां - बां - बां
आओ बेटा, गए कहाँ ?

*भांजी सुश्री पल्लवी गुप्ता, कनीय अभियंता (विद्युत),
के .त. अ. व प्र. सं., राँची।

लघु कथा

गुनाह का लेवल

राजेन्द्र कुमार सिंह*

बहू-बेटा अपने बुजुर्ग पिता को कुम्भ स्नान हेतु नासिक लाए थे। पिताजी को मलमल कर बढ़िया से स्नान करवाए। गोदावरी मंदिर में पूजा-पाठ कर बाजू के मंदिर में जो बहुत ही प्रसिद्ध मंदिर था, जहाँ पर सालों भर उसमें दोनों टाइम भोजन की व्यवस्था थी। बहू- बेटा अपने पिताजी को मंदिर के प्रांगण में बैठाकर, आता हूँ कहकर निकल गए थे। बूढ़ा बाप बहू-बेटे का इंतजार करते रहे लेकिन दोनों में से एक भी लौटकर वापस नहीं आया। इंतजार करते एक लम्बा अर्सा निकल गया। बहू-बेटा खुश था कि चलो अब पार-घाट लग गए होंगे लेकिन 'जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय' यह कहावत सही चरितार्थ हो गई थी। वे बिल्कुल स्वस्थ व सही सलामत थे। इस बार कुम्भ स्नान में उन्नीस वर्षीय बेटा रोहन भी साथ था। पिछली बार छोटा होने के कारण उसको नानी के पास छोड़कर आए थे। बहू-बेटा अपने बाप के साथ जो किया था उसकी स्मृति अब धुंधली पड़ गई थी। रोहन धीरे-धीरे मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़कर प्रांगण में पहुँच गया था। जहाँ एक बिम्ब के किनारे एक बुजुर्ग जिसके बाल व दाढ़ी से संत प्रतीत हो रहे थे, उनके मुख से अपने पिता जी का नाम सुन वह चौक पड़ा क्योंकि लोग कहते हैं मेरा चेहरा मेरे पिताजी से मिलता-जुलता है। 'बाबा आपने किसका नाम लिया। फिर से बोलिए तो उसकी उत्सुकता बढ़ गई थी।' संतोष वर्मा। 'बाबा ने कहा-मेरा बेटा जब तुम्हारे उम्र का था तो बिल्कुल ऐसा ही दीखता था।' रोहन अब सब कुछ समझ गया था। जब मम्मी-पापा पिछली बार कुम्भ स्नान के लिए आए होंगे तो दादाजी को यही छोड़कर निकल गए होंगे। वह रोते हुए अपने दादाजी के चरण स्पर्श कर कहा-'आप मेरे दादा जी रंजीत वर्मा हो।' तभी उधर से उसके मम्मी-पापा आते दिखाई दिए। 'आप दोनों को यह स्थान कैसा लगा ?' बढ़िया है न ? रोहन अपने गुस्से को दबाकर विनम्र लहजे में

कहा। 'बहुत बढ़िया है।' दोनों एक साथ बोले। 'कुछ दिनों के बाद मैं आप लोगों को दादा जी की तरह मंदिर या वृद्धाश्रम में छोड़ने वाला हूँ। वक्त का इंतजार कीजिए।' रोहन की बातें सुन वे चौके बिना नहीं रहे। उनके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी थी। भौंचक्का हो बोले - 'ये तुम क्या कह रहे हो रोहन ?' 'जो आपने सुना।' रोहन का कहने का लहजा वही था - 'ये सामने जो दाढ़ी-बाल बढ़ाकर साधू के भेष में जो दीख रहे हैं। ये आप दोनों के गंदी करतूतों के करनी का फल भुगत रहे हैं। इनको हमारे साथ होना चाहिए था, अपनों के बीच लेकिन आप दोनों ने मिलकर उन्हें मंदिर के दहलीज पर छोड़कर फरार हो गए थे। ये उसके लिए है जिसका देख-देख करने वाला कोई नहीं। आप तो उनके बहू-बेटा हो। उनके जिगर के टुकड़े हो। दरअसल ये मेरे दादा जी श्री रंजीत वर्मा हैं। आपने झूठ क्यों कहा था कि पिछली बार कुम्भ में भगदड़ मचने के कारण तुम्हारे दादा जी चल बसे।' रोहन के इतना कहते ही दोनों के पाँवों तले की जमीन खिसक गई। उसकी बातें सुन शर्म से पानी-पानी हो गए। अगले पल बहू-बेटा दोनों उनके चरणों में गिर गए थे। दोनों पश्चाताप के अग्नि में जलने लगे थे। रोहन तटस्थ बना रहा। वह मन-ही-मन कह रहा था-माफी माँग लेने से पाप धूल तो नहीं जाता। आपके गुनाहों का लेबल हाई है। माँ-बाप हैं तो क्या हुआ, आप दोनों मेरे दादा जी के गुनाहगार हैं और इसकी सजा तो भुगतना ही पड़ेगा।

*लिली आरकेड,फ्लैट नं-101, मेट्रो जोन बस स्टैंड, महाजन हॉस्पिटल समोर, नाशिक (महाराष्ट्र)।

है तुम्हारे पास...?

ज्योति मिश्रा*

देवर-देवरानी से किसी बात में हुई बहस से क्रोध में आकर सौम्या ने अपने पति मिहिर से कहा "इसलिए लोग संयुक्त परिवार में नहीं रहते। दिन-रात सास-ससुर, देवर, ननद की चिक-चिक.., एक को खुश करो तो दूसरे नाराज़.. अरे भाई ! लाख जान दे दो शादी के बाद कोई भाई-भाई नहीं रहता, ज़िंदगी के क़ीमती पन्द्रह साल इस घर में खपा कर देख लिया मैंने..,. अब तुम अलग फ्लैट में रहोगे तभी मैं वापस इस घर में आऊंगी, वर्ना नहीं।" तमतमायी हुई सौम्या बैग उठाकर घर से निकल ही रही थी कि बरामदे में खेलती देवर की छह साल की बेटी मीठी और उसके हम उम्र साथियों का झगड़ा सुनकर ठिठक गई..! बिट्टू किसी बात पर रोब जमाते हुए मीठी से बोल रहा था "मेरे घर में बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ हैं, दो-दो डॉगी है, जर्मन शेफर्ड, इत्ता बड़ा. .शेर की तरह, सुनी हो उसकी आवाज़ ? कितनी ज़ोर से भूँकता है..? तुम्हारे पास है..?" मासूम सी सलोनी ने भी सयानों की तरह बिट्टू के सुर में सुर मिलाते हुए आँखें नचाकर कहा "हाँ ! और हमारे घर ! हमारे पास तो ग्रेट डेन..है, इतना बड़ा डॉगी ! पता है कितना महँगा होता है.. तुम क्या जानो.. तुम्हारे पास तो कुछ नहीं है।" "पहले तो मीठी उनकी बात सुनकर मायुसी से इधर-उधर ताकने लगी फिर अचानक सौम्या पर नज़र पड़ते ही तैश में आकर बोली तुम लोगों के पास डॉगी है, गाड़ी है, तो क्या हुआ, गाड़ी और डॉगी तो सबके घर के बाहर हैं। मेरे घर में बड़ी मम्मी हैं। हैं तुम्हारे घर में ? तुम लोगों को पता है बड़ी मम्मी क्या होती है..? बड़ी मम्मी बहुत प्यार करती हैं। मम्मी जब गुस्सा होती हैं, मारती हैं तो बड़ी मम्मी मुझे बचाती हैं, मम्मी बीमार होती हैं तो होम वर्क कराती हैं, अच्छा-अच्छा टिफिन बनाके खिलाती हैं, खाए हो तुम लोग गुझिया, ठेकुआ ? तुम लोग क्या जानो .. तुम लोगों को तो बस ब्रेड सैंडविच मिलता है..।" सोनाली और बिट्टू हैरानी से हार मानकर कभी मीठी का कभी सौम्या का मुँह देखने लगे..। मीठी ने उन दोनों की बोलती बंद होती देख ख़ुश होकर सौम्या की ओर देखा तो सौम्या की आँखों में मीठी की जीत की ख़ुशी छलक आई..। उसने प्यार से मीठी को गोदी में उठाया और घर के अंदर लौटते हुए सोचा कितनी सरलता से उसके पन्द्रह वर्षो का स्नेह और समर्पण मीठी ने पाँच मिनट में लौटाकर साबित कर दिया कि हम जो कुछ करते हैं अच्छा या बुरा, व्यर्थ नहीं जाता, सूद समेत हमें अवश्य मिलता है। अगर आज वो अपने घरेलू विवाद को आत्म सम्मान का प्रश्न बनाकर घर से निकल जाती तो मीठी के लिए भी बिट्टू और सलोनी की तरह कुत्ते और गाड़ियाँ सोशल स्टेटस के लिए घर में सहेज जाने वाले रिश्तों से ज़्यादा ज़रूरी होते।

*चिरैयाटाड़, पटना।

निःस्वार्थ

डॉ. चीनीपल्ली रवि शंकर*

एकबार की बात है एक मंदिर के पास एक भिखारी भीख माँगता था और मंदिर के पास ही स्थित नीम के पेड़ की छाया में आराम भी करता था। भगवान का एक भक्त मंदिर में भगवान के दर्शन हेतु रोज आता था एवं उस भिखारी को रोजाना कुछ सिक्के भी देता था। समय बीतने के साथ भक्त और भिखारी के बीच एक स्नेह भरा सम्बन्ध बन गया। धीरे-धीरे समय बीतता गया और भिखारी अब बहुत बूढ़ा हो चुका था। जब उसके मन में आया कि अब हम जिन्दगी के अंतिम पड़ाव पर पहुँच गये हैं तो उसने भगवान के उस भक्त से विनम्र स्वर में अनुरोध किया कि जब मैं इस दुनिया को अलविदा कह दूँ तो मुझे इसी नीम के पेड़ के नीचे दफना देना, यही मेरी अंतिम इच्छा है। जब एक दिन वह भिखारी इस दुनिया को छोड़कर चला गया तो उस भक्त ने भिखारी को दफनाने हेतु नीम के पेड़ के पास गड्ढा खोदने लगा। उस गड्ढे में उसे बहुत सारे सोने और चाँदी के सिक्के मिले। वह व्यक्ति सोने और चाँदी के सिक्के पाकर बहुत खुश हुआ और वह अमीर भी हो गया। मृत्यु के बाद भिखारी जब स्वर्ग लोक पहुँचा और यह खबर सुनी कि वह भक्त अमीर हो गया है तो उसे बहुत ही खुशी हुई। भिखारी ने स्वर्ग लोक में भगवान से सवाल किया कि उस मंदिर के पास पूरा जीवन बिताने के बावजूद भी मुझे धन क्यों नहीं मिला। भगवान ने जवाब दिया कि तुमने मंदिर के पास अपना जीवन भगवान के नाम भजने में बिताया जिस कारण से तुम्हें स्वर्ग मिला जबकि उस भक्त ने बिना स्वार्थ लम्बे समय तक आपकी मदद की आपसे बिना किसी उम्मीद के नि:स्वार्थ भाव से आपकी अंतिम इच्छा को पूरा किया। उस भक्त को वर्तमान के जीवन में धन का आशीर्वाद प्राप्त है इसीलिए उसे धन प्राप्त हुआ है। यह बात सुनकर भिखारी ने भगवान को नमन किया और कहा कि लोगों को नि:स्वार्थी होना चाहिए और अनंत सुख की खोज में अपना जीवन व समय बर्बाद नहीं करनी चाहिए।

*वैज्ञानिक-डी (सेवानिवृत्त), सेंट्रल सिल्क बोर्ड, कुरनूल जिला, आंध्र प्रदेश।

जिए तो जिएं कैसे ?

प्रज्ञा पांडेय*

गुरुग्राम की राधिका यादव के कत्ल की घटना ने हम सभी को झकझोर कर रख दिया है। जाहिर है सभी अचम्भित हैं, सकते में हैं। एक पिता द्वारा अपनी ही होनहार आत्मनिर्भर बेटी का वध। कुछ समझ नहीं आ रहा है। अपने ही अंश का अंत। यह केवल एक घिनौनी घटना नहीं है बल्कि बहुत से प्रश्न समाज के मुँह पर उछाल कर गई है राधिका की हत्या। हम औरतें माँ की कोख से लेकर पिता के घर में, समाज में, स्कूल में, ऑफिस में, बस में, मेडिकल कॉलेज में, मंदिर में, थाने में, कोई ऐसी जगह नहीं बची है जहाँ औरतें सुरक्षित हैं, कोई ऐसा संस्थान नहीं जहाँ औरतें सुरक्षित हैं, कोई ऐसी उम्र नहीं कि कहा जा सके इस उम्र के बाद औरतों को किसी तरह का कोई खतरा नहीं है। तीन महीने की बच्ची से लेकर 70 साल की वृद्धा तक ने बलात्कार झेला है। पत्नियों ने अपने ही पति की मनमानी को बर्दाश्त किया है। घरेलू हिंसा की तो गिनती करना ही मुश्किल है क्योंकि सभी ने चुप लगा रखी है। मानसिक प्रताड़ना को तो प्रताड़ना की गिनती में ही नहीं रख रहे हैं क्योंकि फिर तो शायद हमारी 70% आबादी इस दायरे में आ जाएगी। कहने का आशय यह है कि क्या सच में इस दुनिया में औरत का जीवन मर्द के रहमो-करम पर ही चल रहा है। हम औरतें का अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। हम कोई फैसला खुद की इच्छा से नहीं ले सकते हैं। हमारा जन्म होगा या कोख में ही मार दिया जाएगा ये फैसला पिता लेता है। हम स्कूल में किससे बात करतें हैं, क्या करते हैं ये सब निगरानी भाई करता है, हम शादी किससे करेंगे ये फैसला पिता एवं भाई लेते हैं, हम क्या पहनेंगे, कैसे रहेंगे, कैसे उठे-बैठेंगे इसका निर्णय भी परिवार के पुरुष वर्ग के हाथ में है। हम कितने भी शिक्षित क्यों ना हों हमारी नौकरी हमारे पतियों की दया पर चलती है। खुद के कमाए हुए पैसे भी पति से माँग कर या पूछकर ही खर्च होते हैं। कुछ प्रतिशत महिलाएँ और पुरुष अपवाद हो सकते हैं किन्तु ज्यादातर घर पुरुषों की मर्ज़ी से चल रहे हैं। कभी कहीं सुनसान जगह पर कोई महिला दिख भर जाए तो उसका बलात्कार करके मार दिया जा रहा है। कभी घर में कोई बात ना माने जाने पर जान से हाथ धोना पड़ रहा है। क्या कहा जाए, कैसे रहा जाये ? राधिका की बात करें तो वह 25 साल की पढ़ी-लिखी आत्मनिर्भर बेटी थी। हमारे देश का कानून 18 वर्ष में हमें वोट देने का अधिकार देता है किन्तु वह सिर्फ वोट देने का अधिकार है। परिवार हमें 25 साल की हो जाने पर भी अपनी जिंदगी के फैसले खुद लेने का अधिकार नहीं देता है। जैसे कि राधिका को एकेडमी बंद ना करने के फरमान की ना फरमानी करना भारी पड़ गया। गौर करें तो आरूषि हत्या कांड हो या राधिका की हत्या बेटियाँ घर में भी सेफ नहीं है। अरे वो तो गर्भ में भी सेफ नहीं है। शायद अब समय आ गया है कि हम अपने फैसले खुद करें। शुरू से ही अपने हक के लिए चौकन्ने रहें क्योंकि कोई भी परिवार एक दिन में ये सब नहीं करता है। धीरे-धीरे उनकी हिम्मत बढ़ती जाती हैं और उनका हमारी जिन्दगी में दखल बढ़ता जाता है। खाने में सब्जी क्या बनेगी से लेकर क्या विषय पढ़ना है, कितने बजे घर आ जाना है, बाहर जाना है तो इजाजत लेकर जाना है और सबसे बड़ी बात है कि ये भी कहा जाता है कि ये सब निगरानी वो हमारी भलाई के लिए कर रहे हैं। तो फिर ये भलाई बेटियों की ही क्यों की जाती है। बेटे से कहीं आने-जाने पर इतनी पूछताछ क्यों नहीं होती है। इसलिए मैं हर लड़की, हर औरत से यही कहूँगी अब अपने फैसले खुद करो। फैसले गलत होने या सही होने की चिंता छोड़ दो। अरे आज तक जब कोई फैसला स्वतंत्र रूप से किसी ने लेने दिया ही नहीं तो फिर फैसला करने की छमता आएगी कैसे इसलिए खुद के फ़ैसले खुद करना शुरू करो, आज से अभी से। इस पुरुष प्रधान समाज में अपने हक के लिए लड़ पड़ो। छीन लो अपने हिस्से का आसमान और खोलो अपने पंख और भरो अपनी उड़ान। मत मानो पुरुषों के गढ़े हुए मानदंड । इनको माँ-बाप की सेवा करने वाली बीबी भी चाहिए और पार्टी में सबसे हॉट लगने वाली बीबी भी चाहिए। शाम को गर्म फुल्के व रात में गर्म बिस्तर और अगर एक भी कदम उनकी इच्छा के प्रतिकूल हुआ तो जीवन से, इज्जत से हाथ धो बैठोगी।

***जी आई डी सी, वापी, गुजरात।**

एक बहुत ही सुंदर दृष्टांत...

नवीन कुमार सिन्हा*

एकबार की बात है वीणा बजाते हुए नारद मुनि भगवान श्रीराम के द्वार पर पहुँचे । नारायण नारायण !! नारदजी ने देखा कि द्वार पर हनुमान जी पहरा दे रहे हैं। हनुमान जी ने पूछा : नारद मुनि ! कहाँ जा रहे हो ? नारदजी बोले : मैं प्रभु से मिलने आया हूँ। नारदजी ने हनुमानजी से पूछा प्रभु इस समय क्या कर रहे हैं ? हनुमानजी बोले : पता नहीं, पर कुछ बही-खाते का काम कर रहे हैं, प्रभु बही-खाते में कुछ लिख रहे हैं। नारदजी : अच्छा ? क्या लिखा-पढ़ी कर रहे हैं ? हनुमानजी बोले : मुझे पता नहीं मुनिवर आप खुद ही देख आना। नारद मुनि गए प्रभु के पास और देखा कि प्रभु कुछ लिख रहे हैं। नारद जी बोले : प्रभु आप बही-खाते का काम कर रहे हैं ? ये काम तो किसी मुनीम को दे दीजिए। प्रभु बोले : नहीं नारद, मेरा काम मुझे ही करना पड़ता है। ये काम मैं किसी और को नही सौंप सकता। नारद जी : अच्छा प्रभु ऐसा क्या काम है ? ऐसा आप इस बही-खाते में क्या लिख रहे हो ? प्रभु बोले : तुम क्या करोगे देखकर, जाने दो। नारद जी बोले : नहीं प्रभु बताइये ऐसा आप इस बही-खाते में क्या लिखते हैं ? प्रभु बोले : नारद इस बही- खाते में उन भक्तों के नाम है जो मुझे हर पल भजते हैं। मैं उनकी नित्य हाजिरी लगाता हूँ। नारद जी : अच्छा प्रभु जरा बताइये तो मेरा नाम कहाँ पर है ? नारद मुनि ने बही-खाते को खोलकर देखा तो उनका नाम सबसे ऊपर था। नारद जी को गर्व हो गया कि देखो मुझे मेरे प्रभु सबसे ज्यादा भक्त मानते हैं। पर नारद जी ने देखा कि हनुमान जी का नाम उस बही-खाते में कहीं नहीं है ? नारद जी सोचने लगे कि हनुमान जी तो प्रभु श्रीराम जी के खास भक्त हैं फिर उनका नाम इस बही-खाते में क्यों नहीं है ? क्या प्रभु उनको भूल गए हैं ? नारद मुनि आये हनुमान जी के पास बोले : हनुमान ! प्रभु के बही-खाते में उन सब भक्तों के नाम हैं जो नित्य प्रभु को भजते हैं पर आपका नाम उसमें कहीं नहीं है ? हनुमानजी ने कहा कि : मुनिवर ! होगा, आपने शायद ठीक से नहीं देखा होगा ? नारदजी

बोले : नहीं-नहीं मैंने ध्यान से देखा पर आपका नाम कहीं नही था। हनुमानजी ने कहा : अच्छा कोई बात नहीं। शायद प्रभु ने मुझे इस लायक नहीं समझा होगा, जो मेरा नाम उस बही-खाते में लिखा जाये। पर नारद जी प्रभु एक अन्य दैनंदिनी भी रखते हैं, उसमें भी वे नित्य कुछ लिखते हैं। नारदजी बोले : अच्छा ? हनुमानजी ने कहा : हाँ ! नारदमुनि फिर गये प्रभु श्रीराम के पास और बोले प्रभु ! सुना है कि आप अपनी अलग से दैनंदिनी भी रखते हैं ! उसमें आप क्या लिखते हैं ? प्रभु श्रीराम बोले : हाँ ! पर वो तुम्हारे काम की नहीं है। नारदजी : "प्रभु ! बताइये ना, मैं देखना चाहता हूँ कि आप उसमें क्या लिखते हैं ? प्रभु मुस्कुराये और बोले मुनिवर मैं इनमें उन भक्तों के नाम लिखता हूँ जिन को मैं नित्य भजता हूँ। नारदजी ने डायरी खोलकर देखा तो उसमें सबसे ऊपर हनुमान जी का नाम था। ये देखकर नारदजी का अभिमान टूट गया। कहने का तात्पर्य यह है कि जो भगवान को सिर्फ जीव्हा से भजते हैं, उनको प्रभु अपना भक्त मानते हैं और जो हृदय से भजते हैं उन भक्तों के वे स्वयं भक्त हो जाते हैं। ऐसे भक्तों को प्रभु अपनी हृदय रूपी विशेष सूची में रखते हैं।

*फ्लैट सं.2-सी, अंजली अपार्टमेंट, हातमा, काँके रोड, राँची।

मुक्ति

अर्चना त्यागी*

अच्छाई और बुराई दोनों साथ ही चलती हैं। सब के भीतर दोनों ही मौजूद होती हैं। फ़र्क इतना ही होता है कि परिस्थितियों ने बुराई को निखारा है या अच्छाई को। जीवन भर का गणित तब काम नहीं करता जब अंतिम समय आता है। गलतियाँ और उनके सुधार का तरीका मन-मस्तिष्क सुझा देता है। बुराई पर अच्छाई की जीत तय कर देता है। राम रावण का युद्ध समाप्त हुआ। बुराई पर अच्छाई की विजय हुई और माता सीता को लेने राम की सेना लंका में आ रही थी। सूर्पनखा दौड़ती हुई सीता के पास आई। अपनी गलती की क्षमा याचना करते हुए बोली "सीता मेरी गलतियों के कारण मेरा वीर प्रतापी भाई समूल नष्ट हो गया है। मैं अपने पाप का प्रायश्चित करने में तुम्हारी मदद चाहती हूँ।" सीता ने सरल भाव से पूछा। "बताओ बहन तुम्हारी कैसे मदद कर सकती हूँ। संभव हुआ तो अवश्य करूंगी।" सूर्पनखा आश्वस्त हुई। विनयपूर्वक बोली। "प्राण त्याग करते हुए मेरे भाई रावण ने मुझसे कहा था कि वह मर तो रहा है परंतु उसकी आत्मा मुक्त नहीं हो पाएगी। यदि तुम उसकी कलाकृति बना दो तो वह पुनः जीवित हो जायेगा।" सीता सोच में पड़ गई। बोली। "मैं यह कार्य नहीं कर सकती हूँ क्योंकि मैंने कभी रावण को देखा ही नहीं है। फिर कैसे तुम्हारे भाई की आकृति बना सकती हूँ।" सूर्पनखा हार मानने वाली नहीं थी। तुरंत बोली। "मैं अपने भाई के व्यक्तित्व का वर्णन करूँगी उसके आधार पर तुम कलाकृति बनाती रहना।" सूर्पनखा की बात मानकर सीता ने कलाकृति बनाना आरंभ किया। वह वर्णन करती जाती और सीता लकीरें खींचती जाती। आकृति बनी तो हुबहू रावण के जैसी। सूर्पनखा ने आवाज़ लगाई। "मेरे प्रिय भाई अब आप पुनः जीवित हो जाओ।" रावण जीवित हो गया। उसने हाथ जोड़कर माता सीता को प्रणाम किया और अपने कृत्य के लिए माफ़ी माँगी। "यह काम तो तुम जीवित रहते हुए भी कर सकते थे, इसके लिए पुनर्जीवित होने की क्या आवश्यकता थी।" माता सीता ने सवाल किया। "आपका कथन उचित है सीता। बस देखना चाहता था कि मेरी भावना सही थी या नहीं। जिसने युद्ध लड़ा वो लंका का राजा रावण था और उसे राम के हाथों मरना ही था परंतु आपने जिसे जीवित किया है वह आपका पुत्र है। स्मरण कीजिए जब पंचवटी में भिक्षा माँगने आया था तब मैंने यही कहा था कि माता साधु को भिक्षा दीजिए परंतु लंका में लाकर मैं आपसे विवाह करने का असफल षड्यंत्र रचता रहा ताकि राम को इतना भड़का दूँ कि वो मुझे इस पापी देह से छुटकारा दिलाने के लिए युद्ध करें। यही कारण है कि मेरी मुक्ति आप ही के हाथों होगी। अपने इस पुत्र को जीवन-चक्र से मुक्त कीजिए माता।" इतना कहकर रावण हाथ जोड़कर सर झुकाकर सीता के समक्ष खड़ा हो गया। सीता हैरान थी। जो व्यक्ति जीवित रहते हुए प्रतिदिन उससे विवाह की कोशिश करता रहा उसकी आत्मा उस एक शब्द का भार लिए भटक रही है। "रावण यदि तुम सही बात कह रहे हो तो मैं तीनों लोकों के स्वामी से तुम्हारी मुक्ति के लिए प्रार्थना करूँगी।" सीता ने आँखें बंद करके हाथ जोड़े और रावण अदृश्य हो गया। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ हुआ ही नहीं था। सीता ने आँखें खोली तो सामने श्रीराम खड़े हुए थे, लक्ष्मण और हनुमान को साथ लेकर। सीता को उनके साथ अयोध्या वापिस जाना था। न रावण कहीं था और न ही सूर्पनखा।

*51, सरदार क्लब स्कीम, जोधपुर, राजस्थान।

मातृभाषा

कुमुद शर्मा 'काशवी'*

आज पीहू को देखने लड़के वाले आने वाले थे.... लड़के का परिवार तो यहीं पर रहता था, पर लड़का विदेश में रह रहा था क्योंकि उसे कम्पनी की तरफ से स्थानांतरित किया गया था। पूरे घर को स्टैंडर्ड तरीके से सजाया गया....खाने में कॉन्टिनेंटल और चाइनीज़ ही बनाया गया। नियत समय पर आशीष और उसका परिवार पहुँच गया....पीहू के घरवालों ने उनकी खूब खातिरदारी की....पीहू भी रेड कलर के गाउन में बहुत खूबसूरत लग रही थी। लड़का शालीनता से हिन्दी में बातें कर रहा था....पर पीहू सिर्फ अंग्रेज़ी में....पीहू की माँ ने तुनककर कहा, "हमारी पीहू को सिर्फ अंग्रेज़ी में बातें करना पसंद है, हिन्दी तो बिल्कुल भी नहीं, वो इसने कान्वेंट स्कूल से पढ़ाई की है ना....." शाम को लड़के वालों का फोन आया,"माफ कीजिएगा...आपकी लड़की बहुत प्यारी है...पर ये शादी नहीं हो सकती...हमें ऐसी लड़की चाहिए थी जो विदेश में भी अपनी सभ्यता संस्कृति को सहेज सके...और आने वाली पीढ़ी को भी अपनी मिट्टी से जोड़कर रख सके....पर जिसे अपनी मातृभाषा बोलने में शर्मिंदगी महसूस हो उससे क्या उम्मीद रखें, आपकी बेटी को हमसे भी अच्छा परिवार और लड़का मिले यही कामना करते हैं...नमस्कार।"

*गुवाहाटी, असम।

बेटे की चाह

सरिता सुराणा*

शर्मा जी और काबरा जी दोनों बचपन के दोस्त थे। साथ-साथ पले-बढ़े और पढ़े भी साथ ही थे। दोनों की शादी भी लगभग एक ही समय में हुई थी। शर्मा जी के एक ही बेटा था और काबरा जी के दो बेटियाँ थीं। अक्सर शर्मा जी काबरा जी को मजाक-मजाक में ताना देते- "काबरा, तेरी बेटियाँ तो शादी के बाद अपनी ससुराल चली जाएंगी, फिर तुम दोनों की देखभाल कौन करेगा ? भई, अपने तो मौज-ही-मौज है। बुढ़ापे में बेटा-बहू सेवा करेंगे और पोता-पोती संग खेलने में समय कट जाएगा।" तब काबरा जी कहते- "शर्मा, अभी तो बच्चे छोटे हैं। भविष्य के लिए अभी से क्यों चिन्ता करना ? फिर बेटियाँ और दामाद संभालेंगे सब कुछ।" इस पर शर्मा जी खूब ठहाका मारकर हँसते और बात आयी-गयी हो जाती। बड़े होने पर सब बच्चों की शादी हो चुकी थी और सब अपनी-अपनी गृहस्थी में खुश थे। अचानक काबरा जी की पत्नी गम्भीर रूप से बीमार हो गईं। अब उन्हें अपनी बीमारी से ज्यादा काबरा जी की चिंता सता रही थी कि अगर उन्हें कुछ हो गया तो काबरा जी की देखभाल कौन करेगा परन्तु जब उनकी बेटियों और दामाद ने उन्हें भरोसा दिलाया कि वे पापा की देखभाल अच्छे से करेंगे तो वे एकदम निश्चिंत हो गईं और कुछ दिनों के बाद ही उनका देहावसान हो गया। कुछ दिन तक तो उनकी दोनों बेटियाँ उनके साथ रही परन्तु अब उन्हें भी अपने-अपने घर जाना था और वे पापा को अपने साथ ही ले जाना चाहती थीं। काबरा जी भारी मन से अपने मित्रों-रिश्तेदारों से मिलने गए तो उन्हें अपना खास मित्र शर्मा कुछ दु:खी दिखाई दिया। पूछने पर पता चला कि उनके घर में बेटे की बहू आए दिन कलह करती रहती है। अब वह उन्हें अपने साथ नहीं रखना चाहती और वृद्धाश्रम भेजना चाहती है। शर्मा जी के मुँह से यह बात सुनकर काबरा जी भी दु:खी हो गए। शर्मा जी फूट-फूटकर रोने लगे और कहने लगे कि बेटे के मोह में मैंने अपनी दो बेटियों की गर्भ में ही हत्या कर दी थी। अगर आज मेरी बेटियाँ जिन्दा होतीं तो मैं भी आपकी तरह उनके साथ रहता लेकिन 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।'

*हिन्दी साहित्यकार एवं स्वतंत्र पत्रकार, हैदराबाद।

वक्त कहाँ लौट पाता है

सत्या शर्मा 'कीर्ति'*

मेरी डायरी ! देख ना, मैं खामोशी से भरे इस लॉन में अकेली बैठ घण्टों फूल, पत्तों और दरख्तों से अपना अकेलापन साझा करती रहती हूँ। तुम्हें तो याद होगा कभी इसी जगह पर लोगों का मजमा लगा रहता था। रोज किसी-न-किसी बहाने पार्टियाँ होती रहती थीं। ध्यान से देखो तो आज भी इन पीले पड़ गए घासों पर ऊँची सैंडल और काले बुटों की छाप महसूस होती है। आँखे बंद करो तो लोगों के ठहाके और शैम्पेन की खनक सुनाई देती है। अब तो शाम उदास-सा हाँफता रहता है और कुम्भलया चाँद बादलों के पीछे खाँसता। देखो न धीरे-धीरे लम्बी रात उतरते चली आ रही है पर अंदर जाने का मन नहीं करता। मैं तो यहीं बैठ मि. सिन्हा के लौट आने का इंतजार करूँगी। कभी-कभी सोचती हूँ इसी तरह मि.सिन्हा कमरे में अकेले बैठे मेरा इंतजार करते रहते होंगे न और मैं अपनी महफिल में व्यस्त रहा करती थी। तब वो कहा करते थे "कहीं ऐसा न हो किसी दिन जब यह रुतबा, यह उम्र ढल जाए तब तुम अकेली रह जाओ।" तब मुझे मि. सिन्हा ईर्ष्यालु और पिछड़े लगते थे। अपनी अति महत्वकांक्षा के कारण समझ भी नहीं पाई कि कब मैं उनकी जिंदगी से इतनी दूर चली आई कि लौटना शायद अब संभव भी नहीं। फिर भी यहाँ लॉन में बैठ सारे दिन, सारी रातें उनका इंतजार करती रहती हूँ। कभी तो आएंगे और कहेंगे, "तुम्हें माफ किया अनु चलो बाकी उम्र साथ में गुजारते हैं। पर देखो न कभी आते ही नहीं। छोड़ो, मैं ही चली जाती हूँ। तुझे पता है यह चाय जो मैंने बनाई है शायद मेरा आखरी कप हो, यह मेरे द्वारा लिखा आखरी पन्ना हो। सच बताऊँ, यह रात आखरी ही है। कल अगर वो आएं तो उन्हें दे देना। पुलिस द्वारा दिए पत्र पढ़ मि. सिन्हा फूट-फूट कर रो पड़े। निर्जीव पड़ी उनकी हाथों को लेकर बस इतना कह पाए," सच में तुम जिद्दी ही रह गयी अनु अगर मैं नहीं आया, तुम तो आ सकती थी। लॉन आज बिल्कुल अकेला और खामोश हो गया था।

*राँची, झारखण्ड।

छापेमारी

तपेश भौमिक*

एक भिखारी के झोपड़ी के आगे भीड़ लगी थी। पुलिस भी आई थी। लोग आपस में बतिया रहे थे। किसी के भी चेहरे पर शोक की छाया नहीं थी। दूर से ही देखकर अनुमान लगाया था कि भिखारी मर गया होगा पर पास जाने पर पता चला कि दो बोरी छुट्टे पैसे बरामद हुए हैं। पुलिस पूछताछ कर रही थी। उन्हें मिली गुप्त सूचनानुसार कुछ गड़बड़ घोटाले की सुराग की उम्मीद थी। पर वे भी अब खिसकने के बहाने ढूँढ़ने लगे थे। भिखारी बता रहा था कि होटल वाले उसे छुट्टे पैसों के बदले भोजन नहीं देते हैं। एक-दो रुपयों का प्रचलन जब तक था तब तक अधिक लोग भीख देते थे। अब पाँच-दस के सिक्कों के प्रचलन के कारण भीख कम मिलने लगे हैं। बीमार पड़ जाने से कई दिनों से वह भूखा था। पुलिस ने मुहल्ले के नेता टाइप लोगों से कहा कि वे उन छुट्टे पैसों का कोई बन्दोवस्त कर डाक खाने में उसके नाम से मासिक रोजगार योजना में पैसे जमा करवा दें। डाक खाने से आधार कार्ड की माँग की गई, जो भिखारी के पास नहीं था। साथ ही उन्होंने छुट्टे पैसे लेने से भी इंकार कर दिये थे। अब नेता टाइप के लोग धीरे-धीरे खिसकने लगे थे। पुलिस भी उन दो बोरियों को जब्त करने से आनाकानी कर रही थी। भिखारी निर्निमेश आँखों से लोगों के चेहरों को देख रहा था।

*गुड़ियाहाटी, कुचविहार (प.बं.)।

साक्षात्कार चिरौंजी पेड़ का

डॉ. सतीश 'बब्बा'*

सुबह के यही कोई आठ बजे से ही मुझे चैन नहीं आ रहा था। कान्हा राष्ट्रीय उद्यान के बारे में तो लोगों ने बहुत कुछ लिखा था। मुझे तो वहाँ के लोगों के अलावा वहाँ के जानवरों पक्षियों, पेड़ों के बारे में लिखना था। मैं एक गाँव में डेरा डाल दिया था। उस गाँव में अहीरों की बस्ती थी; अहीर आदिवासी पवारों की बस्ती ! मैं आज जंगल घुमने का मन बना लिया था। साथ में मेरे टेमरे साहब थे। दिसम्बर का अंतिम पखवाड़ा था फिर भी कोई कुहरा नहीं था। गुड़ गुड़ी नदी का किनारा पकड़ कर इसलिए चल रहे थे ताकि कहीं रास्ता भूल नहीं जाएँ। मेरे पास तो कोई कुल्हाड़ी भी नहीं थी। मैं अपनी आत्मरक्षा भी जरूरी नहीं समझा था। टेमरे ने आत्मरक्षा के लिए कुल्हाड़ी ले रखी थी। साल, पीकर, महुआ के अलावा चिरौंजी के पेड़ बड़ी मात्रा में थे। मुझे चिरौंजी के पेड़ों में सभी बच्चे, कुछ जवान दिखाई दे रहे थे; कोई बूढ़ा, बुजुर्ग पेड़ नहीं मिल रहे थे। क्या गजब छटा थी। उस गाँव के अंदर-बाहर या इस जंगल के भीतर सिर्फ़ दूर-दूर तक फैले पेड़ों-झाड़ियों की सुंदरता के अलावा कोई नायिका बनती सुंदरी दिखाई नहीं दे रही थी। जंगल के अंदर भी टाँगिया (कुल्हाड़ी) लिए वही सूपनखाएं-ताड़काएं ही दिख रही थीं, बस ! बच्चा लिए किशोरी, जवान सभी में मुझे सुंदर कालिदास की यक्षिणी नजर नहीं आई थी। चलो कोई बात नहीं। उस जंगल के अंदर मेरे गले पड़ गई थी एक नायिका ! उसे शिखर दसना के अलावा शिखर श्रवण-नासिका कह सकते हैं। बिखरे बाल वाली लड़की उसे मैं न तो काली कह सकता हूँ, न ही गोरी। हाँ वह मुझे डरा जरूर रही थी। मैं किसी तरह से उससे पीछा छुड़ाकर आगे बढ़ने लगा था। मैं बहुत ही उत्सुक था कि इन लम्बे उठे हुए चिरौंजी के पेड़ों में से कोई बुजुर्ग पेड़ क्यों नहीं मिल रहा है। आखिर एक प्रौढ़ चिरौंजी के पेड़ से मुलाकात हो ही गई। बहुत उदास था वह, जाने क्यों ! मैं एकबार बुलाया नहीं बोला वह ! मैंने उसको प्रणाम किया; पैर छूकर ! उस चिरौंजी पेड़ के ओंठों में एक व्यंग्यात्मक लहजे में मुस्कान दौड़ गई थी। उसने कहा, "अरे बहु रूपी मानव मुझसे माया करता है; मायावी कहीं का !" मुझे बहुत विस्मय हुआ। मैंने पूछा, "हे वृक्ष भाई, तुम तो देव स्वरूप हो, फिर मुझसे इतनी नफरत आपको शोभा देती है क्या ? मैंने तो कोई आपका अपराध भी नहीं किया है ! अगर अनजाने में कोई गलती हुई हो तो मुझे क्षमा कर दीजिए !" अब वह जोर-जोर से हँसने लगा था। उसने कहा, "यहीं तो तुम हमें ठग लेते हो, हमारी सिधाई का फायदा उठाते हो ! क्या साथ में तुम कुल्हाड़ी वाले को नहीं लाए हो ? तुम नहीं लिए हो कुल्हाड़ी मुझे सराफत दिखाने के लिए ! मैं इसलिए बचा हूँ कि ये कंटीली झाड़ियाँ और तुम लोगों से दूरियाँ; यहाँ हमारे रक्षक जंगल के राजा की उपस्थिति होने के कारण तुम डर गए हो, इसीलिए मैं अभी तक जीवित हूँ; पैर छूकर सदा कुल्हाड़ी चलाने वाले निर्दयी, मैं तुम मनुष्यों को अच्छी तरह से जानता हूँ !" मैंने कहा, "जरूर तुम्हारी बातें सभी सत्य हैं लेकिन मेरा इरादा ऐसा कुछ नहीं है। मैं तो यह पूछने आया हूँ कि आखिर इतने अच्छे फल देने वाले तुम, एक तुम्हारे शिवाय और कोई बुजुर्ग पेड़ चिरौंजी के क्यों नहीं हैं ?" उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी, वह फफक-फफक कर रो पड़ा ! मैंने उसके शरीर में हाथ फेरा; सच मानो मुझे खुद रोना आ रहा था। वह चिरौंजी का पेड़ कुछ संयत हुआ। चिरौंजी के पेड़ ने पूछा, "आखिर तुम चाहते क्या हो ? जो इतनी हमदर्दी जताते हो !" शायद उस चिरौंजी के पेड़ को अभी भी मुझ पर भरोसा नहीं हो पा रहा था। मैंने उससे कहा, "मैं तुम्हारा साक्षात्कार लेना चाहता हूँ। मैं तुम्हारे दुःख को अखबारों, पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाऊँगा ताकि तुम्हें सब कोई समझ सके; तुम्हारी व्यथा मैं घर-घर पहुँचाना चाहता हूँ !" वह तैयार हो गया। चिरौंजी के उस एक बचे बुजुर्ग पेड़ ने कहा "पूछो, क्या पूछना चाहते हो ?" मैंने पूछा, "यह बताओ कि चिरौंजी के तुम्हारे और परिजनों में तुम्हारे शिवाय और बुजुर्ग पेड़ क्यों नहीं हैं ? वह कहाँ गए ?" उसने कहा, "जानना चाहते हो, तो फिर सुनो ! हम यहाँ बहुत सी संख्या में हुआ करते थे। हमारे होने से समय पर हमारे साथी बादल आते थे। समय से पानी बरसते थे। किसी बोर की जरूरत नहीं थी। नदियों में पानी लबालब भरा होता था। कल-कल करती नदियाँ बहती थीं; तुम्हारे पूर्वज भी खुश, नदी भी खुश रहती थी !" उसने आँखों से बह आए आँसुओं को पोंछकर फिर कहा, "सुंदर, प्रदूषण रहित हवा-पानी हुआ करते थे। कोई जानता ही नहीं था कि प्रदूषण है क्या चीज ! रोग तो थे ही नहीं, अगर मौसमी रोग होते भी तो हमारे पास जड़ी-बूटियाँ, औषधियाँ इतनी रहती थीं कि जड़ से रोग खत्म हो जाते थे; बिना पैसों के !" उसने कहा, "तब सब सुंदर, सब विरज शरीर वाले होते थे। हम उन्हें पर्याप्त ईंधन भी देते थे। तब वह कुल्हाड़ी अपनी रक्षा के लिए रखते थे और इतना अंदर आने की उनको जरूरत नहीं पड़ती थी। क्या यह बात तुम्हारे पुरखों ने नहीं बताया है। हमारी पूजा करते हो, हमारे पैर छूकर बेरहमी से हमें काटने के लिए कुल्हाड़ी चलाते हो !" उसकी बातों में रोस और क्रोध दोनों दिखाई दे रहा था। चिरौंजी के उस पेड़ ने आगे कहा, "क्या सचमुच में तुम हमें वृक्ष देवता मानते हो ? हम छाया देते हैं, फल देते हैं, औषधियाँ देते हैं तो फिर हम पर कुल्हाड़ी क्यों चलाते हो ? हमारे भी जीव है, हमें भी दर्द होता है ! तभी तो हम बद्दुआएँ देते हैं और आज हमारी बद्दुआओं से इतने बेचारे हो गए हो तुम मनुष्य कि अब परेशानियाँ ही परेशानियाँ हैं तुम्हारे पास !" मैंने विनती की कि "अपना दुःख कम कर दीजिए, हमें आशीर्वाद दीजिए वृक्ष देवता !" वह हँसा और बोला, "आज ऋतु परिवर्तन होने लगा है, इसका इलाज यही है कि हमें बचाओ; हम अपने-आप बढ़ जाएंगे, सरकार से कहो कि फोटो खिंचवाने से शोशल मीडिया में प्रचार करने से समस्या का हल नहीं होगा। पेड़ लगाकर हमें संरक्षित करें, रखरखाव मजबूत करें ! उतने ही पेड़ लगाएं जितने को बड़ा कर सकते हैं। अगर बेटे-बेटियों की तरह पालोगे हमें तो हम भी तुम्हारी औलाद बनकर तुम्हें बाप की तरह ही रखेंगे !" मैंने कहा, "तुम चिरौंजी फल देना क्यों बंद कर दिया है ?" उसने कहा "यहाँ के लोग जिन्हें तुम लेकर आए हो न, वही जब हम फल देते हैं, तब ये चढ़कर, डंडा से गिराकर, डाली तोड़कर फल ले लें, हमें एक भी ऐतराज नहीं है, हम दूसरे साल और बहुत ज्यादा फल इन्हें देंगे; मगर यह हमें नीचे से काटकर गिरा देते हैं, हमारी हत्या कर देते हैं, फिर हमारे फल नोंचते हैं !" उसकी बातों को सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ, मेरी आँखों से आँसू बहने लगे थे। उस पेड़ ने झट से अपनी डाली को नीचे किया और मेरे आँसुओं को पोंछ दिया। उसने गम्भीरता से कहा था कि "तुम जैसे लोग भी हैं जो हम पेड़ों को बहुत प्यार करते हैं। हमें भी तुम बहुत प्यारे हो क्योंकि पेड़ जब कटते हैं तब तुम्हें बहुत दुख होता है। मैं जानता हूँ तुम कमजोर हो, लाठी नहीं चला सकते हो, मगर तुम्हारी कलम कमजोर नहीं है। तुम्हें लगता है जब कोई हम पर कुल्हाड़ी चलाता है तब लगता है कि तुम पर ही कुल्हाड़ी चल रही है !" उस पेड़ ने कहा, "कोई दूसरा होता तो मैं बात ही नहीं करता। तुम जून के अंतिम सप्ताह में, जुलाई के पहले पखवाड़े में आना हम सभी तुम्हें खूब फल देंगे; हमारे छिलके खाना, गुठलियों से ढेर सारी चिरौंजी निकालना, फल, चिरौंजी, गुठलियाँ सभी काम की हैं, अपने घर लेकर जाना !" मैंने उस बुजुर्ग चिरौंजी पेड़ को धन्यवाद दिया। उस चिरौंजी पेड़ को साष्टांग दंडवत प्रणाम भी किया; फिर जंगल को निहारते हुए, देखते हुए हम दोनों वापस लौट आए थे। इसीलिए कि अगर कहीं जंगल के राजा को पता चला कि हम मनुष्य इतनी दूर आए हैं तो गजब हो जाएगा ! हम अगले दिन बावल भुंडी चलने का फैसला किया था और लौटकर वापस कैम्प आ गए थे।

*ग्राम+पोस्ट-कोबरा, जिला-चित्रकूट, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा में नई डिग्री – बीएलओ बीएड

वीरेन्द्र बहादुर सिंह*

"अरे बच्चों, स्कूल के बाहर क्यों घूम रहे हो ? अपने मास्टर साहब से जाकर कहो कि इंस्पेक्शन के लिए आए हैं ।" इंस्पेक्शन की टीम गाँव में पहुँची और स्कूल के बाहर खड़े होकर आवाज लगाई । एक लड़का बोला, "हमारे एक साहब को पशुधन गिनने की ड्यूटी मिली है, इसलिए वह गाँव में घूम-घूमकर जानवर गिन रहे हैं। दूसरे साहब खेतों में फसल का सर्वे करने गए हैं और तीसरे साहब स्कूल की गिरती हुई दीवार की देखभाल कर रहे हैं ।" "दीवार गिरने" की बात सुनकर टीम के साहब ने अपने पैर थोड़ा पीछे खींच लिए। तभी अंदर से शिक्षक बाहर आए। "आइए साहबों, अतिथि देवो भव... बताइए, स्कूल के बाहर कैसे भूल से भटक गए ?" टीम के मुखिया ने सख्ती से कहा, "हम निरीक्षण के लिए आए हैं, देखना है कि आप बच्चों को क्या पढ़ाते हैं। बताइए, इन बच्चों को गणित में क्या सिखाया है ?" शिक्षक ने बड़ी सहजता से कहा, "एक सवाल दिया है, अगर एक बीएलओ दो घंटे में 40 घर 'निपटा' सकता है तो चार बीएलओ आधे घंटे में कितने घर 'निपटा' सकेंगे ?" सवाल सुनकर मुखिया साहब खुद ही असहज हो गए। फिर उन्होंने दूसरा सवाल किया, "गणित छोड़िए, भाषा में क्या पढ़ाया है ?" शिक्षक गर्व से बोले, "यही कि मतदाता और नागरिक समानार्थी नहीं हैं ।" मुखिया और उलझ गए। टीम के दूसरे सदस्य ने बातचीत आगे बढ़ाई, "बच्चों को भूगोल जैसा कुछ भी पढ़ाते हैं या नहीं ?" शिक्षक ने आँख पर हाथ रखकर दूर देखते हुए कहा, "बच्चों को दिशा ज्ञान भी दिया है। उन्हें बताया है कि सरकारी रैली निकालनी हो तो स्कूल के गेट से गाँव के चौराहे की तरफ जाते समय दक्षिण दिशा में बढ़ना है या पूर्व दिशा में । यह भी सिखाया है कि यदि सरकारी रैली में सुबह-सुबह सभी बच्चों को जाना हो और उसका सबूत सेल्फी के रूप में ऊपर के ऑफिस भेजना हो तो साढ़े सात बजे सूरज किस दिशा में रहेगा ताकि सेल्फी अच्छी आए ।" तीसरे निरीक्षक ने चिढ़कर कहा, "मास्टर साहब, ज्यादा चतुराई मत दिखाइए। स्कूल का रिज़ल्ट क्या आता है, वह बताइए ।"शिक्षक बोले, "जैसे देश और राज्य में सरकारें 'रिपीट' होती रहती हैं, वैसे ही हमारी स्कूल में भी 90 प्रतिशत बच्चे हर कक्षा में दो-दो, तीन-तीन साल 'रिपीट' होते रहते हैं। बताइए, खुशी की बात है न ?" गाँव की ठंडी हवा में भी पसीना पोंछते हुए टीम के मुखिया बोले, "बॉस, दया करो। यह तो बताओ कि ऐसा ज्ञान तुमने किस प्रशिक्षण संस्था से लिया है ?" शिक्षक दृढ़ता से बोले, "मैं बीएलओ बीएड हूँ। एक ही हफ्ते में 420 फार्म भरने का रिकार्ड मेरे नाम है । बोलो, और कुछ पूछना है ?" इतना सुनते ही स्कूल की दीवार और निरीक्षण टीम के मुखिया, दोनों धड़ाम से नीचे गिर पड़े ।

*जेड-436ए, सेक्टर-12, नोएडा-201301 (उ.प्र.)

इंसानियत और विकास : संतुलन की जरूरत

सचिन सिंह परिहार*

हाल ही में उत्तर प्रदेश के अम्बेडकर नगर जिले में घटी एक घटना ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया। प्रशासन द्वारा अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के दौरान एक आठ वर्षीय बच्ची अनन्या यादव अपनी किताबें बचाने के लिए दौड़ पड़ी । यह सिर्फ एक दृश्य नहीं था बल्कि हमारी विकास नीतियों पर एक गम्भीर सवाल था - क्या हमारा विकास सच में सबको साथ लेकर चल रहा है ? आज जब हम 'नए भारत' की बात करते हैं, 'विकास' को प्राथमिकता देते हैं, 'कानून के शासन' पर ज़ोर देते हैं, तब यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम इन मूल्यों को सही मायनों में लागू कर पा रहे हैं ? विकास और कानून आवश्यक हैं लेकिन इनका उद्देश्य लोगों का भला होना चाहिए, न कि उन्हें संकट में डालना। जब अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई होती है, तो क्या यह ज़रूरी नहीं कि विस्थापित होने वालों के लिए पहले से पुनर्वास की व्यवस्था हो ? जब एक बच्ची अपनी किताबें बचाने के लिए भागती है, तो यह किसी एक प्रशासनिक निर्णय की असफलता नहीं बल्कि हमारी पूरी व्यवस्था पर एक प्रश्नचिह्न है । विकास की परिभाषा क्या होनी चाहिए ? 'विकास' शब्द का अर्थ केवल ऊँची इमारतें, चौड़ी सड़कें, हाईवे, स्मार्ट सिटी और उद्योग नहीं होता। असली विकास तब माना जाएगा जब समाज का हर वर्ग अपने-आप को उसमें सुरक्षित और सहभागी महसूस करे। जब गरीबों को बेहतर जीवन स्तर मिले, जब बच्चों की शिक्षा बाधित न हो और जब कोई नागरिक यह महसूस न करे कि उसे बलपूर्वक हाशिए पर धकेला जा रहा है। अगर विकास का मतलब किसी वर्ग को कुचलकर, उनके जीवन को संकट में डालकर किया जाए तो यह वास्तव में प्रगति नहीं बल्कि एक असंतुलित और असंवेदनशील प्रशासन का संकेत है। ऐसा विकास किसी भी समाज के लिए घातक हो सकता है। कानून और मानवता का संतुलन आवश्यक बिना शक, कानून का पालन करना हर नागरिक का कर्तव्य है और सरकारी जमीनों पर अतिक्रमण को हटाना प्रशासन का अधिकार भी है लेकिन यह अधिकार तब तक न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता जब तक कि विस्थापित लोगों के पुनर्वास की कोई ठोस योजना न हो । हर साल हजारों झुग्गियाँ तोड़ी जाती हैं, हजारों गरीब परिवार बेघर होते हैं लेकिन क्या हमने कभी सोचा कि इन लोगों को कहाँ जाना चाहिए ? उनके बच्चों की पढ़ाई का क्या होगा ? उनकी आजीविका का क्या होगा ? अगर कोई वैकल्पिक व्यवस्था किए बिना गरीबों को हटा दिया जाता है तो यह समाज की असफलता नहीं तो और क्या है ? यही कारण है कि कानून और मानवता का संतुलन आवश्यक है। जब प्रशासन कोई कार्रवाई करे, तो उसे यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि वह कितने लोगों को प्रभावित कर रहा है और उनके लिए क्या समाधान निकाला जा सकता है। क्या विस्थापन का कोई मानवीय समाधान नहीं हो सकता ? भारत में गरीबों के विस्थापन का इतिहास पुराना है। आज़ादी के बाद जब बड़े बाँध, उद्योग और सड़कें बनाई गईं, तब लाखों लोगों को अपने घरों से बेदखल होना पड़ा लेकिन सवाल यह है कि क्या हमने इससे कोई सीख ली ? विकसित देशों में जब किसी को विस्थापित किया जाता है तो पहले से उसकी पुनर्वास योजना तैयार की जाती है। वहाँ की सरकारें पहले घर, स्कूल, अस्पताल और अन्य सुविधाएँ सुनिश्चित करती हैं, फिर विकास परियोजनाओं को आगे बढ़ाती हैं। भारत में भी अगर कोई परियोजना शुरू करने से पहले ही गरीबों को रहने की वैकल्पिक जगह और

उनके पुनर्वास के साधन उपलब्ध करा दिए जाएँ तो ऐसी घटनाएँ दोबारा नहीं होंगी। जब तक सरकारें इस पर ध्यान नहीं देंगी, तब तक अनन्या जैसी बच्चियाँ अपनी किताबें लेकर यूँ ही भागने को मजबूर होती रहेंगी। अनन्या यादव की यह घटना केवल अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई तक सीमित नहीं है। यह शिक्षा के अधिकार और गरीबों के भविष्य से भी जुड़ी हुई है। जब एक बच्ची अपनी किताबें बचाने के लिए भागती है, तो यह केवल उसकी चिंता नहीं होती बल्कि यह पूरे समाज की असफलता होती है। संविधान हमें शिक्षा का अधिकार देता है। सरकारें 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' जैसी योजनाएँ चलाती हैं लेकिन जब किसी गरीब की बेटी की शिक्षा खतरे में पड़ जाती है तो कोई भी योजना उसे बचाने के लिए आगे नहीं आती। अगर शिक्षा को सही मायनों में प्राथमिकता देनी है, तो यह सुनिश्चित करना होगा कि किसी भी विकास प्रक्रिया में गरीब बच्चों की शिक्षा बाधित न हो।

निष्कर्ष : विकास की दौड़ में हम यह न भूल जाएँ कि सबसे ज़रूरी चीज़ इंसानियत है। जब भी कोई सरकार या प्रशासन कोई योजना बनाए तो उसे यह देखना होगा कि इसका प्रभाव समाज के हर वर्ग पर कैसा पड़ेगा। अम्बेडकर नगर की यह घटना हमें यह याद दिलाती है कि हमारी नीतियाँ तभी सफल होंगी जब वे न्यायसंगत और मानवीय होंगी। अगर हमने अब भी नहीं सीखा तो विकास की यह गाड़ी कुछ लोगों को कुचलती हुई आगे बढ़ती रहेगी और गरीब तबके के लोग अपनी किताबें, अपने घर और अपने सपने बचाने के लिए इसी तरह भागते रहेंगे।

*प्रगति नगर, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.)।

देखभाल

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'*

मैथ्स एम. एस-सी कम्प्लीट हो गया। फिर ए वन ईयर कोर्स बी. एड. भी डन। एम. फिल. भी कर ली। साल भर का पी. जी. डी. सी. ए. भी हो गया। कुछ सालों तक एक कान्वेंट स्कूल में टीचिंग करते हुए उसने प्राइवेट कॉलेज ज्वाइन कर लिया। पढ़ने-पढ़ाने में मंजरी को पता ही नहीं चला कि कब वह सैंतीस बरस की हो गयी। अपने माँ-बाप की दो बेटियों में वह बड़ी थी। अब तक अनमैरिड ही थी। इसी बीच मंजरी की छोटी बहन दीपा की शादी हो गयी। एक दिन उसके हस्बैंड के दूर के ममेरे विधुर भाई का मंजरी के लिए रिश्ता आया। दोनों पक्षों की ओर से बात चली। तभी उस विधुर व्यक्ति ने अपनी बात रखते हुए कहा - "मेरे दोनों बेटे दूसरे शहरों में सेट हो चुके हैं। एक बेटी है जो ससुराल चली गयी है। मैं एफ. सी. आई. में एक अधिकारी पद पर हूँ। अक्सर मेरा घर से बाहर ही रहना होता है। घर में मेरे वृद्ध माँ-बाप ही रहते हैं। अब मैं अपने माता-पिता के लिए ही शादी करना चाहता हूँ। उनकी सेवा व देख-भाल करनी होगी।" उस विधुर व्यक्ति की बातें पूरी होने के बाद सभी मंजरी को सुनना चाहते थे। मंजरी अपनी बढ़ती उम्र से वाकिफ ही थी। उसके मन में सत्तर-पचहत्तर वर्ष को छूते माँ-बाप का ख्याल था। उसने बहुत संक्षिप्त में अपनी बात रखी- "मैं किसी और के माता-पिता की देख-भाल करने के लिए कहीं और क्यों जाऊँ? मैं अपने माँ-बाप की सेवा करूँगी ? अगर मेरी बात से किसी को ठेस पहुँची होगी तो क्षमा चाहती हूँ।" मंजरी की बातें सुन सभी नि:शब्द हो गये।

*घोटिया-बालोद, (छत्तीसगढ़)।

मिट्टी

डॉ. वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज*

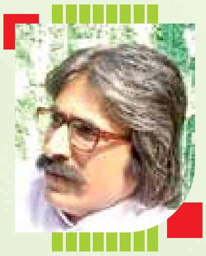

"बाबूजी! खेती-बधारी सब छोड़िए। चल-चलिए आप भी शहर में। दोनों बाप-बेटे मिलकर कमाएँगे।" बेटे ने बाप को ऐसी सलाह दी। बाप सिर्फ चुप रह बेटे का मुँह ताकता है। "क्यों बाबूजी! आप कुछ बोलते क्यों नहीं ?" "का बोलें बेटा, तुम बतवे अइसा बोलते हो तो।" "वह क्या बाबूजी ?" "उ ई कि तुम्हारा काम-धंधा छूट जाता है, तो हार-दारकर कहाँ आते हो ?" बाप ने पूछा। "आते तो घर पर ही हैं।" बेटे ने कुछ देर बाद कहा। "और तुम्हें भोजन-भात इहे खेत-बधारी न करवाता है। तो अगर हम खेती न करेंगे तो का दशा होगा ? न इहाँ डेरा लेना पड़ता है, न दूध, न ही जरावन में कुछ पइसा लगता है। केतना बचता है तोरा, का तुम नहीं जानते हो ? बस खाली चिक्कन-चिक्कन खाते हो, इहे न।" बाप ने अपनी बात कही। "पर कभी सुखाड़, तो कभी दहाड़ न हो जाता है बाबूजी।" "तइयो उहे में काम चल जाता है न बेटा। भात-रोटी के कभी दिक्कत तो न होता है, न ही कोई किराया के लेल टोकारा करता है। इहाँ तो चार पइसा के दूध तो दू पइसा के गोइठा भी बेच देते हैं। हम तो कहेंगे कि तुहूँ अब ई सब अराइवेट-पराइवेट नौकरी के चक्कर में न पड़के इहें खेती-बधारी करो। खाली धाने-गेहूँ-बूँट- खेसारी न उपजाते हैं, साग-सब्जी उपजाएँगे। एक-दूगो गाय-भईंस आउ ले लेंगे और ओक्कर दूध- दही से पइसा कमाएँगे।" बाप की बात पर बेटा खुश हो गया। बोला, " बाबूजी, सच पूछिए तो हम भी यही चाहते थे, पर लगता था कि आप खिसिआ जाएँगे। हम दोनों बाप-बेटे यहीं कमाएँगे बाबूजी। वहाँ लोग बड़ा पराया-पराया लगते हैं। मालिक भी इतना बुरा व्यवहार करता है कि रो देते हैं बाबूजी...। उस समय मुझे मेरी 'मिट्टी' याद आती है।" बाप बेटे की नम आँखों को अपने अंगोछे से पोंछ रहा था।

*शेखपुरा, खजूरी, नौबतपुर, पटना।

बिना मातृभाषा के हिन्दी साहित्य भी वीरान रहेगा, हिन्दी रहेगी तभी तो हिन्दुस्तान रहेगा।

चेहरे

यशोधरा भटनागर*

राम ! राम ! मैडम जी ! राम ! राम ! रुक्मा की आवाज गदगद कर गई, आँखों में एक चमक आ गई। रुक्मा ही वह धुरी थी जिसने घर की साफ-सफाई आदि का सारा जिम्मा संभाला हुआ था। चार दिन से गायब थी ! चार दिन ! चार दिन का समय कितनी मुश्किल से निकले। काम कर-कर के कमर टूट गई और बर्तन माँज-माँज कर कंधे के दर्द ने सिर उठा लिया। दवाइयाँ लेती रही और काम-काज चलता रहा। आज रुक्मा का आगमन बड़ी सुखद अनुभूति ! कहाँ रह गई थी ? फोन भी नहीं लग रहा था। परेशान हो गई रे ! अब तो पहले जैसा काम भी नहीं होता मुझसे ! क्या करूं मैडम जी कभी-कभी तो छुट्टी लेनी ही पड़ती है न। बेटी की शादी तय हो गई है, सो ...किसकी ? रधिया की ? रुक्मा को मेरे घर काम करते करीब बीस साल हो गए। वह घर की सदस्य ही हो गई है। उसकी बेटी को मैंने अपनी बेटी मिनी के साथ बढ़ते देखा है। वही प्रेम, स्नेह, दुलार, ममता रुक्मा की बेटी रधिया को भी दिया है। रुक्मा भले ही रहन-सहन में फूहड़ हो पर रधिया बड़े सलीके वाली थी और किशोरी रधिया तो रूप और गुण की खान है। साँचे में ढली कद-काठी ! तीखे नैन-नक्श और लावण्यमय साँवला रंग ! उस मृगनयनी को देख नेत्र स्वतः उसकी ओर पलट जाते। उसकी कोयल सी मीठी स्वर लहरी कानों में मिश्री घोल देती। रुक्मा ! रुक्मा ! रुक्मा कुछ कहती उससे पहले ही गोटे सजा लाल दुपट्टा ओढ़े रधिया हिरणी सी कुलांचे भरती हुई, खिलखिलाते हुए बोली - आंटी देखो मैं कैसी लग रही हूँ ? मैं हतप्रभ सी आँखें फाड़-फाड़ कर उसे देख रही थी। नन्हीं रधिया गुड्डे-गुड़िया से खेलने की उम्र में ही रधिया अपनी गुड़िया सी सजकर जीवन में गुड्डे-गुड़िया का खेल खेलने को तत्पर थी। एक खिली-खिली मुस्कान ! मानो धूप का एक टुकड़ा खिला हो ! मैं हँसू या रुक्मा को इस कृत्य के लिए दंडित करूँ, कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी माँ ! माँ ! चिल्लाती मिनी मुझसे आकर लिपट गई। माँ ! माँ ! मुझे इंग्लिश में हाईएस्ट मार्क्स मिले हैं। टीचर ने मेरे लिए क्लास में क्लैपिंग कराई। वेरी गुड बेटा ! मैंने उसका माथा चूम लिया। चलो अब जल्दी से फ्रेश होकर, चेंज करके खाना खाओ। बस्ता कंधे पर टाँगे मिनी उछलती-कूदती अंदर चली गई। मैं समवयस्क मिनी की तुलना ना चाहते हुए भी रधिया से करने लगी। आंटी ! आंटी ! मेरे ब्याह में आओगी न। माँ मुझे सुंदर सा लाल घेरदार घाघरा दिलाएगी और पाजेब, बैंदा, नथ, कंगना और ढेर सारे गहने दिलाएगी। अच्छा-अच्छा खाना बनेगा। पूरियाँ छनेंगी, लड्डू बनेंगे, नाच-गाना होगा और जैसे गुड्डे-गुड़िया की शादी रचाते हैं न वैसे ही....वह गुड्डे-गुड़ियों की दुनिया में खो गई और अपने ही संसार में डूबी बन्नी गा रही थी... सजन जी मुम्बई जाना जी, वहाँ से हरवा लाना जी। शायद उसके लिए शादी का यही अर्थ था। मैडम जी शादी के लिए एडवांस दे दोगी ? दस हजार रुपए। मैं मूक सी खड़ी रही। ब्याह है तो पैसा तो चाहिए। लड़के का अपना काम है। फर्नीचर बनाता है। अपना पक्का घर है, बस एक पैर से थोड़ा लचक कर चलता है। अपनी रधिया से बस दस साल बड़ा है। अच्छा रिश्ता, अच्छा घर मिल गया तो बस तय कर दिया। अच्छा घर ! अच्छा रिश्ता ! मुँह कसैला सा हो गया। शायद निबोरी की कड़वाहट से ज्यादा कड़वाहट मेरे मुँह में घुल गई और बुदबुदाई... रुकमा तूने अच्छा नहीं किया। फूल सी बच्ची को पढ़ा-लिखा लेती। अपने पैरों पर खड़ी हो जाती। तूने अच्छा नहीं किया। रधिया गुड़िया की चोटी गूँथते, गाना गा रही थी ..."सजन जी मुम्बई जाना जी ! वहाँ से कंगना लाना जी...।" तभी फोन की घंटी बजी.. हेलो ! दूसरी ओर से रुचिता का रुंधा-रुंधा सा स्वर (रुचिता मेरी सखी नमिता की बेटी रुचि) आंटी मुझे शादी नहीं करनी पर पापा-मम्मी मानते ही नहीं। हाल ही में उसकी शादी उसी शहर में समृद्ध परिवार में एक इंजीनियर लड़के से तय हुई थी। ससुराल वाले दकियानूसी थे। बात-बात पर अभी से टोका-टोकी करने लगे थे। रुचि थक चुकी थी। रोज-रोज की चिकचिक... यह मत पहनो, ऐसे मत बोला करो, तुमने यह क्यों खरीदा ? कितना खर्चा कर दिया ! देखकर खर्चा किया करो, खरीदने से पहले दीदी से पूछा क्यों नहीं ? रुचिका का फूल सा चेहरा मुरझा गया था। मुझे भी उसकी चिंता रहने लगी थी। नमिता से बात भी की पर उसकी आवाज़ का दर्द भी कहीं भीतर तक बेध गया। "तुम्हें कुछ भी नहीं पता अभी... अच्छा लड़का ढूँढने में जूते घिस जाते हैं। बड़ी मुश्किल से तो इतना अच्छा लड़का और इतना अच्छा परिवार मिला है।" उसके चेहरे पर भी लड़की की माँ की निरीहता झाँकने लगी थी। मैंने भी अपने होठ सी लिए। आखिर उनका अपने परिवार का मामला था। रुचिता का रुंधा-रुंधा स्वर...आंटी आप सुन रही हैं न ! मम्मी-पापा भी मेरी बात ही नहीं सुनते। कहते हैं -रोका हो गया, कार्ड छप गए हैं, दूर वालों को तो कार्ड भेज भी दिए, शादी कर लो। बाद में देखेंगे। आंटी मैं घुट-घुट कर मर जाऊँगी। फोन पर सिर्फ सुबकने की आवाज ! कहीं मैं भी घुट रही थी और एक 'आह' के साथ मैंने फोन रख दिया। विचार मग्न नजरें छत पर टिक गईं, जहाँ शनैः-शनैः तीन चेहरे उभर आए...रधिया, रुचिका और.... मिनी और फिर सभी चेहरे गड्ड-मड्ड हो गए... उभर आया सिर्फ एक चेहरा... सामाजिक मर्यादा और सम्मान की वेदी पर एक आहुति देता एक चेहरा !

*152 अलकापुरी, देवास, मध्य प्रदेश।

तमाचा

शीला श्रीवास्तव*

किशोरी लाल अपनी तमाम कोशिश के बाद अपनी बेटी सीमा के लिए एक क्लर्क तलाश कर पाए। उनके लिए वही कलेक्टर से कम नहीं था। बड़ी मुश्किल से सौदा पाँच लाख में पटा था। किशोरी लाल ने इसके लिए गाँव का अपना पुश्तैनी घर गिरवी रख दिया था ताकि अपने रिश्तेदारों के सामने हाथ न फैलाना पड़े। वे हर कीमत पर अपनी तीसरी व आखरी बेटी की शादी अच्छे घर में करना चाहते थे। वे उसे अपने दोनों बड़ी बेटियों की तरह जैसे-तैसे नहीं ब्याहना चाहते थे। उन्हें अच्छी तरह याद है उस दिन सीमा कितना विरोध कर रही थी, जब उसकी बड़ी बहन नीमा की शादी दो बच्चों के विधुर बाप से होने जा रही थी। 'नहीं होगी मेरी बहन की शादी उस दो बच्चे के बाप से, जाते ही बच्चों के लालन-पालन में जूट जाए, क्या यही इसकी जिन्दगी है ?' 'तुम्हारे कहने से क्या होता है, मैं जहाँ चाहूँगा, वहीं होगी इसकी शादी। दहेज देने के लिए पैसे कहाँ हैं हमारे पास ? 'किशोरी लाल गुस्से में आकर बोले। 'जब आपको हम बेटियों को कुएँ में ही धकेलना था, तो जन्म लेते ही गला क्यों

नहीं घोंट दिया ? 'सीमा सिसक उठी । सीमा की माँ, जो अब तक बिल्कुल चुप थी, बीच में बोल पड़ी 'हाँ-हाँ नहीं होगी नीमा की शादी उससे ।' 'ठीक है तो मैं ही मर जाऊँगा, मेरे मर जाने के बाद तुम सब चैन से रहना ।' किशोरी लाल लगभग रोते हुए बोले । 'आप ऐसे क्यों बोल रहे हैं जी ! आखिर इसकी जिंदगी का सवाल है ।' सीमा की माँ अपने पति को समझाने के ख्याल से बोली । 'जाने दो सीमा, करने दो इन्हें मेरी शादी । शायद मेरी तकदीर ही ऐसी होगी ।' नीमा ने पिताजी की हालत देखते हुए कहा । 'तकदीर कुछ नहीं होती दीदी, लाचार-बेबस ही तकदीर को मानते हैं ।' सीमा गुस्से में बोली । 'जाने दो, तुम्हें इससे क्या, मुझे रहना है उसके साथ ।' नीमा झुंझला उठी लेकिन अपनी आँखों में उमड़े आँसुओं को वह छुपा नहीं पायी । 'तुम महान हो दीदी ।' सीमा ने थरथराते होंठों से कहा । उसके चेहरे पर नीमा के प्रति अगाध प्रेम झलक रहा था । सीमा अच्छे घर में ब्याहने के सपने को त्याग चुकी थी । वह अच्छी तरह जानती थी कि अच्छे खाते-पीते घर के लड़के की कीमत पाँच-छ: लाख से कम नहीं होगी । पिताजी की आय इतनी भी नहीं थी कि पाँच व्यक्तियों का परिवार भी सुचारु रूप से चल सके । महीने के अंत होते-होते लेनदारों की भीड़ घर पर जमा हो जाती । कभी मकान का किराया बाकी रहता तो कभी राशन का । ऐसे में पाँच-छ: लाख का इंतजाम करना पिताजी के लिए कठिन ही नहीं, नामुमकिन भी था । आज सीमा के लिए रिश्ता आया था । रिश्ता अच्छे घराने से था । सीमा की माँ उसे बार-बार समझा रही थी कि 'देखो बेटी, लड़का बहुत अच्छा है । नौकरी करता है, घर-द्वार ठीक है । मेरी बात मानों तो जिद्द छोड़ दो इससे अच्छा लड़का फिर नहीं मिलने वाला ।' 'नहीं, मुझे ऐसे लड़के से शादी नहीं करनी ।' 'आखिर तुम्हें कैसा लड़का चाहिए ?' सीमा की माँ चिढ़कर बोली । 'जैसा मेरी बहनों को मिला है, मैं आप लोगों को बर्बाद कर आबाद नहीं होना चाहती ।' 'क्या ?' सीमा की माँ के चेहरे पर आश्चर्य और पीड़ा के मिले-जुले भाव उभर आये । 'लड़की को लेकर आओ सीमा की माँ' किशोरी लाल ने आवाज लगाई । 'अभी आई' कहकर वह सीमा को लेकर उस कमरे में पहुँची, जहाँ लड़के वाले सीमा का इंतजार कर रहे थे । 'नमस्ते करो बेटी ।' सीमा की माँ ने सीमा से कहा तो वह क्रोध भरी निगाहों से अपनी माँ को घुरने लगी । उसकी माँ उसके निगाहें को अनदेखा कर कहने लगी, 'आप लोगों को मेरी बेटी में कोई अवगुण नहीं मिलेगा भाई साहब ।' सीमा के पिताजी सीमा को इस नजर से देखते रहे मानो कह रहे हो, नमस्ते करो बेटी, इज्जत का सवाल है । सीमा ने उन लोगों को नमस्ते किया और वह एक खाली कुर्सी पर बैठ गई । सामने बैठे एक नवयुवक को उसकी यह हरकत अच्छी नहीं लगी । शायद उसी की शादी सीमा से होने वाली थी । वह नकचढ़ी लड़की नहीं चाहता था इसलिए बोल पड़ा, 'आपको थोड़ी भी तमीज नहीं है, किसी से पूछे बिना कुर्सी पर बैठ गईं ।' 'आप कौन हैं मिस्टर ?' सीमा ने गुस्से में आकर पूछा । 'यही लड़के से तुम्हारी रिश्ते की बात चल रही है बेटी' किशोरी लाल ने स्थिति की नाजुकता को समझ कर बात संभालते हुए कहा । 'ओ अच्छा, लेकिन आपसे मेरी शादी भला कैसे हो सकती है ?' 'हाँ–हाँ, मुझे भी नहीं करना तुमसे शादी, ऐसी बदमिजाज व घमंडी लड़की से भला कौन शादी करना चाहेगा ?' युवक भी अपने गुस्से पर काबू नहीं रख सका । 'माफ कीजिएगा, ना तो मैं बदमिजाज हूँ और ना ही घमंडी । दरअसल मैं ही आपके लायक नहीं हूँ' सीमा अब कुछ नम्र हो चुकी थी । 'मुझे तो ऐसे लड़के की तलाश है जिसकी मैं लाठी बन सकूँ ।' 'मैं समझा नहीं ।' युवक हैरानी से पूछा । 'आप नहीं समझेंगे, मेरी दोनों बहनों की शादियाँ भी ऐसे घरों में ही हुई है और अब मैं भी ऐसे ही लड़के से शादी करना चाहती हूँ जो दहेज ना लेता हो और साहब बिना दहेज के तो वही शादी करेगा जो शारीरिक-मानसिक तौर पर बीमार हो या जिसकी पत्नी मर गई हो जिसे बच्चों को संभालने के लिए एक आया की जरूरत हो । अगर ऐसा कोई आदमी आप लोगों की नजर में हो तो अवश्य बताइए । मैं आप लोगों का एहसान मानूँगी ।' कमरे में उपस्थित सभी लोग उसकी बात सुनकर हतप्रभ रह गए । उन लोगों को ऐसा लग रहा था मानो उसने अकेले ही सबके गालों पर तमाचा जड़ दिया हो ।

*विजय नगर, इंदौर, मध्य प्रदेश ।

प्रेम

अश्विनी कुमार आलोक*

अनामिका ने अनचाहे अपनी आँखें खोलीं । दरवाजे पर शायद फिर भीड़ इकट्ठी हो रही थी । लोगों की आवाजें शोर का रूप ले रही थीं । आज फिर दिनभर तमाशा होगा । उसने अनुमान लगा लिया स्थानीय पत्रकार और मोबाइल फोन से वीडियो बनाने वाले तमाशबीन उससे आज भी वही सवाल पूछेंगे, जो बीते उन्नीस दिनों से पूछ रहे हैं । चौकीदार-दारोगा भी हो सकते हैं, मुखिया, सरपंच भी । अनामिका के तरफ़दार शायद सभी हैं, एक प्रशांत और उसके परिजनों को छोड़कर । वह फिर व्याकुल होकर भीतर-ही-भीतर तड़प उठी । लगा कि कोई उसके कलेजे से खींचकर उसके प्राण लिये जा रहा है । लगा कि उसका सिर फिर से सुन्न होता जा रहा है । उसने पड़े-पड़े अपने सिर को झटककर करवट बदली । देह के अंग-अंग से तमाचों का शोर सुनाई पड़ रहा था । प्रशांत ने उसके साथ इतना क्रूर मजाक किया कि उन्नीस साल की अनामिका उन्नीस दिनों से गाँव भर के लिए तमाशा बनी हुई है । बीते तीन सालों से प्रशांत उसके साथ पति की तरह रह रहा था । बैंक में था, अनामिका उसके किराये के मकान के करीब अपने परिजनों के साथ रहती थी । आते-जाते प्यार हुआ और प्रशांत ने साथ जीने के ख़्वाब दिखाये । फिर अपने घर आये प्रशांत ही ने फोन और वाट्सएप से अनामिका को सूचना दी थी कि प्रशांत के माता-पिता उसका अन्यत्र विवाह कर रहे हैं । विवाह के एक दिन पहले अपनी बड़ी बहन के साथ आ धमकी थी अनामिका लेकिन प्रशांत ने भागकर दूसरी लड़की से विवाह कर ही लिया । पुलिस और गाँव वाले सिर्फ एक दरख़्वास्त पर अनामिका को न्याय दिलवा सकते हैं । अनामिका ने तो यहाँ तक कह दिया था कि वह प्रशांत की नौकरानी बनकर उसके करीब उम्र काट लेगी लेकिन प्रशांत की पत्नी होकर आयी उस लड़की ने भी उसे तमाचों से बिंध कर रख दिया, प्रशांत तो न जाने कहाँ फरार हो गया था । गिन-गिनकर उन्नीस दिन बीते और वह तमाशा बनी हुई है । अनामिका के आँसू फिर लुढक चले । उसकी साँसें फिर धौंकनी हो चली । उसने धीरे से कहा : "प्रशांत ! मेरा प्रेम हारेगा नहीं ।" प्रशांत की नवविवाहिता ने फिर अनामिका को गुस्से से देखा । अनामिका ने उठकर उसकी ओर हाथ बढ़ा दिया तो उसने हाथ झटक लिया । "मेरी जगह तुम होती बहन तो क्या करती ? सुनो मैं जा रही हूँ । मैं तुम्हारा हाथ छूना चाहती हूँ । तुम प्रशांत को जिन हाथों से छूओगी उसमें मेरा भी अंश समाया होगा । बहन ! मेरे एक इशारे पर देश का कानून प्रशांत को बर्बाद कर सकता है लेकिन प्रेम आबाद करता है, बर्बाद नहीं ।" अनामिका बिछावन से उठ खड़ी हुई । प्रशांत की पत्नी के हाथ देर तक अनामिका के हाथों में पड़े रहे । हाथ छूटे तो वह बोझिल कदमों से सीढ़ियाँ उतर चली । दूर तक उसके पीछे-पीछे आकर लोगों ने वीडियो बनाये । अनामिका ने पीछे मुड़कर देखा, उसका प्रेम उसकी रगों में समा रहा था ।

*प्रभा निकेतन, पत्रकार कॉलोनी, महनार, वैशाली, बिहार ।

मुखौटे

देवेन्द्रराज सुथार*

सुधा ने सोशल मीडिया पर अपनी नई तस्वीर अपलोड की। पति के साथ रेस्तरां में डिनर, दोनों मुस्कुरा रहे थे। कैप्शन था - "परफेक्ट इवनिंग विद माय परफेक्ट हसबैंड।" लाइक्स की बरसात होने लगी। कमेंट्स में लोगों ने लिखा - "क्या जोड़ी है!" "रिलेशनशिप गोल्स!" "आप दोनों बहुत खुश नसीब हैं!" सुधा ने फोन नीचे रखा। आईने में देखा। मेकअप की परतों के नीचे छिपी नीली चोट उसकी सच्चाई को उजागर करने के लिए तड़प रही थी। कल रात की यादें ताजा हो गईं। पति की डांट, फिर धक्का, फिर... वॉट्सएप पर माँ का मैसेज आया - "बेटी, तुम ठीक हो न? तुम्हारी आवाज़ से कुछ अजीब लग रहा है।" "हाँ माँ, सब बहुत अच्छा है," सुधा ने जवाब दिया। अगली सुबह सुधा ऑफिस पहुँची। टेबल पर एक फाइल रखी थी - घरेलू हिंसा के खिलाफ नई कानूनी नीतियाँ। उसने फाइल खोली। पहले पेज पर एक औरत की तस्वीर थी - उसकी मुस्कान में छिपा दर्द मानो सुधा को आईने में अपना अक्स दिखा रहा हो। नीचे लिखा था - "हर मुस्कान एक कहानी छिपाती है।" सुधा की आँखें नम हो गईं। उसने धीरे-धीरे सोशल मीडिया का आइकन डिलीट किया, मानो अपनी जिंदगी के झूठ को मिटा रही हो। आज से वह सच के साथ जीने का संकल्प ले चुकी थी।

***गाँधी चौक, आतमणावास, बागरा, जिला-जालोर, राजस्थान।**

निष्प्राण

ज्योत्सना सिंह*

'सीने में जलन दिल में तूफ़ान सा क्यों हैं? इस शहर में हर शख़्स परेशान सा क्यों है?' स्लो वॉल्यूम में गाना बज रहा था। मैं तेज रफ्तार से ड्राइव कर रहा था। वैसे मेरा यकीन मुझसे कह रहा था कि मुझसे मिले बिना वह नहीं जायेंगी लेकिन वक्त की अपनी पकड़ होती है। उसकी अपनी ही चाल होती है। नहीं तो जो मेरे साथ हुआ वह क्यों होता? जब पापा हमें छोड़कर गए तब मैं तलाक का मतलब भी नहीं जानता था। मुझे तो बस यह लगा था कि मम्मी और पापा की लड़ाई हो गई है। पापा गुस्से में शीना आंटी के घर रहने चले गए हैं। जब गुस्सा खत्म होगा तब आंटी उन्हें वापस घर छोड़ जाएंगी लेकिन पापा फिर कभी घर नहीं आए। पापा की जगह फिर एक नया चेहरा हमारे घर पर आने लगा पहले वह चेहरा मुझे सिर्फ़ शाम को ही घर पर दिखता था। जब तक वह रहता तब तक मैं अपने कमरे से बाहर नहीं आता था। पता नहीं क्यों, पर वह मुझे पसंद नहीं था। कुछ महीनों के बाद वह हमारे घर पर ही रहने लगा और मम्मी ने मुझसे कहा कि अब यही मेरे पापा हैं लेकिन मैं अपने पापा को पहचानता था। बस वह दुनिया की इस भीड़ में कहीं खो गए थे। उसके आने के बाद मम्मी घर में रहते हुए भी कहीं खो गई थीं। फिर मम्मी का पेट बहुत मोटा होने लगा था उसके बाद ही तो मम्मी उसे लेकर आईं थीं। मेरे साथ खेलने के लिए, मगर उसके आने के बाद से मम्मी बिल्कुल बदल गई थीं। मुझे बहुत डाँटती और बस उसका ख्याल रखती। धीरे-धीरे मैंने अपने इर्द-गिर्द अकेलेपन का एक मजबूत खोल बना लिया। अब मैं सब अपने आप कर लेता था मुझे किसी की भी ज़रूरत नहीं थी। मैं किसी से भी अच्छे से बात नहीं करता था। उसी घर में वे तीन लोग खुश रहते और मुझे ज़िद्दी और घुन्ना बच्चा कहते। मुझ पर खीजते हुए एक रोज मम्मी ने कहा था कि मैं अपने बाप पर गया हूँ तभी घुन्ना हूँ। मुझे याद नहीं रह गया था कि पापा कैसे थे। मैं बड़ा होने लगा था। अपने ओढ़े उस एकाकीपन के सख्त कवर के साथ जिसके भीतर मैं कोमल और डरा हुआ था। सिर्फ़ मम्मी-पापा के लिए एक फैसले की वजह से। मैंने कहा न वक़्त की अपनी ही चाल होती है। उसने मेरे हिस्से के दर्द के साथ मुझे बड़ा करके काबिलियत के इस मुकाम पर पहुँचा दिया जहाँ मैं जानवरों की दुनिया पर रिसर्च कर रहा हूँ। आज सुबह ही घर से फ़ोन आया कि- "मम्मी की तबियत बहुत ख़राब है। वह मुझे एकबार देखना चाहती हैं।" कुछ देर बाद मैं जंगल से घर पहुँच गया था। मम्मी जैसे मेरा ही इंतज़ार कर रही थीं। मुझे जी भरकर देखने के बाद उन्होंने मेरी पीठ पर हाथ फेरा और आँखें बंद कर लीं। उनके हाथ फेरते ही मुझे लगा धरती का सारा बोझ जो अब तक मेरी पीठ पर रखा था उसमें भूचाल आ गया और मैं उस खोल से मुक्त होकर निष्प्राण न रहकर जीवंत हो गया हूँ।

***गोमती नगर, लखनऊ।**

ग्राहक

संदीप पांडे 'शिष्य'*

"बहुत-बहुत धन्यवाद," कपड़े के शोरूम के कैश काउंटर पर साढ़े आठ हजार का बिल चुका कर स्मिता दो बैग हाथ में थामे लाल कोट पहने कर्मचारी को मुस्कान की टिप देती हुई इठलाती बाहर निकली। कार की पिछली सीट पर दोनो बैग करीने से रखे और घर की ओर ड्राइव करने लगी। रास्ते में उसे याद आया कि उसे अदरक और नीम्बू भी लेने थे। सब्जी का ठेला नजर आते ही उसने ब्रेक लगा दिए। जीर्ण-शीर्ण काया और मैले कुचैले वस्त्र पहने एक वृद्ध ठेले पर थोड़ी सी सब्जी लेकर खड़ा था। स्मिता ने आधा-आधा किलो नीम्बू और अदरक तौलने के लिए कहा। थैली में सामान बढ़ाते हुए वृद्ध ने कहा, "लीजिए, आपके अस्सी रुपए हो गए"। इतना सुनते ही स्मिता भड़क गई, "लूट मचा रखी है, दोगुने भाव लगा रहे हो। शर्म आनी चाहिए। मैं तो इसके पचास रुपए ही दूँगी।" "बहन जी अभी सब सब्जियों के भाव ज्यादा चल रहे हैं। पचास में तो यह हमें ही नहीं पड़ रहा।" "नहीं, नहीं, यह बहुत ज्यादा है मैं साठ से एक रुपया भी ज्यादा नहीं दूँगी।" वृद्ध भाव हीन चेहरे के साथ दयनीय आँख से स्मिता को निहारता खड़ा रहा। मन-ही-मन वो अपने मेहनत के पच्चीस रुपए की कमाई में से दस-बीस रुपए अपने सामने चुराए जाना महसूस कर रहा था। उसको कुछ ना बोलते देख स्मिता ने उसके सामने बहुत ही बेरूखी के साथ सत्तर रुपए पटके और सब्जी लेकर अपनी कार की ओर चल दी। वह वृद्ध ऐसी निर्दयी ग्राहक को जाते हुए देख मन में सोच रहा था कि आज भी अपने पोते के लिए उसका मनपसंद खिलौना शायद वह ना खरीद पाए।

***Pushker road, kotra, Ajmer, Rajasthan**

शीशे के भीतर की संवेदना

रश्मि किरण*

दिल्ली की हलचल भरी सड़कों पर चलते हुए अब वर्षों बीत चुके हैं। ट्रैफिक की धड़कन, लाल बत्तियों पर ठहरी भीड़ और बीच-बीच में शीशे पर पड़ती हथेली - कभी माँगते हाथ, कभी बेचते हाथ और कभी झपटते हाथ। इस सबमें अब मैं एक परिचित-सी होती जा रही हूँ लेकिन हर परिचय, एक नया डर भी साथ लाता है। पर सच कहूँ - अनेकों धोखाधड़ी के किस्सों ने मुझे डरा ही दिया है। ज्यादातर समय मैं आँखों को शुतुरमुर्ग की तरह हथेलियों से ढँक लेती हूँ कि न देखा, तो न ग्लानि हुई। पर आँखें बंद करने से क्या सच्चाई बदलती है ? यह तो मेरा गाड़ी के भीतर बैठा सोचने का तरीका हुआ। पर कुछ घटनाएँ बाहर की दुनिया को इतने जोर से खटखटाती हैं कि भीतर की दीवारें हिलने लगती हैं। हुआ यूँ कि मेरी पड़ोसन को अपने भाई की शादी में शामिल होने के लिए कुछ कीमती कपड़े और गहने लेने थे। वह चाँदनी चौक गईं - दिल्ली के सबसे प्रचलित बाजारों में से एक, जहाँ उत्सवों की रौनकें हमेशा सजती हैं। उन्होंने कुछ सामान खरीदा, कई थैलियों में उन्हें संभाला और एक दुकान से बाहर निकलने ही वाली थीं कि सामने एक महिला दिखाई दी। उस महिला की गोद में एक बच्चा था - भूखी, थकी, टूटी-सी - खाने के लिए पैसे माँगे। पड़ोसन ने इंसानियत दिखाई, पैसे दिए। जैसे ही वह आगे बढ़ने लगीं, एक दूसरी महिला पास से गुजरी और बोली, "आपके रुपए गिर गए हैं।" हड़बड़ा गईं वह। हाथ में थैलियाँ थीं, कीमती गहनों का पर्स था - उन्होंने झुककर ज़मीन पर देखा ही था कि पीछे से किसी ने हल्का-सा धक्का दिया। बस... पर्स गायब। जब तक कुछ समझ पातीं, दोनों महिलाएँ - भूखी माँ और उसकी साथी भीड़ में ग़ायब हो चुकी थीं। रह गईं तो सिर्फ़ हैरानी, दर्द और अफ़सोस। इस घटना ने मुझे फिर से खिड़की के उस पार की सच्चाई से जोड़ दिया। मेरी कार का ड्राइवर हमेशा सावधानी बरतता है - खिड़की बंद, दरवाज़े लॉक। वह मुझे बार-बार कहता है "मैडम, ये लाल बत्ती पर बेचने वाले लोग... कभी भी परेशानी में डाल सकते हैं।" मैं जानती हूँ वह ठीक कहता है। पर क्या हर हाथ धोखेबाज है ? क्या हर फटे कपड़ों वाला चोर है ? क्या हर माँ की गोद में बच्चा, किसी साज़िश का हिस्सा है ? मेरा मन बार-बार कहता है – नहीं। और फिर भी... मैं डर जाती हूँ। ऐसे में मुझे बार-बार याद आती है - एक कहानी। बचपन में पढ़ी थी, शायद कक्षा छह में। "हार की जीत" , लेखक आदरणीय सुदर्शन जी। बाबा भारती और उनके जान से प्यारे घोड़े सुल्तान की कहानी। उस इलाके का डाकू खड़क सिंह सुल्तान पर मोहित हो गया। एक दिन वह अपाहिज बनकर बाबा भारती से धोखे से घोड़ा ले गया। पर बाबा ने तब भी क्या कहा ? "ले जा मेरा घोड़ा, पर यह घटना किसी को मत बताना। लोग दीन-दुखियों पर भरोसा करना छोड़ देंगे।" क्या यह वाक्य आज भी उतना ही प्रासंगिक नहीं है ? आज जब मैं किसी को खाने को कुछ देने से हिचकती हूँ, तो मुझे यही याद आता है। अगर हम हर गरीब को चोर समझने लगे तो इंसानियत कहाँ जाएगी ? पर क्या करें ? डर भी तो हकीकत है। तो अब सवाल यही है-आँखें बंद कर लें ताकि मन में ग्लानि न हो ? या आँखें खोलें और धोखा खाएं ? मेरी कार की खिड़की पर एकबार फिर एक छोटा-सा हाथ थपथपाता है, गुब्बारे बेचता एक बच्चा। ड्राइवर आँखों से मना करता है। पर मेरा दिल - बाबा भारती की आवाज़ सुनता है और मैं फिर से सोचने लगती हूँ..."क्या कोई रास्ता नहीं जो डर और करुणा दोनों के बीच संतुलन बना सके ?"

*23 हेरिटेज गार्डन, दीपाटोली, राँची, झारखंड।

गणपति महोत्सव

सोनल मंजू श्री ओमर*

पौराणिक काल में एकबार महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की रचना के लिए गणेश जी का आह्वान किया और उनसे महाभारत को लिपिबद्ध करने की प्रार्थना की। गणेश जी ने कहा कि मैं जब लिखना प्रारम्भ करूँगा तो कलम को रोकूँगा नहीं, यदि कलम रुक गई तो लिखना बंद कर दूँगा। तब व्यास जी ने कहा प्रभु आप विद्वानों में अग्रणी हैं और मैं एक साधारण ऋषि किसी श्लोक में त्रुटि हो सकती है, अतः आप समझकर और त्रुटि हो तो निवारण करके ही श्लोक को लिपिबद्ध करना। आज के दिन से ही व्यास जी ने श्लोक बोलना और गणेश जी ने महाभारत को लिपिबद्ध करना प्रारम्भ किया। उसके 10 दिन के पश्चाताप अनंत चतुर्दशी को लेखन कार्य समाप्त हुआ। इन 10 दिनों में गणेश जी एक ही आसन पर बैठकर महाभारत को लिपिबद्ध करते रहे, इस कारण 10 दिनों में उनका शरीर जड़वत हो गया और शरीर पर धूल, मिट्टी की परत जमा हो गई। तब 10 दिन बाद गणेश जी ने सरस्वती नदी में स्नान कर अपने शरीर पर जमीं धूल और मिट्टी को साफ किया। जिस दिन गणेश जी ने लिखना आरम्भ किया उस दिन भाद्रमास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि थी। इसी उपलक्ष्य में हर साल इसी तिथि को गणेश जी को स्थापित किया जाता है और दस दिन मन, वचन कर्म और भक्ति भाव से उनकी उपासना करके अनन्त चतुर्दशी पर विसर्जित कर दिया जाता है। गणेश उत्सव का आरम्भ छत्रपति शिवाजी जी महाराज ने किया था लेकिन इसे हर घर, जनमानस तक पहुँचाने का कार्य लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने किया। 1893 में लोकमान्य ने मुम्बई के गिरगाँव में गणपति का पहला मंडल बनाया जिसका नाम केसवी नाइक चॉल गणेश उत्सव मंडल था। लोकमान्य तिलक ने ही पहली बार मिट्टी की बनी हुई गणेश प्रतिमा को 10 दिनों के सार्वजनिक पूजन के लिए स्थापित किया। आज लगभग हर राज्य, हर शहर, हर गली-मोहल्ले, हर घर में गणपति विराजे जाते हैं, गणपति महोत्सव की धूम रहती है। इसका आध्यात्मिक महत्व है कि हम दस दिन संयम से जीवन व्यतीत करें और दस दिन पश्चात् अपने मन और आत्मा पर जमी हुई वासनाओं की धूल और मिट्टी की प्रतिमा के साथ ही विसर्जित कर एक परिष्कृत और निर्मल मन तथा आत्मा के रूप को प्राप्त करें।

*150 रिंग रोड, घंटेश्वर, राजकोट, गुजरात।

संस्थान की गतिविधियाँ

राष्ट्रीय तसर रेशम कृषि मेला सह संस्थान का 61वाँ स्थापना दिवस समारोह के दौरान लगाये गये स्टॉल का उद्घाटन करते मुख्य अतिथि माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से. एवं संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

राष्ट्रीय तसर रेशम कृषि मेला सह संस्थान का 61वाँ स्थापना दिवस समारोह के दौरान लगाये गये स्टॉल का अवलोकन के दौरान माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह को संस्थान द्वारा उत्पादित प्रोडक्ट कोर्डिसेफ्स को दिखाते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी। साथ में हैं केन्द्रीय रेशम बोर्ड के सदस्य सचिव श्री पी. शिवकुमार, भा.व.से. एवं अन्य।

राष्ट्रीय तसर रेशम कृषि मेला सह संस्थान का 61वाँ स्थापना दिवस समारोह में माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह का स्वागत करते संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी।

दीप प्रज्वलित कर राष्ट्रीय तसर रेशम कृषि मेला सह संस्थान का 61वाँ स्थापना दिवस समारोह का उद्घाटन करते माननीय वस्त्र मंत्री, भारत सरकार श्री गिरिराज सिंह, संस्थान के निदेशक डॉ.एन.बी.चौधरी व अन्य।

संस्थान में संस्थापित तसर धागाकरण एवं कताई इंक्यूबेशन केन्द्र

के.रे.बो.-केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

पिस्का-नगड़ी, राँची - 835 303, झारखण्ड